डा० नारायण दत्त श्रीमाली

महालक्ष्मी सिद्धि एवं साधना

गौरव शाली "मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान" की

आजीवन सदस्यता

"मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान" पत्रिका की आजीवन सदस्यता एक गौरव है, एक स्वाभिमान है, जीवन का सौभाग्य है और साधना की पूर्णता है, यह एक अनुपम गुरुदेव के हृदय के निकट पहुंचने की प्रिय पात्रता है, साधना में पूर्ण सिद्धि प्राप्त करने का एक महत्वपूर्ण अवसर है,

और आजीवन सदस्यता शुल्क मात्र ६६६६/- है जिसे एक मुश्त या तीन किश्तों में जमा कराकर यह सौभाग्य प्राप्त किया जा सकता है।

मुफ्त : पूरे जीवन भर "मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान" पत्रिका सर्वथा निःशुल्क आपके घर पर, डाक द्वारा।

मुफ्त : "महालक्ष्मी दीक्षा" जो अपने आप में ही वैभव धन ऐश्वर्य से युक्त है- एक महीने के भीतर भीतर आपको निःशुल्क।

मुफ्त : २१ तोले का मंत्र सिद्ध पारद शिवलिंग - जिसकी न्यौछावर ही २५००/-रु. है, पर आपको सर्वथा मुफ्त।

मुफ्त : एक १६ X २० साइज का प्राण ऊर्जा से चैतन्य सिद्ध गुरु चित्र, सर्वथा निःशुल्क।

मुफ्त : सूर्यकान्त उपरत्न, जो भाग्योदयकारक है अंगूठी में जड़वा कर पहिनने लायक।

१२ ऐसे कारण हैं, जिसकी वजह से आपके लिए जरूरी है

मुफ्त : शिविर सिद्धि पैकेट -जिसमें १.धोती २. माला ३. दुपट्टा ४.पंचपात्र५.आसन-सर्वथा मुफ्त।

मुफ्त : गुरु यंत्र- जो जीवन की पूर्णता में सहायक है सर्वथा मुफ्त।

मुफ्त : सिद्धाश्रम कैसेट -जो आपके घर को गुरुवाणी से झंकृत करने में समर्थ है।

मुफ्त : पारद पादुका - जो आपके घर के ऋण को दूर करने में मददगार है।

मुफ्त : स्वर्णतंत्रम्-पुस्तक सर्वथा मुफ्त।

मुफ्त : जीवन भर परम पूज्य गुरुदेव से व्यक्तिगत सम्पर्क।

यह सुविधा पाठकों के प्रबल अनुरोध पर इस वर्ष के अन्त तक ही है।

और

यों आप बिना उपरोक्त उपहारों के मात्र २४००/- रुपये देकर भी आजीवन सदस्य बन सकते हैं।

"मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान" पत्रिका में जमा आपकी यह धनराशि धरोहर राशि के रूप में है, जो पत्रिका कार्यालय में आपके नाम से जमा रहेगी, जब भी आप आजीवन सदस्य न रहना चाहें आप रजिस्टर्ड डाक से इस प्रकार का पत्र भेज दें, (जिसका प्रमाणीकरण कार्यालय द्वारा हो), पत्र भेजने की तारीख से दस वर्ष बाद यह धरोहर धनराशि, बिना ब्याज के आपको लौटा दी जायेगी।

सम्पर्क :- दिल्ली -३०६, कोहाट इन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली- ३४ , फोन : ०११ - ७१८२२४८
जोधपुर :- मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.), फोन : ०२९१ - ३२२०९

महालक्ष्मी सिद्धि एवं साधना

Manish Kumar

डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली

: प्रकाशक :

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी

जोधपुर-३४२००१ (राज०)

प्रकाशक : मन्त्र तन्त्र यन्त्र विज्ञान
हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज०)

मुद्रक : मन्त्र तन्त्र यन्त्र प्रिंटिंग प्रेस
हाईकोर्ट कॉलोनी,
जोधपुर-३४२००१ (राज०)

-: चेतावनी :-

साधना कार्य एक कठिन कार्य है, इस पुस्तक में जो भी सिद्धियां और साधनाएं दी हैं, वे प्रामाणिक हैं, पर सफलता और असफलता के मूल में साधक का विवेक और सामर्थ्य शक्ति मुख्य रूप से प्रभावक रहती है। अतः इन सिद्धियों की सफलता-असफलता के प्रति प्रकाशक, लेखक या सम्पादक किसी प्रकार से उत्तरदायी नहीं है।

मूल्य — ३०) रुपये मात्र

है, और न उन्हें क्रिया पद्धति का अनुभव है, इन्होंने तो बचपन में जो कुछ सीखा है, उससे आगे एक इन्च भी बढ़े नहीं हैं, जब कि आज का युग बहुत आगे बढ़ गया है, और जिस प्रकार से विज्ञान में नित्य नई शोध और खोज हो रही है, उसी प्रकार से ज्ञान के क्षेत्र में भी नित्य नये प्रयोग प्राप्त होने लगे हैं।

और इस पुस्तक में ऐसे ही गोपनीय, विलक्षण और महत्वपूर्ण तथ्यों से सम्बन्धित प्रयोग दिये हैं, जो अपने आप में अलौकिक और अद्वितीय हैं, जो हजार-हजार बार परखे हुए हैं, और कसौटी पर कसने पर पूर्णतः प्रामाणिक और खरे उतरे हैं।

और आज साधकों के लिए या आम व्यक्तियों के लिए इस प्रकार की साधनाएं ही उनके लिए उपयोगी रह गयी हैं, जिनको सम्पन्न कर वह अपनी जन्म-जन्म की दरिद्रता मिटा सकता है, कर्जे से मुक्त हो सकता है, बाधाओं, अड़चनों या कठिनाइयों से निजात पा सकता है, और व्यापार को उन्नति की तरफ अग्रसर कर सकता है।

ये सभी प्रयोग आजमाये हुए हैं, और इनसे सम्बन्धित सामग्री प्रामाणिक है, मन्त्रसिद्ध है, प्राणश्चेतना युक्त है, जिसके प्रयोग से साधक को पूर्ण अनुकूलता प्राप्त हो सकती है।

वास्तव में ही यह पुस्तक पाठकों के लिए और साधकों के लिए सौभाग्य दायक है, उनके लिए वरदान स्वरूप है, उनके घर में संग्रहणीय और सोने की खान की तरह है, जिसके माध्यम से आज के युग में भी वह अपनी समस्याओं का समाधान पा सकता है, अपने दुखों और कष्टों से छुटकारा पा सकता है, अपने कर्जों से मुक्ति पा कर जीवन में पूर्ण सौभाग्य, ऐश्वर्य और सम्पन्नता प्राप्त कर सकता है।

और मुझे विश्वास है, कि पाठक इस पुस्तक में दिये गये उनके मनोनुकूल प्रयोगों को सम्पन्न कर लाभ उठाएंगे ही, और ऐसा होने पर ही मैं अपने परिश्रम को सार्थक और सफल समझूंगा।

इनमें से अधिकतर लेख 'मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान' पत्रिका के प्राचीन अंकों से लिए गये हैं।

—प्रकाशक

दो शब्द

लक्ष्मी साधनाओं से सम्बन्धित यह अद्वितीय पुस्तक आपके हाथों में है, महत्वपूर्ण पुस्तक की कीमत या उसका मूल्यांकन उसके पन्नों के भार से या पुस्तक के वजन से नहीं आंका जाता, अपितु उसमें निहित सामग्री से आंका जाता है, यह पुस्तक अपने छोटे कलेवर में इतनी अधिक महत्वपूर्ण और सारगर्भित सामग्री संजोये हुए है, कि जो इस प्रकार की साधना में रत हैं वे इसका मूल्यांकन समझ सकते हैं।

दरिद्रता जीवन का अभिशाप है, निर्धन व्यक्ति हर क्षण मरता है, और हर क्षण जन्म लेता है, जब कोई व्यक्ति दिये हुए कर्ज को वापिस प्राप्त करने के लिए उसके पास पहुंचता है, तो वह एक तरह से अपने आपको मृतक ही समझता है, जब वह अपने बच्चे की फीस समय पर जमा नहीं करा पाता, या बच्चों की आवश्यकता पूरी नहीं कर पाता, या पत्नी की इच्छाओं को पूर्णता नहीं दे पाता, तो वह अपने आपको कमजोर, बेबस और मृतवत सा समझने लग जाता है, क्योंकि आज पूरे संसार का ढांचा आर्थिक धरातल पर स्थित है, जीवन के सारे कार्य अर्थ के चारों ओर सिमट गये हैं, जीवन में आर्थिक दृष्टि से उन्नति करना या समृद्धि प्राप्त करना एक तरह से जीवन को पूर्णता देना है।

कई बार व्यक्ति परिश्रम करता है भाग-दौड़ करता है, चौबीस घण्टे कार्य या व्यापार में जुटा रहता है, फिर भी वह आर्थिक दृष्टि से सफलता प्राप्त नहीं कर पाता, व्यापार में बाधाएं आती रहती हैं शत्रु हावी रहते हैं, और आर्थिक दृष्टि से जो सम्पन्नता आनी चाहिए, दुर्भाग्य की वजह से वह सम्पन्नता नहीं आ पाती, ऐसी स्थिति में एक ही उपाय

शेष रह जाता है, कि साधनाओं के माध्यम से अपने आर्थिक पक्ष को पूर्णता दी जाय।

पर अनुष्ठान या मन्त्र प्रयोग कुछ पंडितों का एकाधिकार बन गया है, आजकल अनुष्ठान करवाना काफी मंहगा और व्यय साध्य हो गया है, जो कि प्रत्येक व्यक्ति के बश की बात नहीं है, साथ ही यह आवश्यक नहीं कि पंडित स्वयं मन्त्र साधना या अनुष्ठान में सक्षम हो भी।

ऐसी अन्धकार की स्थिति में यह पुस्तक दीपक की तरह है, जिसके प्रकाश के सहारे सामान्य मानव अपनी गरीबी को मिटा सकता है, जीवन में आर्थिक पूर्णता ला सकता है, इसमें जो साधनाएं दी गई है, वे सभी प्रामाणिक है, साधकों ने तथा विशेष कर गृहस्थ व्यक्तियों ने इन साधनाओं को किया है, तथा पूर्ण रूप से सफल हुए है, इस पुस्तक में ऐसी ही साधनाएं दी गयी है, जो प्रामाणिक है, जिनके प्रयोग से निश्चित रूप से लाभ होता ही है।

किसी भी साधना में कुछ वस्तुओं की जरूरत पड़ती ही है, क्योंकि मन्त्र का सीधा सम्बन्ध उस उपकरण से ही झंकृत हो सकता है, इसलिए उपकरण के चयन में सावधानी बरतनी चाहिए, कोई भी वस्तु शुद्ध हो, प्रामाणिक हो, मन्त्र सिद्ध चैतन्य प्राण प्रतिष्ठा युक्त हो तो निश्चय ही सफलता मिल सकती है, इस प्रकार की साधनाएं पुरुष या स्त्री, बालक या वृद्ध कोई भी कर सकता है परिवार में कोई एक व्यक्ति साधना कर सफलता प्राप्त करता है, तो उसका लाभ पूरे परिवार को प्राप्त होता है।

"मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान" पत्रिका के पुराने अंकों में प्रकाशित साधनाएं पहली बार पुस्तकाकार रूप में प्रकाश में आयी है, पुस्तक में प्रकाशित मन्त्रों के बारे में पूरी सावधानी बरती है, कि वे शुद्धता के साथ प्रकाशित हों, मुझे विश्वास है कि यह पुस्तक आपके लिए संग्रहणीय, महत्वपूर्ण, लाभदायक और जीवन को पूर्णता देने में सहायक सिद्ध हो सकेगी।

—लेखक

विषय - सूची

पृष्ठ संख्या

卐

महालक्ष्मी पूजन

हमारे धर्म शास्त्रों में दीपावली पर्व को विशेष महत्वपूर्ण माना है, क्योंकि गृहस्थ जीवन का आधार धर्म और अर्थ की अधिष्ठात्री देवी जगत जननी मां लक्ष्मी है जिनका यह पावन पर्व है, अतः इस पर्व पर कुछ विशेष प्रयोग किये जा सकते हैं साधक दीपावली की रात्रि को विशेष साधनाएं सम्पन्न कर सफलता प्राप्त करते हैं।

महालक्ष्मी पूजन साधक को पूर्ण निष्ठा, आत्मविश्वास और श्रद्धा के साथ करना चाहिए, यह पूजन रात्रि को ही सम्पन्न किया जा सकता है, शास्त्रों में ऐसी मर्यादा है कि यदि दीपावली की रात्रि को वृषभ या सिंह लग्न में लक्ष्मी पूजन किया जाय तो वह ज्यादा उचित रहता है, क्योंकि ये दोनों स्थिर लग्न हैं, स्थिर लग्न में महालक्ष्मी पूजन करने से घर में स्थिरता आती है तथा धन-धान्य, समृद्धि में स्थायित्व प्राप्त होता है।

पूजन सामग्री

कुंकुम, केसर, गुलाल, मौली, अक्षत, नारियल, लौंग, इलायची, सिन्दूर, अगरबत्ती, दीपक, रुई, माचिस, पंचामृत (शुद्ध घृत, दूध, दही, शहद, शक्कर), यज्ञोपवीत, पंचमेवा, फल, कलश, कुएं का जल, गंगाजल, श्वेत चन्दन, पान, पंच पल्लव, कमल पुष्प, पकाई हुई खीर, मिश्री, सरसों, कपूर, पीला वस्त्र, लक्ष्मी को पहिनाने योग्य वस्त्र, इत्र, सुपारी, गुलाब-जल, काली मिर्च, गुग्गल, शृंगार प्रसाधन, दूध का प्रसाद आदि।

ध्यान देने योग्य बातें

१—साधक की जब भी इच्छा हो महालक्ष्मी पूजन कर सकता है।

२-महालक्ष्मी पूजन पुरुष या स्त्री कोई भी कर सकता है, इस बात का ध्यान रहे कि स्त्री रजस्वला न हो, शास्त्र मर्यादा के अनुसार रजस्वला के बाद छठे दिन स्त्री देव पूजन योग्य मानी जाती है, पांच दिन स्त्री को कोई भी शुभ कार्य या देव पूजन करने का निषेध है, साधक अपनी धर्मपत्नी के साथ बैठ कर लक्ष्मी पूजन कर सकता है, ऐसी स्थिति में साधक को चाहिए कि वह अपने दाहिनी ओर अपनी पत्नी को बिठावे।

३-पूजन में शुद्ध एवं पवित्र वस्त्र धारण किये हुए हों, स्त्री जब भी लक्ष्मी पूजन करे तो सुन्दर राजसी वस्त्र धारण कर पूर्ण शृंगार के साथ महालक्ष्मी पूजन में भाग ले।

४-पूजन करने से पूर्व पूजन-सामग्री एकत्र करके रख देनी चाहिए, सामने महालक्ष्मी का चित्र या मूर्ति स्थापित होनी चाहिए, उसके सामने मन्त्र सिद्ध प्राणप्रतिष्ठा युक्त श्रीयन्त्र, कनकधारा यन्त्र, कुबेर यन्त्र स्थापित करे, पर ये तीनों ही यन्त्र स्थापित करने आवश्यक नहीं हैं, इनमें से कोई भी एक यन्त्र स्थापित किया जा सकता है, यह यन्त्र महालक्ष्मी के सामने लकड़ी के पट्टे पर लाल वस्त्र बिछा कर उस पर स्थापित करना चाहिए।

५-साधक के बाईं ओर तेल का दीपक लगाना चाहिए, इसमें किसी भी प्रकार का तेल प्रयोग में लिया जा सकता है, तथा दाहिनी ओर शुद्ध घृत का दीपक प्रज्वलित करना चाहिए, दोनों दीपकों के बीच में अगरबत्ती लगानी चाहिए।

६-घी के दीपक में कुछ इत्र की बूंदें भी डाली जा सकती हैं, महालक्ष्मी पूजन में किसी भी प्रकार का इत्र प्रयोग में लिया जा सकता है, पर गुलाब का इत्र सर्वश्रेष्ठ माना गया है।

७-लक्ष्मी पूजन में कमल के पुष्प या गुलाब के पुष्पों का विशेष महत्व है, पुष्प ताजे खिले हुए हों।

८-साधक पीले आसन का प्रयोग करें और स्वयं या तो राजसी वस्त्र धारण करें अथवा पीले वस्त्र धारण करके पूजन करें।

९-साधक का मुंह पूर्व या उत्तर दिशा की ओर होना चाहिए और उसके सामने देवी की मूर्ति या चित्र स्थापित होता है।

१०–महालक्ष्मी पूजन से पूर्व गणपति स्थापन, गणपति पूजन तथा गुरु पूजन आवश्यक माना गया है।

११–लक्ष्मी मन्त्र जप में किसी भी प्रकार की माला का प्रयोग किया जा सकता है, पर रुद्राक्ष की माला का निषेध है, स्फटिक माला न हो तो चन्दन की माला का भी प्रयोग किया जा सकता है।

महालक्ष्मी पूजन

साधक सर्वप्रथम दोनों हाथ जोड़ कर महालक्ष्मी को प्रणाम करें—

सौवर्णांपद्मसद्माऽम्लकमलयुगं सुगमशः पाणियुग्मे बिभ्राणी,
शोभयोद्यद्दिग्जलधिजलोच्छ्रगात्री विधात्री।
बाहुद्वन्द्वकराभयाऽर्द्रहृदयासक्तप्रियोल्लासिनी,
लक्ष्मीर्मे भवनेवसत्वनुदिनंचन्द्राहिरण्मय्यपि ॥

सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवलतरांशुकगन्धमाल्यशोभे।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवन भूतिकरि प्रसीद मह्यम ॥ १ ॥

हे कमलवासिनी! कमल सदृश कोमल हाथों वाली, स्वच्छ सुगन्धित पुष्पों की माला को धारण करने से शोभा वाली। हे विष्णु प्रिये! मन की बातों को जानने वाली, त्रिभुवन (त्रैलोक्य) को ऐश्वर्य तथा धन देने वाली, हे देवी! मेरे ऊपर प्रसन्न हो जाओ ॥१॥

धनमग्निर्धनं वायुर्धनं सूर्यो धनं वसुः।
धनमिन्द्रो बृहस्पतिर्वरुणो धनमश्विनो ॥२॥

अग्निदेव धन दें, वायुदेव धन दें, सूर्यदेव धन दें, इसी भांति वसु, इन्द्र, बृहस्पति, वरुण एवं अश्विनी कुमार आदि समस्त देव हमारे गृह में वास करते हुए हमें धन प्रदान करें ॥२॥

वैनतेय सोमं पिब सोमं पिबतु वृत्रहा।
सोमं धनस्य सोमिनो, मह्यम् ददातु सोमिना ॥३॥

हे वरुण देव ! आप सोमरस पीजिए। इन्द्रदेव भी सोमरस पीवें। सोमी (सोमरस पीने वाले) कुबेर आदि समस्त देव मेरे लिए भी सोमरस दें, और सोमरस के पीने वाले सर्वदा हमारे घर में निवास करें, जिससे कि मैं भी ऐश्वर्य-शाली बन जाऊं ॥३॥

न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो नाशुभा मति ।
भवन्ति कृत पुण्यानां भक्तानां श्रीसूक्तं जपेत् ॥४॥

जो इस श्रीसूक्त का पाठ करते हैं, उन भक्तों को एवं जिन्होंने पुण्य किये हैं, ऐसे लोगों को केवल पाठ मात्र से ही क्रोध, मत्सरता, लोभ एवं अशुभ मति आदि नहीं सताते हैं ॥४॥

पद्मानने पद्म ऊरु पद्माक्षि पद्मसम्भवे ।
तन्मे भजसि पद्माक्षि येन सौख्यं लभाम्यहम् ॥५॥

हे कमल के सदृश मुख वाली, हे कमल के समान जंघों वाली, हे कमल-नयने, हे कमल में वास करने वाली, हे पद्माक्षि, तुम मेरे यहां सर्वदा निवास करो, जिससे कि मैं सुख एवं ऐश्वर्य प्राप्त करूं ॥५॥

विष्णुपत्नीं क्षमां देवीं माधवीं माधवप्रियाम् ।
विष्णुप्रियां सखीं देवीं नमाम्यच्युतवल्लभाम् ॥६॥

मैं विष्णु पत्नी क्षमा (क्षमाशीला) माधवी, विष्णु प्रिया, माधव प्रिया, सखी, देवी एवं अच्युत अर्थात् सच्चिदानन्द परमेश्वर की वल्लभा को प्रणाम करता हूं ॥६॥

महालक्ष्मी च विद्महे विष्णुपत्नी च धीमहि ।
तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ॥७॥

हम महालक्ष्मी को जिज्ञासा करते हैं, और विष्णु पत्नी का ध्यान करते हैं, अतएव श्री महालक्ष्मी हमें प्रेरित करें अर्थात् हमारे घर में निवास करें ॥७॥

पद्मानिनीपद्मिनिपद्मपत्रेपद्मप्रियपद्मदलायताक्षि ।
विश्वप्रियेविश्वमनोनुकूलत्वत्पादपद्मं मयिसन्निधत्स्व ॥८॥

हे कमल मुखि, हे कमल वाली, हे कमल के पत्तों वाली, हे कमलों से प्रेम

करने वाली, हे कमल के समान बड़ी आँखों वाली, संसार की प्रिय, संसार के मन के अनुकूल चलने वाली, हे महालक्ष्मी तुम अपने चरण कमलों को मेरे घर रखो ॥८॥

आनन्द कर्दम श्रीदश्चिक्लीत इति विश्रुताः ।
ऋषयः श्रिय पुत्राश्च मयि श्रीदेवीदेवताः ॥९॥

आनन्द, कर्दम, श्रीद, चिक्लीत ये चार जो प्रसिद्ध पुत्र हैं, जो कि इस श्रीसूक्त की प्रधान देवी लक्ष्मी के पुत्र हैं, मुझे 'श्री' दें ॥९॥

ऋणरोगादि दारिद्र्यं पापंच अपमृत्यवः ।
भय शोकमनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा ॥१०॥

हे महालक्ष्मी, मेरा ऋण, रोगादि बाधाएं, दारिद्र्य, पाप, अपमृत्यु (अकाल मृत्यु), भय एवं समस्त पाप आदि सदा के लिए नष्ट हों, जिससे कि मैं सर्वदा सुख भोगूं ॥१०॥

श्रीर्वर्चः स्वमायुष्यमारोग्यमाविधाच्छ्वमानं महीयते
धान्यं धनं पशुं बहुपुत्रलाभं संवत्सरं दीर्घमायुः ॥ ११॥

इस सूक्त का पाठ करने से लक्ष्मी, तेजस्विता, आयु, आरोग्य आदि पवित्रता एवं गौरव वस्तुएं वृद्धि को प्राप्त होती हैं और धन, धान्य पशु, बहु, पुत्र लाभ, सौ वर्षों की आयु इसके पाठ मात्र से ही प्राप्त होती है ॥११॥

इसके बाद अपने इष्ट एवं कुल देवता का ध्यान करें।

फिर संकल्प हेतु हाथ में जल लेकर संकल्प लें कि मैं भगवती लक्ष्मी का आह्वान पूजन कर रहा हूं, जिससे कि वे मेरे घर में पधारें और स्थायित्व प्राप्त करें।

इसके बाद गणपति की मूर्ति या चित्र की पूजा करें अबीर गुलाल चढ़ावें केसर लगावें, भोग लगावें फिर इसी प्रकार लक्ष्मी की मूर्ति या चित्र का सभी पदार्थों से पूजन करें और अन्त में अगरबत्ती जलाकर कपूर से आरती संपन्न करें।

इस प्रकार पूर्ण विधि-विधान के साथ महालक्ष्मी का पूजन करें और महालक्ष्मी को जो भोग लगाया हुआ है, वह प्रसाद परिवार में वितरित कर दें।

दीपावली की रात्रि को कई स्थानों पर महालक्ष्मी पूजन के उपरान्त तराजू बही पूजन, दवात-लेखनी की पूजा का भी विधान है, ये सभी पूजन कर भोजन करें, पूरी रात लक्ष्मी के सामने घी और तेल के दीपक बराबर जलते रहें तथा पूजन सामग्री एवं द्रव्य वहां से न हटावें।

दूसरे दिन प्रातःकाल सूर्योदय के समय पुनः संक्षिप्त महालक्ष्मी पूजन करें और फिर यथास्थान महालक्ष्मी की मूर्ति या चित्र को स्थापित करें, भारतवर्ष में कई स्थानों पर लक्ष्मी पूजन के समय सौभाग्यवती स्त्रियां अपने मंगलसूत्र या अन्य स्वर्ण आभूषणों की भी पूजा करती हैं, अतः रात्रि को यदि आभूषण-पूजा हुई हो तो प्रातःकाल इन आभूषणों को धारण करना चाहिए।

लक्ष्मी पूजन के समय कई स्थानों पर चांदी के रुपयों आदि की पूजा करते हैं, इन रुपयों को सन्दूक में या तिजोरी में रख दें, इन्हें व्यय न करें।

इस प्रकार विधि-विधान पूर्वक महालक्ष्मी पूजन से निश्चय ही धन-धान्य की वृद्धि एवं मनोवांछित सफलता प्राप्त होती है।

卐

यस्यास्ति वित्तं स नरः कुलीन स पण्डितः सः श्रुतवान गुणज्ञः।
स एव वक्ता स च दर्शनीय सर्वे गुणाः कांचनमाश्रयन्ति॥

जिसके पास धन है वही कुलीन है, वही पण्डित है, वही गुणज्ञ है, वही वक्ता है, वही दर्शनीय है, अभिप्राय यह है कि सभी गुण धन के आश्रित हैं।

अरात्रि काणे विकटे गिरि गच्छ सदान्ते।
शिरिन्धिष्टस्य सत्वभिस्ते भिष्टुखा चा या मसि॥

हे दरिद्रता! तुम कठोर हृदया हो, तुम्हारे कारण मुझे कठोर वचन सुनने पड़ते हैं, नीचा देखना पड़ता है, मुझमें कायरता कोप समा गया है, निम्नता आ गई है, अतः तुम्हें अपने से दूर करने के लिए मैं कृतसंकल्प हूं।

लक्ष्मी से सम्बन्धित कुछ गोपनीय यन्त्र

भारतीय साधना ग्रन्थों में यन्त्रों से सम्बन्धित प्रचुर साहित्य उपलब्ध है, परन्तु वह अधिकतर साहित्य हस्तलिखित अवस्था में है, इस प्रकार के यन्त्रों एवं उनका क्रिया पद्धति का ज्ञान बहुत ही कम साधुओं अथवा योगियों को है जो कि कभी-कभी तरंग में आने पर अपने शिष्यों अथवा परिचितों को एक-आध चीज बता देते हैं।

स्वामी जी यन्त्र ज्ञान में परम विद्वान हैं, और उन्होंने इस पर कई वर्षों तक शोध कार्य किया है, स्वामीजी अधिकतर घूमते रहते हैं, उनके द्वारा कई नवीन यन्त्रों एवं उनकी क्रिया-पद्धति के बारे में ज्ञान प्राप्त हुआ है, जो कि आगे की पंक्तियों में प्रस्तुत है—

१-लक्ष्मी यन्त्र

यह यन्त्र अत्यन्त महत्वपूर्ण है, इस यन्त्र को चांदी या तांबे के पतरे पर बुधवार के दिन खुदवा देना चाहिए, अथवा केसर से दीपावली के दिन इसको कागज पर अंकित कर कांच के फ्रेम में मढ़वा लेना चाहिए और फिर नवरात्रि को इस यन्त्र का पूजन करना चाहिए।

इसके बाद सामने बैठ कर निम्न मन्त्र का १२५०० जप करने से यह यन्त्र सिद्ध हो जाता है, और उसके घर में निरन्तर लक्ष्मी की प्राप्ति होती रहती है।

मन्त्र

॥ ॐ ह्रीं श्रीं महालक्ष्मी पद्मावती सहिताय ह्रीं श्रीं नमः ॥

स्वामीजी के अनुसार यह आवश्यक नहीं कि नवरात्रि के दिनों में ही इस यन्त्र को कागज पर अंकित किया जाय, किसी भी बुधवार को प्रातः सूर्योदय से नौ बजे के भीतर-भीतर इस यन्त्र को कागज या भोजपत्र पर अंकित कर इसे कांच के फ्रेम में मढ़वा दें, और फिर उस रात्रि को उपरोक्त मन्त्र का १२५०० जप करें तो यह यन्त्र सिद्ध हो जाता है और उसके जीवन में आर्थिक न्यूनता नहीं रहती।

ह्र	ह्रीं	श्रीं	क्लीं	महा
श्र	हुं	न	मः	लक्ष्मै
ध	र	मे	न्द्र	पद्मा
स	हि	ता	य	नमः
ह्रीं	श्रीं	न	मः	नमः

मन्त्र जप करते समय सामने यह यन्त्र रहना चाहिए, मन्त्र जप से पूर्व यन्त्र की सामान्य पूजा कर लेनी चाहिए तथा सामने तेल का दीपक लगा लेना चाहिए, साधक को उत्तर की ओर मुंह कर सफेद सूती या ऊनी आसन पर बैठ कर मन्त्र जप करना चाहिए, इसके लिए किसी भी प्रकार की माला का प्रयोग किया जा सकता है।

पर यह आवश्यक है कि यह पूरा मन्त्र जप एक ही रात्रि में समाप्त हो जाना चाहिए।

२-व्यापार यन्त्र

स्वामीजी के अनुसार यह व्यापार यन्त्र अत्यन्त महत्वपूर्ण है, कभी भी रविवार या बुधवार को पुष्य नक्षत्र हो तब इस यन्त्र को चांदी या तांबे के पतरे पर खुदवा लें, यदि यह सम्भव न हो तो कागज पर या भोजपत्र पर भी इस यन्त्र को केसर से इस अवसर पर अंकित किया जा सकता है, फिर उसी दिन इस यन्त्र की पूजा करें और उसी दिन इसके सामने बैठ कर निम्न मन्त्र की १२१ माला जप करें, इसमें स्फटिक माला का ही प्रयोग किया जाना चाहिए—

मन्त्र

ॐ ह्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै व्यापार वृद्धि कुरु कुरु
क्लीं ह्रीं ॐ ॐ अष्टलक्ष्म्यै नमः ॥

७	१२	१	१४
२	१३	८	११
१६	३	८	५
९	६	१५	४

पूजन के बाद इस यन्त्र को घर के सन्दूक में, तिजोरी में या दुकान में रखा जा सकता है, नित्य इसके सामने अगरबत्ती व दीपक लगावें तथा अष्टमी की रात्रि को इस यन्त्र का पूजन करें।

यदि इस प्रकार का यन्त्र दुकान में रख दिया जाय और नित्य अगरबत्ती लगाई जाय तो निश्चय ही उसके जीवन में व्यापारिक उन्नति, आर्थिक लाभ एवं पूर्ण सफलता प्राप्त होती है।

३-दरिद्रता विनाशक यन्त्र

यह यन्त्र लक्ष्मी प्रदायक एवं चमत्कारी है, जीवन में यदि दुर्भाग्य साथ नहीं छोड़ रहा हो या आर्थिक उन्नति में बराबर बाधाएं आ रही हों या दरिद्रता समाप्त नहीं हो रही हो या कर्जा बढ़ रहा हो तो इस प्रयोग को अवश्य करना चाहिए।

इस यन्त्र को किसी भी रविवार को प्रातः ७ बजे से ११ बजे के बीच किसी ताम्रपत्र पर अंकित करावें या कागज अथवा भोजपत्र पर केसर से इस यन्त्र को बना दें और फ्रेम में मढ़वा दें।

फिर अगले रविवार को इस यन्त्र की पूजा करें और इसके सामने निम्न मन्त्र की मात्र ग्यारह मालाएं फेरें, ऐसा करने पर यह यन्त्र सिद्ध हो जाता है—

मन्त्र

॥ ॐ क्लीं पातु श्रीं रक्षा कुरु कुरु श्रीं नमः ॥

क्लीं स्वाहा ॐ क्लीं स्वाहा

रक्षा ॐ क्लीं

पा	तु	श्रीं	स्वाहा
श्रीं	पा	तु	श्रीं
पा	तु	श्र	पा
तु	श्रीं	पा	तु

रक्षा कुरु ॐ रक्षा कुरु

रक्षा कुरु ॐ रक्षा कुरु

इसके बाद इस यन्त्र को अपने घर के पूजा स्थान में स्थापित कर दें अथवा दुकान पर रख दें, नित्य इसके सामने सम्भव हो तो अगरबत्ती व दीपक लगा दें।

ऐसा करने पर शीघ्र ही अनुकूल फल प्राप्त होने लगता है और उसके जीवन में सभी दृष्टियों से निरन्तर उन्नति होने लगती है।

卐

लक्ष्मी ! तुझे मेरे घर में कैद होना ही पड़ेगा

लक्ष्मी चंचल और अस्थिर है, वह एक घर में टिक कर नहीं बैठती, इसीलिए शास्त्रों में लक्ष्मी को "चंचला" और "अस्थिरा" कहा है, आज जो लखपति है, एक ही झटके में वह सड़क पर आकर खड़ा हो जाता है, और निर्धन जीवन व्यतीत करने के लिए बाध्य हो जाता है, आज जो सर्वथा भिखारी और निर्धन है, लक्ष्मी की कृपा से कुछ ही दिनों के बाद लखपति बन जाता है, यह सब लक्ष्मी की चंचल प्रकृति के कारण ही है।

लक्ष्मी की अनिवार्यता

पर इसमें भी कोई दो राय नहीं कि लक्ष्मी की अनिवार्यता आज ही नहीं अपितु पिछले कई हजार वर्षों से लोगों ने अनुभव की है, और उसे स्थिर करने के कई प्रयत्न किये हैं, कुछ ने सोना जमीन में दबा कर, कुछ ने ब्याज पर धन देकर, तो कुछ ने आलीशान भवन बना कर अपने बुढ़ापे को निश्चिन्तता देने का प्रयास किया है, परन्तु मानव के ये सभी प्रयास मृगमरीचिका ही सिद्ध हुए हैं, जब विपरीत समय आता है तो एक ही झटके में मकान बिक जाते हैं, सोना समाप्त हो जाता है और खाने के भी लाले पड़ जाते हैं।

शास्त्रों में एक स्वर से यह कहा गया है कि धनाढ्य होना अपने आप में मानव जीवन की सफलता है, एक दृष्टि से देखा जाय तो यह पूर्णता और निश्चिन्तता है, इसके विपरीत गरीबी और निर्धनता को जीवन का अभिशाप माना गया है, निर्धन व्यक्ति रोज सुबह जन्म लेता है और रोज रात को मरता है, "मरता" शब्द मैं इसलिए प्रयुक्त कर रहा हूं कि जब उसके दरवाजे पर कोई

व्यक्ति अपना कर्जा मांगने के लिए आता है तो वह अपने आपको सर्वाधिक अपमानित और मृतवत् अनुभव करता है, जब उसके बच्चे किसी वस्तु की याचना करते हैं और वह पूरी नहीं कर पाता तो सही अर्थों में वह स्वयं अपनी नजरों से गिर जाता है, और जिन्दगी उसे श्रापवत् अनुभव होती है, बीमारी या कठिन क्षणों में जब उसे कहीं से कुछ भी प्राप्त नहीं होता, कर्ज नहीं मिलता तो उसे ऐसा लगता है कि जैसे कहीं जाकर आत्म हत्या कर ले, इसीलिए मैंने कहा है कि गरीब आदमी नित्य रात को मरता है।

साधारण गृहस्थ ही नहीं अपितु ऋषि, मुनि, योगी, संन्यासी भी लक्ष्मी की अनिवार्यता को अनुभव करते थे, वशिष्ठ के आश्रम में इतनी सम्पन्नता थी, कि दशरथ का सारा राज्य तुच्छ था, पच्चीस हजार शिष्यों को वह नित्य सुबह-शाम भोजन कराता था, और जब दशरथ को कैकेय नरेश के विरुद्ध युद्ध करने की मजबूरी हुई तो सैन्य संगठन के लिए दशरथ जैसे राजा को भी वशिष्ठ से याचना करनी पड़ी।

मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि धन की आवश्यकता गृहस्थ व्यक्तियों को ही नहीं अपितु योगियों और संन्यासियों को भी रही है, इस छोटे से उदाहरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि परिश्रम करने और राजा बनने के बावजूद भी उसे ऋषि से धन की याचना करनी पड़ी, जिसके पास आय के कोई स्रोत नहीं थे।

फिर किस प्रकार से वशिष्ठ ने दशरथ की याचना पूरी की, जरूर वशिष्ठ के पास कुछ ऐसी साधना सिद्धियां होंगी, जिसकी वजह से उसने लक्ष्मी को अपने आश्रम में आबद्ध किया होगा।

और यह पिछले पांच हजार वर्षों का इतिहास बता रहा है कि पूरे समाज के वर्गों में यदि हम अनुपात निकालें तो मात्र दो या तीन व्यक्ति ही सही अर्थों में धनाढ्य कहे जा सकते हैं जो लखपति करोड़पति होते हैं, बाकी ९७ प्रतिशत लोग तो मात्र जीविकोपार्जन ही कर पाते हैं, इसके विपरीत यदि हम योगियों, संन्यासियों, तिब्बत के लामाओं, जैनाचार्यों, बौद्ध के विहारों और साधकों पर दृष्टि डालें और अनुपात देखें तो दो-तीन आश्रम ही गरीब और निर्धन हो सकते हैं, इसके विपरीत ९७ प्रतिशत आश्रम और मन्दिर करोड़पति होते हैं।

इस अनुपात से यह दो टूक स्पष्ट हो जाता है कि परिश्रम करने से लक्ष्मी घर में आबद्ध नहीं हो सकती, भाग्य के भरोसे लक्ष्मी को घर में कैद नहीं किया

जा सकता, यदि परिश्रम से ही घर में लक्ष्मी आती तो मजदूर हमसे ज्यादा परिश्रम करता है, आठ घण्टे पत्थर उठाता है, पर महीने के अन्त में उसके ऊपर कर्जा ही होता है, ऐसे सैकड़ों परिवार हैं जिसमें परिवार के आठ-दस सदस्य बराबर परिश्रम करते हैं, पर फिर भी अन्त में कुछ भी नहीं बचता, यह पुस्तक पढ़ने वाले इस बात को अनुभव करेंगे और यदि सजग दृष्टि से समाज के चारों ओर दृष्टि डालेंगे तो यह बात महसूस करेंगे। परिश्रम से या ज्यादा परिवार के सदस्य होने से घर में लक्ष्मी स्थिर नहीं हो सकती और न लखपति करोड़पति बना जा सकता है।

वशिष्ठ तो अकेले ऋषि थे जो उस समय सर्वाधिक सम्पन्न व्यक्तित्व थे, विश्वामित्र के पास इतनी अधिक सम्पत्ति थी कि वह इन्द्र के राज्य को खरीदने की सामर्थ्य रखते थे और उनका आश्रम उस समय पूरे भारतवर्ष में सर्वाधिक सम्पन्न और धन सम्पन्न था गोरखनाथ के पास इतना अधिक स्वर्ण था कि जिसको तोला जाना सम्भव ही नहीं था और न गिनती करना ही। नागार्जुन अपने आपमें सर्वाधिक सम्पन्न व्यक्तित्व थे। इन सभी के न कोई परिवार था न कोई लम्बा-चौड़ा व्यापार, न कोई ऊंची नौकरी और न कोई अन्य कारोबार, इसके बावजूद भी ये अपने-अपने समय के सर्वाधिक सम्पन्न व्यक्ति थे।

और ये सर्वाधिक सम्पन्न व्यक्ति इसलिए थे कि इनके पास कुछ ऐसी युक्तियां थीं, कुछ ऐसे तन्त्र, मन्त्र या गोपनीय विधियां थीं जिसके माध्यम से वे लक्ष्मी को अपने घर में आबद्ध कर सकते थे, उसे स्थायित्व देने के लिए बाध्य कर सकते थे और उन्होंने ऐसा किया भी।

लक्ष्मी के तीन रूप

लक्ष्मी के मुख्यतः तीन स्वरूप माने गये हैं और तीनों ही स्वरूपों से उसकी अभ्यर्थना शास्त्रों में वर्णित है, वह मां के रूप में शास्त्रों में प्रचलित है, इसीलिए हम उसे "लक्ष्मी मैया" के नाम से सम्बोधित करते हैं, वह पत्नी के रूप में शास्त्रों में वर्णित है और इसी वजह से धनवान व्यक्ति को हम "लक्ष्मीपति" कहते हैं, और तीसरा स्वरूप लक्ष्मी का "प्रेमिका" है, जिसके माध्यम से लक्ष्मी को अपने अनुकूल बनाया जा सकता है।

मां के रूप में लक्ष्मी की आराधना, न तो आज के युग में उचित है और न प्राचीन काल में ही उचित मानी गई थी, जैनों के प्रमुख आचार्य 'पद्मसूरी ग्रंथ'

ने एक स्थान पर कहा है कि मां को तो जीवन भर देते ही रहना पड़ता है सेवा के द्वारा, सुविधा के द्वारा और धन के द्वारा, उससे स्नेह के अलावा और कोई ठोस उपलब्धि सम्भव नहीं, इसीलिए मां के रूप में लक्ष्मी की सेवा करने से केवल आश्वासन और स्नेह ही प्राप्त हो सकता है, पर इसके विपरीत हमें जीवन में निरन्तर खोते ही रहना पड़ता है, इसीलिए जो लक्ष्मी की मां के रूप में पूजा अर्चना करते हैं वे लगभग निर्धन बने रहते हैं।

आचार्य के शब्दों में वजन तर्क और शास्त्र सम्मतता है, आचार्य ही नहीं अपितु कई उच्चकोटि के ऋषियों ने भी लक्ष्मी को मां के रूप में अर्चना करने को उचित नहीं माना है, पुलस्त्य ऋषि ने एक स्थान पर कहा है–लक्ष्मी को मां के रूप में स्मरण करना या पूजन करना ही अहित करना है।

दूसरा स्वरूप पत्नी का है, और पत्नी का तात्पर्य अर्धांगिनी है, जिसका घर में और शरीर पर बराबर आधा अधिकार है, मैं यहां पत्नी शब्द को वासना के रूप में प्रचलित नहीं कर रहा हूं, मैं तो सम्बन्ध निर्वाह की बात कर रहा हूं, पत्नी के रूप में किसी प्रकार का कोई लेन-देन नहीं होता, व्यापार-विनिमय नहीं हो सकता, वहां तो जितना लिया है, उतना ही देना पड़ता है, उस पर अधिकार नहीं जता सकते, उस पर पूरी तरह से नियन्त्रण स्थापित नहीं कर सकते, यदि उसे बहुत अधिक दबाया जाय तो वह उच्छृंखल हो सकती है, और पर पुरुषरत बन सकती है।

इसीलिए शास्त्रों में पत्नी के रूप में भी लक्ष्मी की अभ्यर्थना ज्यादा उचित नहीं मानी गयी।

लक्ष्मी से तीसरा सम्बन्ध प्रेमिका का है, प्रेमिका का तात्पर्य जो सब कुछ देने को उतावली रहती है, अपना जीवन, अपना यौवन, अपना शरीर, अपना धन, मान, प्रतिष्ठा और सब कुछ। जो सब कुछ देकर के भी संतुष्ट होती है, जिसके मन में लेने की कुछ भी इच्छा नहीं रहती, जो लेन-देन में विश्वास नहीं करती वह प्रेमिका कही जाती है।

और प्रेमिका का स्वरूप जीवन में निरन्तर आनन्द प्रदान करना है, प्रेमिका जो तनाव रहित जीवन को पूर्णता दे, जो अपना सब कुछ बिना हिचकिचाहट के देने के लिए उद्यत हो, जो जल्दी से जल्दी सब कुछ देने की सामर्थ्य रखती हो, उसी को प्रेमिका कहते हैं।

जैसा कि मैंने ऊपर बताया कि यहां वासना प्रधान शब्दों का प्रयोग नहीं कर रहा हूं, मैं तो सम्बन्ध निर्वाह शब्दों को प्रस्तुत कर रहा हूं, शास्त्र में भी लक्ष्मी को प्रेमिका के रूप में ही स्वीकार किया है, यजुर्वेद में भी लक्ष्मी का आह्वान करते समय कहा है–'तू प्रिया रूप में मेरे जीवन में आ, जिससे मैं जीवन में सभी दृष्टियों से पूर्णता अनुभव कर सकूं।'

पर प्रेमिका को भी आबद्ध करना आवश्यक होता है, क्योंकि नारी जाति ही चंचल होती है, पारे की तरह वह अस्थिर होती है, उसे शब्दों से, विचारों से या कार्यों से आबद्ध बनाये रखना जरूरी होता है, प्रेमिका को भी अपने पौरुष से आबद्ध किया जा सकता है, और तांत्रिक ग्रन्थों में तन्त्र को ही पौरुष माना गया है, तन्त्र का अर्थ पौरुष है।

अद्वितीय आबद्धता

विश्वामित्र अपने आपमें क्रान्तिकारी व्यक्तित्व सम्पन्न ऋषि थे, सही अर्थों में वह गृहस्थ था, मगर जिसके सीने में पौरुष का सागर लहराता था, जिसकी आंखों में एक विशेष चमक और प्रकृति पर पूर्णतः नियन्त्रण प्राप्त करने की शक्ति और क्षमता थी, जो कठिन चुनौतियों को हंस कर स्वीकार करता और उन चुनौतियों पर पूर्ण विजय प्राप्त करता।

उसने लक्ष्मी की इस चंचल वृत्ति को पहिचाना, उसके 'लक्ष्मी सपर्या' ग्रन्थ में इस विधि का विस्तार से विवरण है, वह पहला व्यक्ति था जिसने लक्ष्मी पर एक स्वतन्त्र ग्रन्थ की रचना की, उसने पहली बार लक्ष्मी के तीनों स्वरूपों को स्पष्ट किया और उसने बताया कि लक्ष्मी के सामने गिड़गिड़ाने से, हाथ जोड़ने से, प्रार्थना करने से लक्ष्मी मैया घर में मदद नहीं कर सकती, उसका तो प्रेमिका स्वरूप ही महत्वपूर्ण है और प्रेमिका दो रूपों से ही नियन्त्रित हो सकती है, या तो अत्यधिक स्नेह और प्यार से, या प्रबल पौरुष से।

विश्वामित्र ने कहा कि प्रबल पौरुष के माध्यम से ही प्रेमिका को हमेशा-हमेशा के लिए अपने घर में आबद्ध किया जा सकता है, क्योंकि पौरुष तन्त्र के माध्यम से ही सम्भव है, तन्त्र का तात्पर्य है-व्यवस्थित तरीके से कार्य सम्पादित करना, और यदि सही तरीके से लक्ष्मी से सम्बन्धित प्रयोग सम्पन्न किया जाय तो लक्ष्मी को मजबूरन घर में आना ही पड़ता है, और जन्म-जन्म के लिए घर में कैद होकर रहना ही पड़ता है।

विश्वामित्र ने अपने इस अद्वितीय ग्रन्थ में इन सारे प्रयोगों का विस्तार से विवेचन किया, वास्तव में ही आज के युग में यह ग्रन्थ अपने आपमें इतना अधिक मूल्यवान हो गया है, कि जिसके सामने अन्य सब कुछ तुच्छ है, यह ग्रन्थ अभी तक सर्वथा गोपनीय रहा है, इसकी एक मात्र प्रति ही उपलब्ध हो सकी है, इसमें लक्ष्मी को प्रिया रूप में सम्मोहित कर अपने घर में आबद्ध करने की क्रिया और अनुष्ठान समझाया है।

विश्वामित्र ने स्वयं स्वीकार किया है, कि मैंने लक्ष्मी की अर्चना-पूजा मां के रूप में भी की, बहिन और पत्नी के रूप में भी की, परन्तु मुझे पूर्ण सफलता प्राप्त नहीं हुई, जब मैंने प्रेमिका रूप में अपने पौरुष के माध्यम से आबद्ध किया तब उसे मजबूर होकर मेरे आश्रम में आना पड़ा और बैठना पड़ा।

मन्त्र या तन्त्र

लक्ष्मी की अर्चना मन्त्र के माध्यम से भी सम्भव है, और तन्त्र के माध्यम से भी। मन्त्र का तात्पर्य प्रार्थना करना, स्तुति करना, निवेदन करना है, ऐसी स्थिति में यह आवश्यक नहीं है, कि हमारी प्रार्थना या स्तुति वह स्वीकार करे ही, क्योंकि बाजी उसके हाथ में रहती है, वह चाहे तो प्रार्थना स्वीकार कर दया दिखा सकती है, और चाहे तो प्रार्थना ठुकरा कर मुंह मोड़ कर जा सकती है।

ये सारी अर्चन-पूजन साधना विधियां मन्त्रों के द्वारा सम्पन्न है, और हमने इन मन्त्रों के द्वारा मात्र लक्ष्मी को प्रसन्न करने की क्रिया ही प्रयुक्त की है, उसके सामने घण्टा-घड़ियाल बजाये हैं, नैवेद्य का भोग लगाया है, आरती उतारी है, और प्रार्थना की है, पर यह सब हमारी कापुरुषता है, निम्नता है, गिड़गिड़ाना है, अपने आपको कमजोर और अशक्त बता कर हाथ जोड़ना है, भीख मांगना है।

विश्वामित्र ने कहा—हाथ जोड़ने से नारी वश में हो ही नहीं सकती, दीनता और गिड़गिड़ाना उसके सामने अपने आपको कमजोर सिद्ध करना है, और कमजोर के घर में तो पत्नी भी नहीं टिकती। इसके लिए तो प्रबल पौरुष की जरूरत होती है, और यह पौरुष तन्त्र का ही पर्याय है।

मैंने ऊपर मन्त्र की परिभाषा समझाते हुए कहा कि मन्त्र का तात्पर्य हाथ जोड़ना, गिड़गिड़ाना या स्तुति करना है, इसके विपरीत तन्त्र का तात्पर्य अधिकार जताना है, अपने पौरुष के वेग से अपने घर में रहने के लिए मजबूर करना है, अपने वशवर्ती बनाना है, और उससे मनोवांछित कार्य कराना है।

इसीलिए विश्वामित्र ने पहली बार एक क्रान्तिकारी ऋषि बन कर स्पष्ट शब्दों में घोषणा की, कि अब बहुत हो चुका, हाथ जोड़कर, प्रार्थना कर, चरण छूकर लक्ष्मी को रिझाने का प्रयत्न, इससे लक्ष्मी न तो प्रसन्न हो सकती है और न घर में स्थाई निवास ही कर सकती है, अब तो प्रबल पौरुष के बेग से तन्त्र के माध्यम से अपने घर में उसे लाना है, और जीवन भर के लिए आबद्ध कर देना है, तन्त्र का तात्पर्य ही ताकत के साथ उससे कार्य सम्पन्न कराना है।

लक्ष्मी तुझे मेरे घर में कैद होना ही होगा

यहां मैंने नहीं अपितु विश्वामित्र ने "कैद" शब्द का प्रयोग किया है, उसने कहा है कि कैद करना ही जीवन की पौरुषता है, मर्द आदमी गिड़गिड़ाता नहीं, अपितु आंख में आंख डाल कर झटके के साथ हाथ खींच उसे अपने घर में लाता है, और उसे घर में रहने के लिए मजबूर कर देता है।

वस्तुत: प्रचलित है कि जब अन्य मन्त्रों के माध्यम से लक्ष्मी विश्वामित्र के आश्रम में नहीं आई तो उस क्रोधित ऋषि ने एक सर्वथा नवीन तान्त्रोक्त विधि प्रचलित की, जिसे "लक्ष्मी सपर्या" विधि कहा जाता है, इस विधि के माध्यम से विश्वामित्र ने प्रयोग सम्पन्न किया और ज्योंही प्रयोग पूरा हुआ, लक्ष्मी को पूर्ण शृंगार के साथ विश्वामित्र के सामने आने के लिए बाध्य होना ही पड़ा।

लक्ष्मी को देख कर विश्वामित्र ने हाथ नहीं जोड़े, प्रार्थना नहीं की, गिड़-गिड़ाये नहीं अपितु उसकी आंखों में आंखें डाल कर कहा—लक्ष्मी ! तुझे मेरे घर में आना होगा, यदि मुझमें ताकत है तो मैं जीवन भर तुझे अपने घर में रहने के लिए बाध्य कर दूंगा, क्योंकि तन्त्र की वजह से यह बाजी मेरे हाथ में है, तेरे हाथ में नहीं।

और इसके बाद लक्ष्मी ने स्थाई रूप से विश्वामित्र के आश्रम में निवास किया तथा पूर्ण समृद्धता, सम्पन्नता दी, इतिहास साक्षी है कि उस समय पूरे भारतवर्ष में सर्वाधिक सम्पन्न और सुखी आश्रम विश्वमित्र का ही था, जहां एक लाख शिष्य एक ही आश्रम में रहते थे और उनका जीवन निर्वाह विश्वामित्र के द्वारा ही होता था।

लक्ष्मी सपर्या विधि

यह तन्त्र की सर्वथा गोपनीय और आश्चर्यजनक विधि, अनुष्ठान है, जो

विश्वामित्र प्रणीत ग्रन्थ से उपलब्ध हुई है, इसका प्रयोग करने पर आश्चर्यजनक सफलताएं प्राप्त हुई हैं, अनुष्ठान सम्पन्न होने के बाद एक नहीं विभिन्न स्रोतों से धन का प्रवाह होने लगता है और साधक के जीवन में धन, यश, मान, पद, प्रतिष्ठा, वैभव, भवन, वाहन आदि की पूर्णता आ जाती है।

यद्यपि यह थोड़ी जटिल क्रिया है, पर सौम्य साधना है, अष्टगन्ध से भोज-पत्र पर विशेष यन्त्र उत्कीर्ण कर पूरे घेरे से चलते हुए यन्त्र के मध्य में लक्ष्मी को आबद्ध किया जाता है, प्रेमिका के रूप में लक्ष्मी को आबद्ध कर पूजन के द्वारा उसे स्थायित्व दिया जाता है।

यह विशेष अनुष्ठान दीपावली के पर्व पर ही सम्पन्न होता है, विशेष मुहूर्त में यन्त्र को लक्ष्मी सिक्त मन्त्र से आपूरित कर पूर्ण कुम्भ के द्वारा लक्ष्मी का आह्वान कर सपर्या कीलन के द्वारा उसे यन्त्र में स्थापित किया जाता है, और फिर हमेशा-हमेशा के लिए आबद्ध कर दिया जाता है, यह सारी विधि विशेष मन्त्रों के द्वारा विशेष क्रिया पद्धति एवं यन्त्र लेखन के द्वारा ही सम्भव होती है, साधक स्वयं भोज पत्र पर एक विशेष स्थान से लक्ष्मी को अष्टगन्ध के द्वारा उत्कीर्ण करता हुआ आबद्ध करता रहता है, इस प्रकार १०८ लक्ष्मी आबद्ध क्रिया सम्पन्न करता है, इसमें नित्य छः घण्टे लगते हैं, और तीन दिन में यह अनुष्ठान सम्पन्न हो जाता है।

पूजा सामग्री

सामान्यतः पूजन में जो सामग्री होती है, वह सामग्री पहले से ही तैयार करनी चाहिए, जिनमें— १-जलपात्र, २-गंगाजल, ३-दूध, ४-दही, ५-गोघृत, ६-शहद, ७-शक्कर, ८-पंचामृत, ९-चन्दन, १०-केसर, ११-चावल, १२-पुष्प एवं पुष्प मालाएं, १३-घर में बना हुआ मिष्ठान्न द्रव्य, १४-धूप, १५-दीप, १६-मौली, १७-नारियल, १८-सुपारी, १९-फल और २०-दक्षिणा।

इसकी तैयारी पहले से ही कर लेनी चाहिए, इसके साथ ही साथ विश्वामित्र के बताये अनुसार साधना सामग्री को भी पहले से ही तैयार करके रख देनी चाहिए।

साधना सामग्री

१-विश्वामित्र प्रणीत पद्मावती चित्र (जो महालक्ष्मी पद्धति से मन्त्रसिद्ध हो),

२-सियारसिंगी, ३-गोमती चक्र, ४-लघु शंख, ५-एकमुखी रुद्राक्ष, ६-सियली हत्थाजोड़ी, ७ कल्पवृक्ष वरद, ८-पद्मावती यन्त्र, ९-शतअष्टोत्तरी महालक्ष्मी सपर्या, १०-दुर्लभ विश्वामित्र चैतन्य, ११-महालक्ष्मी सिद्धि यन्त्र, १२-क्षीरोद्भुत कामधेनु विग्रह ।

विश्वामित्र ने कहा है कि शास्त्रोक्त रूप से महालक्ष्मी को आबद्ध करने के लिए और अपने घर में स्थायित्व देने के लिए साधक को इस प्रकार सामग्री एकत्र कर लेनी चाहिए साधक कहीं से भी इस प्रकार की सामग्री एकत्र कर सकते हैं ।

पद्मावती वरद

यदि साधकों के लिए इस प्रकार की सामग्री प्राप्त करना सुविधाजनक या सम्भव न हो तो आप निम्न पते पर सम्पर्क कर इसे प्राप्त कर सकते हैं—

" मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान " डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी,

जोधपुर-३४२००१ (राजस्थान)

यह सभी साधना सामग्री "महालक्ष्मी सपर्या साधना पैकेट" के रूप में उपलब्ध कराने की व्यवस्था कार्यालय ने की है साथ ही साधकों की विशेष सुविधाओं हेतु, इस महत्वपूर्ण एवं दुर्लभ सामग्रियों के पैकेट का रियायती न्यौछावर मात्र ६१५) रुपये ही रखा गया है ।

पूजा व्यवस्था

दीपावली के दिन पूजा गृह को स्वच्छ करें, द्वार पर कुंकुम से स्वस्तिक बनावें दरवाजे के दोनों ओर सम्भव हो तो केले के खम्भे रखें, और साधना द्वार को पुष्प मालाओं की वन्दनवार से सजाएं, उत्तर की ओर मुंह करते हुए सफेद आसन बिछाएं और सामने पूजन एवं साधना सामग्री को रख दें ।

साधक स्वयं या अपनी पत्नी और परिवार के साथ यह पूजा और साधना करे तो ज्यादा अनुकूल रहेगा ।

सबसे पहले भूमि पर स्वस्तिक बना कर उस पर तांबे के कलश को स्थापित करें, या पीतल अथवा मिट्टी के कलश को स्थापित कर सकते हैं, स्टील का प्रयोग न करें, फिर गन्ध, अक्षत, पुष्प से उस स्वस्तिक का पूजन करें ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अखण्ड-मण्डलाकारं विश्व व्याप्यं व्यवस्थितम् ।
त्रैलोक्य-मण्डितं येन मण्डलं तत् सदा शिवम् ।।

इसके बाद "फट्" शब्द का उच्चारण करते हुए कलश को धोकर उसे स्वस्तिक पर रखें, और उसमें शुद्ध जल भरें, यदि गंगाजल हो तो थोड़ा गंगाजल भी डालें।

ब्रह्माण्डोदर तीर्थानि करैः स्पृष्टानि ते रवे।
तेन सत्येन मे देवः तीर्थं देहि दिवाकर॥

फिर इसमें समस्त तीर्थों का आह्वान करें—

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वती।
नर्मदे सिन्धु कावेरी जलेऽस्मिन् सन्निधि कुरु॥

फिर इस कलश में थोड़े से चावल, सुपारी, सवा रुपया या दक्षिणा डालें, और इसमें पुष्प डाल कर पांच पीपल के पत्ते बिछा कर उस पर नारियल रखें।

नारियल पर पहले से ही लाल वस्त्र बांध दें या मौली लपेट दें इसके बाद नारियल नीचे रख कर, पूजन के समय रखी हुई सारी सामग्री पर उस कलश का जल छिड़कते हुए उसे पवित्र करें।

फिर उसके सामने बारह कुंकुम की बिन्दियां एक पंक्ति में लगावें और उस पर चावल की ढेरी बनावें, तथा उसकी पूजा करें—

१-ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं अविघ्नाय नमः। २-मं महालक्ष्म्यै नमः। ३-सं सरस्वत्यै नमः। ४-गं गणपतये नमः। ५-क्षीं क्षेत्रपालाय नमः। ६-वि विद्यायै नमः। ७-शं शंख-निधये नमः। ८-पं पद्म-निधये नमः। ९-ब्रां ब्राह्म्यै नमः। १०-हं माहेश्वर्यै नमः। ११-ॐ चामुण्डायै नमः। १२-ॐ विजयायै नमः।

इन बारह ढेरियों की पूजा कर गन्ध, अक्षत, पुष्प चढ़ा कर इनके सामने बारह तेल के दीपक लगावें, इसमें किसी भी प्रकार के तेल का प्रयोग किया जा सकता है।

इसके बाद भावना करते हुए कि मेरे सभी विघ्न दूर हों, हाथ में चावल लेकर अपने और अपने परिवार के ऊपर घुमाते हुए दसों दिशाओं की ओर फेंक दें।

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमि संस्थिता,
ये भूता विघ्न-कर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ।

फिर पृथ्वी की प्रार्थना करते हुए उसे गन्ध, पुष्प, अक्षत समर्पित करें और आसन पर केसर की बिन्दी लगावें ।

भूमि त्वया धृता लोका देवि, त्वं विष्णुना धृता ।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥

फिर अपने सामने गुरुदेव का चित्र रख कर 'ॐ गुं गुरुभ्यो नमः'' मन्त्र से गुरु पूजन करें, इसी प्रकार 'गं गणपतये नमः'' मन्त्र से गणपति का पूजन करें और सामने एक पात्र में आठ बिन्दियां कुंकुम की लगावें और उन बिन्दियों पर चावल की ढेरी बनावें तथा प्रत्येक ढेरी पर निम्न स्थापन करें—

१-वास्तु-पुरुषाय नमः, २-भद्रकाल्यै नमः, ३-भैरवाय नमः, ४-द्वां द्वार देवताभ्यो नमः, ५-रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा, ६-पवित्र यज्ञ भूमे हुं फट् स्वाहा, ७-श्रां श्रासु रेखे वज्र-रेखे हुं फट् स्वाहा, ८-श्रां आधार शक्त्यै नमः ॥

फिर इन सबकी यथोचित गन्ध, अक्षत, पुष्प से पूजा करें ।

इसके बाद अपनी चोटी को गांठ लगावें और तीन बार दाहिने हाथ में जल लेकर आचमन करें और फिर अपने पूरे शरीर पर हाथ फेरते हुए निम्न उच्चारण करें—

(क) मं मूल शृंगारकत् सुषुम्णा पथेन जीव-शिवं परम-शिव पदे योजयामि स्वाहा ।
(ख) यं संकोच-शरीरं शोषय शोषय स्वाहा ।
(ग) रं संकोच-शरीरं दह दह पच पच स्वाहा ।
(घ) वं परम-शिवामृत वर्षय वर्षय स्वाहा ।
(च) लं शाम्भव-शरीरं उत्पादयोत्पादय स्वाहा ।
(छ) रं हंसः सो हमवतरावतर शिव पदाज्जीवं सुषुम्णा-पथेन प्रविश मूल शृंगाटकमुल्लासोल्लस ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल हंसः सो हं स्वाहा ।

उपरोक्त मन्त्र शरीर का अमृतीकरण न्यास है, जिससे कि पूरा शरीर अमृतमय हो जाता है, और साधना में पूर्ण सिद्धि प्राप्त होती है।

इसके बाद जो महालक्ष्मी साधना के लिए बारह वस्तुएं लिखाई हैं, जिनको हमने "महालक्ष्मी सपर्या साधना पैकेट" नाम दिया है, उस सारी सामग्री को लकड़ी का पट्टा बिछा कर उस पर पीला वस्त्र बिछा कर बारह केसर की बिन्दियां लगावें और उन पर चावल की ढेरियां बनावें, फिर प्रत्येक चावल की ढेरी पर एक-एक वस्तु रख दें, उदाहरण के लिए पहली ढेरी पर सियारसिंगी, दूसरी ढेरी पर गोमतीचक्र आदि स्थापित कर दें, बारहवीं ढेरी के पास पद्मावती चित्र को स्थापित कर दें।

इसके बाद प्राणायाम करें, और तीन बार गायत्री मन्त्र का उच्चारण करें और हाथ में जल लेकर न्यास विनियोग करें

अस्य श्री मातृका-न्यासस्य ब्रह्मा ऋषि:। मातृका सरस्वती देवता। ह्रीं बीजानि। स्वरा: शक्तय:। अव्यक्तं कीलकं। श्री महालक्ष्मी पूजनांगत्वे न्यासे विनियोग:।

फिर ऋष्यादि न्यास करने के लिए अपने शरीर पर स्पर्श करता हुआ उच्चारण करे—

ब्रह्मा ऋषये नम: शिरसि। गायत्री छन्दसे नम: मुखे। मातृका-सरस्वती-देवतायै नम: हृदि। ह्रीं बीजेभ्यो नम: गुह्ये। स्वर शक्तिभ्यो नम: पादयो:। अव्यक्त कीलकाय नम: नाभौ। श्रीं महालक्ष्मी-पूजनांगत्वे न्यासे विनियोगाय नम: सर्वांगे।

इसके बाद गोपनीय करन्यास अंगन्यास करें—

	कर-न्यास	अंग-न्यास
ह्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नम:	हृदयाय नम:
श्रीं	तर्जनीभ्यां नम:	शिरसे स्वाहा
क्लीं	मध्यमाभ्यां नम:	शिखायै वषट्
ह्रौं	अनामिकाभ्यां नम:	कवचाय हुं

श्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः नेत्र त्रयाय वौषट्
क्लीं करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः अस्त्राय फट्

इसके बाद भगवती महालक्ष्मी पद्मावती का ध्यान करें—

कान्त्या कांचन-सन्निभां हिम-गिरि-प्रख्यैश्चतुर्भिर्गजै-
र्हस्तोत्क्षिप्तहिरण्मयामृत-घटैरासिच्यमानां श्रियम्।
विभ्राणां वरमब्ज युग्ममभयं हस्तैः किरीटोज्ज्वलाम्,
क्षौमाबद्ध-नितम्ब बिम्ब-लसितां वन्दे रविन्द-स्थित ॥

इसके बाद लकड़ी के पट्टे पर जो साधना के लिए १२ वस्तुएं रखी हैं, उनमें से प्रत्येक का पूजन करें, मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि प्रत्येक ढेरी और उस पर रखे हुए पदार्थ को जल, कुंकुम, केसर, अक्षत, पुष्प आदि से पूजन करें, तत्पश्चात् बाएं हाथ में जल लेकर केसर से रंग कर उन सब पर थोड़े-थोड़े चावल छिड़कते हुए उनकी प्राण प्रतिष्ठा करें।

प्राण प्रतिष्ठा

आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हों ॐ क्षं सं हंसः आवरण-सहिता महालक्ष्मी प्राणाः इह प्राणाः। आं ह्रीं महालक्ष्मी जीव इह स्थितः। आं ह्रीं महालक्ष्मी सर्वेन्द्रियाणि। आं ह्रीं महालक्ष्मी वाङ्मनश्चक्षु श्रोत्र-त्वक् जिह्वा-घ्राण पद प्राण इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठतु स्वाहा ॥

इसके बाद उन बारह पदार्थों के सामने दीप प्रज्वलित करें, दीप प्रज्वलित करते समय निम्न ढेरी के सामने निम्न प्रकार से उच्चारण करता हुआ, दीपक स्थापित करें—

१-पद्मावती चित्र-पद्मावत्यै नमः दीपं स्थापयामि।
२-सियारसिंगी-कालाग्नि रुद्राय नमः दीपं स्थापयामि।
३-गोमती चक्र-हेमपीठाय नमः दीपं स्थापयामि।
४-लघु शंख-क्षीर सिन्धवे नमः दीपं स्थापयामि।
५-एकमुखी रुद्राक्ष-ज्ञां ज्ञानाय नमः दीपं स्थापयामि।
६-त्रिधती हकीक-ऐं ऐश्वर्यै नमः दीपं स्थापयामि।

७ पद्मावती यन्त्र-पं पद्माय नमः दीपं स्थापयामि।
८-कल्पवृक्ष शंख-कं कल्पवृक्षाय नमः दीपं स्थापयामि।
९-शतअष्टोत्तरी लक्ष्मी सपर्या-मं मणि हर्म्याय नमः दीपं स्थापयामि।
१०-विश्वामित्र चैतन्य-वि विद्या तत्वाय नमः दीपं स्थापयामि।
११-महालक्ष्मी सिद्धि यन्त्र-श्रीं सिद्धलक्ष्म्यै नमः दीपं स्थापयामि।
१२-क्षीरोद्भुत कामधेनु विग्रह-कं कामधेन्वै नमः दीपं स्थापयामि।

इसके बाद इन सभी बारह दुर्लभ पदार्थों की सामूहिक पूजा करें, सामूहिक पूजा में जल से, गंगाजल से, पंचामृत से छींटे डालते हुए स्नान करावें और फिर केसर का तिलक करें, तत्पश्चात् उन पर अक्षत चढ़ावें और पुष्प समर्पित करें, और फिर इनके सामने रखे हुए सभी दीपक प्रज्वलित कर दें और सभी के सामने अलग-अलग अगरबत्ती लगावें, इसके बाद पद्मावती चित्र पर पुष्प का हार चढ़ावें और हाथ जोड़ कर निम्न उच्चारण करें—

क- अखण्डैक-रसानन्द करे पर सुधात्मनि।
स्वच्छन्द स्फुरणामत्र निधेह्यकुल रूपिणी॥

ख- अकुलस्थामृताकारे सिद्धि ज्ञान करे परे।
अमृतत्वं निधेह्यस्मिन् वस्तुनि क्लिन्न-रूपिणी॥

ग- तद् रूपिण्यैक रस्यं त्वं कृत्वाध्यें चित् स्वरूपिणी।
भूत्वा परामृताकारे मयि चित् स्फुरणं कुरु॥

घ- ॐ ऐं ह्रीं श्रीं जूं सः अमृते अमृतोद्भवे अमृतेश्वरि।
अमृत वर्षिणि अमृत स्रावय स्रावय स्वाहा॥

दिव्य पूजा

इसके बाद ताम्बूल खाकर अपने कपड़ों पर इत्र लगा कर हाथ में एक पुष्प लेकर देवी का आह्वान करें, पहले मूलाधार से ब्रह्मरन्ध्र तक व्याप्त सूक्ष्म शरीर वाली विद्युत पुंज जैसी दिव्य तेजोदण्ड स्वरूपिणी "परा चिति" की भावना करें, फिर हृदय में भगवती लक्ष्मी की भावना कर अपने सामने स्थित पद्मावती को सुषुम्ना मार्ग से उठा कर नासापुट से अपनी अंजली में स्थित पुष्प में ले कर आने की भावना करें।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीं महालक्ष्म्याः अमृत-चैतन्य मूर्ति नल्पयामि ।

यह मन्त्र उच्चारण करते हुए भगवती महालक्ष्मी का ध्यान करें, और उनके पास में ही बिन्दी लगा कर भगवान् श्री नारायण को प्रतिष्ठित करें, और उन दोनों की गन्ध, अक्षत, पुष्प आदि से पूजन करें ।

अमृतासव चषकं-कल्पामि नमः ।

इसके बाद भगवती पद्मावती को गन्ध, कुंकुम, अष्टगन्ध समर्पित करें और विविध प्रकार की पुष्प मालाएं पहिनाएं और सामने दशांग धूप प्रज्वलित करें तथा शुद्ध घृत का दीपक स्थापित कर माया (ह्रीं) बीज से जला कर गन्ध, पुष्प से दीपक की पूजा कर भगवती पद्मावती को दिखाएं ।

श्रीं महालक्ष्म्यै दीपं दर्शयामि नमः ।

इसके बाद भूमि पर कुंकुम से गोल घेरा बना कर उस पर नैवेद्य पात्र रखें और अपने घर में जो मिठाई और पकवान बनाये हैं, उन्हें सजा कर समर्पित करें—

चित् पात्रे सद्धवि सौम्य विविधानेक-भक्षणमु निवेदयामि ते देवि । मूल मध्ये मध्ये पानीयं समर्पयामि । उत्तरापोशन हस्त प्रक्षालनं मुख प्रक्षालनं पाद प्रक्षालनं-आचमनीयं-फलं-ताम्बूलं समर्पयामि ।

इसके बाद एक पात्र में अष्टगन्ध से अष्टदल कमल बना कर उसमें घृत की बारह बत्तियां लगावें और निम्न मन्त्र पढ़ते हुए गन्ध, पुष्प से उन बारह बत्तियों से युक्त आरती पूजा करें—

श्रीं ह्रीं ग्लूं स्लूं म्लूं प्लूं न्लूं ह्रीं श्री नव-रत्नेश्वरी नमः ।

इसके बाद यदि महालक्ष्मी की आरती स्मरण हो तो भक्ति भाव से भगवती महालक्ष्मी की आरती करें अथवा निम्न श्लोक पढ़ते हुए आरती सम्पन्न करें—

समस्त चक्र चक्रेशी युते देवि समुद्रजे ।
आरातिकमिदं तुभ्यं गृहाण हरि-वल्लभे ॥

इसके बाद घुटनों के बल भूमि पर बैठ कर भक्ति भाव से प्रणाम करें और आरती में जो बारह बत्तियां हैं, उस आरती को साधना के लिए जो लकड़ी के

बाजोट पर बारह प्रसाद के पदार्थ रखे हैं, उनके सामने आरती रख दें, तथा दोनों हाथों में पुष्प लेकर आरती के ऊपर से घुमा कर गोमती चक्र, सियारसिंगी आदि देवताओं पर वे पुष्प चढ़ा दें।

सविन्मये परे परामृत-चरू-प्रिये।
क्षीराब्धिजे देह्यनुज्ञा परिवारार्चनाय मे॥

इसके बाद इस बाजोट के पीछे गुरु चित्र एवं गुरु पादुका स्थापित करें, तत्वमुद्रा से प्रणाम करें और गन्ध, अक्षत, पुष्प से पूजन निम्न मन्त्रों से करें—

ऐं सिद्धौघेभ्यः परापर गुरुभ्यो नमः श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ऐं मानवौघेभ्यः अपर गुरुभ्यो नमः। ऐं शिवादि-स्व-गुरु-परम्परा श्रीपादुका ऐं (पादुकया) स्व-गुरु श्रीपादुका पूजयामि।

इसके बाद अपने जीवन की सारी समस्याओं और बाधाओं को समाप्त करने के लिए जमीन पर कुंकुम की तीन बिन्दियां लगावें और जो बारह गोमती चक्र आदि देवताओं के सामने प्रसाद या भोग अलग-अलग रखा हुआ था, उसको लेकर इन तीन बिन्दियों के सामने रख दें, और बलि निवेदन करें—

एह्येहि देवि-पुत्र बटुकनाथ कपिल-जटा-भार-भासुरत्रिनेत्र ज्वाला-मुखी, सर्व विघ्नान नाशय नाशय सर्वोपचार-सहितं बलि गृह्ण गृह्ण स्वाहा।

इसके बाद हाथ में जल लेकर पुष्पांजलि समर्पित करें।

बलिदानेन संतुष्टो बटुकः सर्व सिद्धिदः।
शान्ति करोतु मे नित्यं भूत-वेताल सेवितः॥

फिर योनि मुद्रा से समस्त योगिनियों को प्रणाम करें।

ऐं योगिनीभ्यः स्वाहा सर्व योगिनीभ्यां हुं फट् स्वाहा।

फिर हाथ में पुष्प लेकर और नैवेद्य लेकर योगिनियों को अर्थात् उन तीनों बिन्दियों के सामने समर्पित करें।

या काचिद् योगिनी रौद्र सौम्या घर तरा परा।
खेचरी भूचरी व्योमचरी प्रतास्तु मे सदा॥

इसके बाद एक अलग चावल की ढेरी बना कर उस पर दीपक लगावें और क्षेत्रपाल की भावना लाते हुए, कुंकुम, अक्षत, पुष्प से पूजा कर नैवेद्य चढ़ावें—

॥ क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षः हुं स्थान क्षेत्रपाल धूप दीप सहितं
बलि गृह्ण गृह्ण सर्वान् कमान् पूरय पूरय स्वाहा ॥

इसके बाद उस दीपक के सामने दोनों हाथों में पुष्प लेकर समर्पित करें।

योऽस्मिन् क्षेत्रे निवासी च क्षेत्रपालस्य किंकरः।
प्रीतो यं बलिदानेन सर्व-रक्षा करोतु मे ॥

इसके बाद पुनः अलग से सुपारी पर मौली लपेट कर उन्हें गणपति मान कर एक पात्र में स्वस्तिक का चिन्ह बना कर उस पर गणपति को स्थापित करें, और उसके सामने नैवेद्य समर्पित करें—

॥ गां गीं गूं गैं गौं गः गणपतये वर-वरद
सर्वजन मे वशमानय बलि गृह्ण गृह्ण स्वाहा ॥

इसके बाद गणपति को पुष्पांजलि देते हुए प्रणाम करें।

सर्वदा सर्व कार्याणि निर्विघ्नं साधय मम।
शान्ति करोतु मे नित्यं विघ्नराजः सशक्तिकः ॥

इसके बाद समस्त ग्रह, समस्त भूत, समस्त पितर, यक्ष, गन्धर्व, किन्नर आदि को नैवेद्य चढ़ाते हुए, बलिदान नैवेद्य समर्पित करें और हाथ में पुष्प लेकर प्रार्थना करें—

बलिदानेन सन्तुष्टा क्षमश्वं बलि देवता।
विहरन्तु यथा-सौख्यं यथेष्टा सुदिशासु च।
बटुकाद्याः सुराः सर्वे सर्व-सिद्धि-विधायि च।
मे शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिश्च सन्तु सतत्-प्रसादतः ॥

इसके बाद साधक सुवासिनी पूजन करे।

सुवासिनी पूजन

पहले से ही बुलाई हुई १६ से ३० वर्ष की आयु वाली सुहागन स्त्री या

स्वपत्नी (चाहे कितनी ही आयु की हो) को, जो स्नान किये हुए हो, और वस्त्र आभूषणों से सजी हुई प्रसन्न मुखी हो, बुला कर उसके पैर धोकर आसन पर बिठाएं तथा "महालक्ष्म्यै नमः" मन्त्र से उसकी गन्ध, अक्षत, पुष्प आदि से पूजा करें और उसे यथोचित सुन्दर वस्त्र आभूषण एवं द्रव्य प्रदान करें।

तत्पश्चात् उस सुवासिनी के हाथ में जल पात्र दें और वह सुवासिन भी गुरु पूजन कर उस पात्र को उठा कर थोड़ा सा जल पी ले जो कि अमृत पान कहा जाता है, इसके बाद सामने छोटा सा तांबे का यज्ञ कुण्ड स्थापित करें और यदि ऐसा यज्ञ कुण्ड न हो तो किसी थाली में यज्ञ करें, यों बाजार में छोटे से यज्ञ कुण्ड मिल जाते हैं।

वहीं आसन पर बैठे-बैठे ही यज्ञ कुण्ड में पति-पत्नी दोनों शुद्ध घृत की "ॐ महालक्ष्म्यै नमः" मन्त्र का उच्चारण करते हुए १०८ आहुतियां दें।

इसके बाद यदि गुरुदेव स्वयं उपस्थित हों तो उनका पूर्ण पूजन करें और यदि सशरीर उपस्थित न हों तो उनकी पादुकाओं का पूर्ण पूजन करें और गन्ध, अक्षत, पुष्प समर्पित करें।

इसके बाद "क्षमस्व" कह कर भगवती लक्ष्मी को जो नैवेद्य समर्पित किया था उसमें से कुछ नैवेद्य भक्षण करें और परिवार के अन्य सदस्यों को प्रदान करें।

इसके बाद हाथ में जल लेकर भगवती महालक्ष्मी पद्मावती से क्षमा याचना करते हुए, निम्न मन्त्र पढ़ कर जल छोड़ दें।

ॐ इतः पूर्वं प्राण देह धर्माधिकारतो. जाग्रत स्वप्न सुषुप्त्यवस्थासु कर्मणा वाचा मनसा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना यत्-स्मृत यदुक्तं यत् सर्वं श्री महालक्ष्म्यै नमः समर्पयामि मां मदीयं च सकलं श्री ब्रह्मार्पणमस्तु।

मन्त्र जप

इसके बाद साधक स्वयं उठ कर हाथ पैर धोकर मुंह को शुद्ध कर आसन पर बैठे और जो लकड़ी के बाजोट पर गोमती चक्र आदि द्वादश देवताओं महा-लक्ष्मियों की स्थापना की है, उसके सामने स्फटिक माला या कमलगट्टे की माला

से बारह माला मन्त्र जप करें—

मन्त्र

ॐ ह्रीं ह्रीं क्लीं क्लीं नानोपलक्ष्मी
श्री पद्मावती आगच्छ आगच्छ नमः ॥

मन्त्र जप करने के बाद कपूर से समस्त देवताओं और भगवती लक्ष्मी पद्मावती की आरती करें और आरती के ऊपर हाथ घुमा कर पूरे शरीर को स्पर्श करें—

महालक्ष्मी आरती

नीराजनं समानितं क्षीर सागर सम्भवे।
गृह्यता आरातिक देवी गरुड़ ध्वज भामिनी ॥

पुष्पांजलि

पुष्पांजलि गृहाणेमं पुरुषोत्तम वल्लभे।
भक्त्या समर्पित देवि सुप्रीता भव सर्वदा ॥

इसके बाद एक कटोरी में गुड़ और घी मिला कर देवताओं को उचित बलि दें, जिससे कि घर की सारी दरिद्रता, दुःख, अभाव और दैन्य समाप्त हो सके, उन द्वादश गोमती चक्र आदि के सामने यह उच्छिष्ट बलि पात्र रखते हुए यह उच्चारण करें—

ॐ ऐं नमः उच्छिष्ट-चाण्डालि मातंगि सर्वजन वशंकरि स्वाहा।

इसके बाद पुनः हाथ पैर धोकर सभी परिवार के साथ सुख पूर्वक भोजन करें और विहार करें।

दूसरे दिन सुबह पुनः दीपक जला कर महालक्ष्मी आरती करें, और गोमती चक्र आदि द्वादश महालक्ष्मी स्तव पूजा स्थान में ही स्थापित कर दें।

इस प्रकार यह प्रयोग और भगवती महालक्ष्मी पद्मावती पूजन संसार की सर्वश्रेष्ठ साधना एवं पूजा पद्धति है, जिसे दीपावली के अवसर पर प्रत्येक साधक को सम्पन्न करना ही चाहिए।

卐

जैन साहित्य में लक्ष्मी उपासन

जैन साहित्य में लक्ष्मी एवं लक्ष्मी उपासना का विशेष महत्व है व्यापार का आधार लक्ष्मी रहा है, और व्यापार में निरन्तर उन्नति, सुख-समृद्धि और सौभाग्य की वृद्धि के लिए लक्ष्मी उपासना एक श्रेष्ठ एवं शुभ कार्य है।

सिद्धि प्रयोग

इस प्रयोग में साधक प्रातःकाल स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर आसन पर बैठ जांय, इस बात का ध्यान रखें कि सिले हुए वस्त्र धारण न करें, मन्त्र जप से पूर्व किसी भी प्रकार का व्यसन न करें और यथा सम्भव निराहार रह कर यदि इस मन्त्र का जप करें तो निश्चय ही अनुकूलता प्राप्त होती है।

यह प्रयोग कोई भी कर सकता है, इसके लिए यह आवश्यक नहीं है, कि केवल जैन समाज या जैन धर्म में दीक्षित व्यक्ति ही कर सकता है, जो भी लक्ष्मी का उपासक है, वह इस मन्त्र का प्रयोग कर सकता है।

इसमें किसी भी प्रकार की माला का प्रयोग किया जा सकता है, साधक पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुंह करके बैठें, मन में क्रोध, लोभ, मोह आदि प्रवृत्तियों को न लावें, और महालक्ष्मी का ध्यान कर निम्नलिखित मन्त्र का केवल ग्यारहूर बार नित्य उच्चारण करें तो निश्चय ही साधक के जीवन में समस्त प्रकार से सिद्धि प्राप्त होती है।

इस प्रकार यह प्रयोग चालीस दिन का है, और यदि अनुष्ठान के रूप में इस प्रयोग को करना है तो किसी भी शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से यह प्रयोग कि

जा सकता है।

अनुष्ठान समाप्त करने के बाद पांच कुमारी कन्याओं को भोजन करावें और उन्हें वस्त्र आदि दें, ऐसा करने पर साधक के मन में जो इच्छा होती है, वह अवश्य ही पूर्ण होती है।

यदि कोई भी व्यक्ति प्रातःकाल केवल एक बार इस मन्त्र का उच्चारण कर लेता है तब भी उसके जीवन में समस्त प्रकार से अनुकूलता प्राप्त होती है।

मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं संपत्प्रदेत श्री धारेसुधारे सुधाधारे सुखे सुखरूपे सुखदे रुचिरप्रभे रुचिरकान्ते चिरवर्णे रुचिरलेश्ये रुचिरध्वजे सिद्धे सिद्धिरूपे सिद्धिधरे सिद्धदे, पूर्णे पूर्णरूपे, पूर्णप्रभे, सूर्यकान्ते सूर्यवर्णे सूर्यलेश्ये, पद्मे पद्मरूपे पद्मवर्णे पद्मलेश्ये, शुक्ले शुक्लरूपे शुक्लवर्णे शुक्ललेश्ये, इष्टे इष्टरूपे इष्टदे, कान्ते कान्तरूपे कान्तदे, प्रिये प्रियरूपे प्रियदे, मनोज्ञे मनोज्ञरूपे मनोज्ञदे, सौम्य सौम्यरूपे सौम्यदे, शुभे शुभरूपे शुभदे, सुभगे सुभगरूपे सुभगदे, ततमे तितिमे तुतुमे, थथमे थिथिमे थुथुमे, ददमे दिदिमे दुदुमे, घघमे घिघिमे घुघुमे, ककमे किकिमे कुकुमे, खखमे खिखिमे खुखुमे, ई एं एं एं रक्ष रक्ष मां सर्व ममाधीनं च सर्व विघ्नतः।

卐

व्यापार बाधा दूर करने का प्रयोग

यह प्रयोग किसी भी बुधवार से प्रारम्भ कर सकते हैं, इसके लिए मन्त्र सिद्ध प्राण चैतन्य सियारसिंगी, सौ ग्राम सिन्दूर, तेल का दीपक, लोबान धूप, हकीक माला, सफेद ऊनी आसन होना चाहिए। सर्वप्रथम सामने सौ ग्राम सिन्दूर रख कर उस पर सियारसिंगी रख दें, फिर उसके सामने हकीक माला से निम्न मन्त्र का इक्कीस माला जाप करें—

ॐ आकर्षय स्वाहा।

मन्त्र जाप पूरा होने पर अपनी दुकान या प्रतिष्ठान के सामने इस सियारसिंगी को सिन्दूर के साथ गाड़ दें तो व्यापार में जो भी बाधा पहुंचाने वाले हैं या कष्ट दे रहे हों तो वह शान्त हो जाता है और वशीभूत होकर सहायक हो जाता है।

एकाक्षी नारियल पर मेरे सिद्ध सफल प्रयोग

स्वामी विश्वेश्वरानन्द योगियों में श्रेष्ठ और तांत्रिकों में आदरणीय व्यक्तित्व माने जाते हैं. इन्होंने अपने व्यक्तित्व का इतना अधिक विकास किया है, कि कुछ वर्षों तक ये संसार दुर्लभ सिद्धाश्रम में भी स्थान पा चुके हैं, इन्होंने अपने जीवन में मानव जाति को सुखी एवं सम्पन्न बनाने का संकल्प लिया है, और इन्होंने अपने जीवन में अनुभवगम्य प्रयोग गोपनीय न रखते हुए सार्वजनिक रूप से प्रगट किये हैं, इनका एक दुर्लभ लेख पाठकों के लिए प्रस्तुत है—

एकाक्षी नारियल लक्ष्मी का साक्षात् स्वरूप माना गया है, यों तो नारियल आसानी से बाजार में उपलब्ध हो जाते हैं, परन्तु अधिकतर नारियलों में दो बिन्दु स्पष्ट दिखाई देते हैं, जो कि दो आंखों की तरह होते हैं, परन्तु बहुत ही कम ऐसे नारियल भी देखने को मिल जाते हैं, जिनमें दो बिन्दुओं के स्थान पर एक ही बिन्दु दिखाई देता है, और ऐसे ही नारियल दुर्लभ माने गये हैं।

तांत्रिक ग्रन्थों में कहा गया है, कि वह गृहस्थ सौभाग्यशाली है, जिसके घर में एकाक्षी नारियल है, लक्ष्मी सूक्त (याज्ञवल्क्याचार्य) में कहा गया है, कि संसार में सब कुछ सुलभ है, परन्तु एकाक्षी नारियल सामान्यत: सुलभ नहीं है. 'विष्णु पुराण' में बताया गया है, कि जिसके घर में एकाक्षी नारियल है, उसके घर में स्थायी रूप से अटूट लक्ष्मी का वास बना रहता है, संसार प्रसिद्ध तांत्रिकाचार्य त्रिजटा अघोरी का मत है, कि दीपावली के अवसर पर जो व्यक्ति लक्ष्मी की मूर्ति के सामने एकाक्षी नारियल रख कर उसकी पूजा करता है उसके जीवन में भौतिक दृष्टि से अभाव रहना सम्भव ही नहीं है।

दुर्लभं स्फटिकं हारं दुर्लभं पारदं शिवं।
दुर्लभो वपु एकाक्षी नारियलश्च दुर्लभम्॥

अर्थात् संसार में तीन वस्तुएं अत्यन्त दुर्लभ हैं, जिनमें स्फटिक मणियों की माला, पारद शिवलिंग तथा एकाक्षी नारियल हैं, संसार में मनुष्य के पास लाखों रुपये हो सकते हैं, सम्मान और यश हो सकता है, परन्तु इतनी दुर्लभ चीजों का संग्रहकर्ता तो बिरला ही होता है,

स्वामी विशुद्धानन्द जी ने एक बार कहा था, कि व्यक्ति का जीवन चाहे कितना ही कलुषित हो, उसका भाग्य चाहे कितना ही मन्द हो, परन्तु यदि उसके घर में एकाक्षी नारियल आ जाता है, तो उसके जीवन में अनायास ही वैभव, सम्पदा, यश, सम्मान, प्रतिष्ठा और भौतिक सुख प्राप्त होने लगते हैं।

अपने घर में एकाक्षी नारियल स्थापित करने से पूर्व इस बात की जांच कर लेनी चाहिए कि यह नारियल असली हो, क्योंकि बाजार में नकली नारियल भी प्राप्त होते हैं, कुछ घुमक्कड़ साधु नारियल पर सिन्दूर लगाकर पूजा के समान दिखाई देने वाला नारियल बना देते हैं, जिससे नारियल की पहिचान नहीं होती कि यह एकाक्षी नारियल है या नहीं, क्योंकि सिन्दूर के लेप के नीचे आंख ढक जाती है, कुछ साधु नारियल पर चांदी का वर्क चढ़ा देते हैं, इसके अलावा कुछ नारियल नारी जाति के होते हैं, जो कि एकाक्षी होते हुए भी त्याज्य होते हैं, अतः भली प्रकार से जांच कर नर जाति का एकाक्षी नारियल ही अपने घर में स्थापित करना चाहिए।

इसके साथ ही साथ नर जाति का एकाक्षी नारियल मन्त्र चैतन्य होना चाहिए और प्राण संजीवनी क्रिया से सिक्त होना चाहिए जिससे कि वह पूरा-पूरा लाभ दे सके, वस्तुतः शास्त्रों में और तांत्रिक ग्रन्थों में जो दुर्लभ एकाक्षी नारियल की महिमा है वह नर जाति के एकाक्षी नारियल की है, ऐसा नारियल सौभाग्यशाली व्यक्ति ही अपने घर में रखने में समर्थ हो पाते हैं।

एकाक्षी नारियल के लाभ—

यदि इस पर प्रयोग न किये जांय और केवल मात्र मन्त्रसिद्ध प्राण संजीवनी क्रिया सिक्त एकाक्षी नारियल ही घर में हो तो उसमें कई लाभ हैं, प्रसिद्ध तांत्रिक ग्रन्थ 'रुद्रयामल तन्त्र' में इसके निम्नलिखित लाभ बताये गये हैं—

१— ऐसा नारियल स्थाई सम्पत्ति देने में सहायक होता है।

२— एकाक्षी नारियल गर्भवती महिलाओं को सुंघाने मात्र से बिना कष्ट के बच्चा हो जाता है।

३— जिस घर में यह नारियल होता है, उसके घर में किसी प्रकार का कोई तांत्रिक प्रभाव नहीं हो पाता।

४— यदि किसी स्त्री के सन्तान नहीं हो रही हो, तो ऋतु-स्नान के बाद यह नारियल पानी में घोल कर उसे वह पानी पिला दें तो उसे सन्तान होने की सम्भावनाएं बढ़ जाती हैं।

५— यदि किसी व्यक्ति या स्त्री पर भूत-प्रेत का प्रभाव हो तो उसकी गोदी में ऐसा नारियल रखते ही वह भूत-प्रेत बाधा से मुक्त हो जाती है।

६— यदि घर में भूत-प्रेत का उपद्रव हो तो पानी में सात बार यह नारियल डुबो कर वह पानी पूरे घर में छिड़क दें तो घर से भूत-प्रेत उपद्रव समाप्त हो जाता है।

७— यदि मुकदमे में सफलता प्राप्त करनी हो तो रविवार के दिन इस पर अपने विरोधी का नाम लेकर लाल कनेर का फूल रख दें, और जिस दिन न्यायालय में जाना हो उस दिन वह फूल अपने साथ लेकर जावें तो सारी स्थिति अपने अनुकूल हो जाती है।

८— यदि कोई शत्रु परेशान कर रहा हो तो लाल कनेर का फूल मंगलवार के दिन इस पर रख दें और स्वयं अपने सामने इसे रख कर दक्षिण दिशा की तरफ मुंह करके सात बार शत्रु का नाम उच्चारण करें, इस प्रकार नित्य करें और अगले मंगलवार को वह फूल उठाकर दक्षिण दिशा का तरफ फेंक दें तो शत्रु नाश या शत्रु परास्त होता है।

९— जिसको वश में करना हो उसका नाम अष्टगन्ध से इस नारियल पर लिख दें तो एक सप्ताह के भीतर-भीतर वह पुरुष या स्त्री वश में हो जाती है, और आगे जीवन भर उसके कहने के अनुसार कार्य करती है।

१०— जहां ऐसा नारियल होता है, उस पर चन्दन तथा कुंकुम मिला कर उसका तिलक अपने ललाट पर लगा कर व्यक्ति जहां भी जाता है, वहां उसे सफलता ही मिलती है।

११— जिस घर में ऐसा नारियल होता है, वहां स्वयं भगवान वास करते है, लक्ष्मी आती है, रोग, शोक, मोह का नाश होता है। प्रतिष्ठा बढ़ती है, राज्य और समाज में सम्मान प्राप्त होता है तथा व्यापार में लाभ होता है।

इस बात का ध्यान रखें कि मात्र बाजार में बिकने वाला नारियल फल देने में सहायक नहीं होता है, यह तभी सहायक होता है, जब वह मन्त्रसिद्ध तथा प्राण चैतन्य हो।

प्रथम प्रयोग

यह प्रयोग कभी भी किया जा सकता है, पांच दिनों में यह प्रयोग समाप्त हो जाता है।

साधक को चाहिए कि वह प्रातः स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर अपने सामने किसी थाली में कुंकुंम से स्वस्तिक बनाकर उस पर नारियल रख दें और इसकी सामान्य पूजा करें, सामने अगरबत्ती व दीपक लगा लें तथा मन्त्र सिद्ध 'कमलगट्टे की माला' से निम्नलिखित मन्त्र की इक्यावन माला जप करें—

मन्त्र

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं महालक्ष्मी स्वरूपाय एकाक्षिनालिकेराय
नमः सर्व सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा ।।

इस प्रकार पांच दिन तक यह प्रयोग करें तो कुछ ही समय में निश्चित रूप से वह ऋण मुक्त हो जाता है, व्यापार में श्रेष्ठ सफलता मिलने लग जाती है, आर्थिक दृष्टि से वह आश्चर्यजनक रूप से सफलता प्राप्त करने लग जाता है।

द्वितीय प्रयोग

यह प्रयोग किसी भी शुक्रवार से प्रारम्भ किया जा सकता है, प्रातः स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर अपने सामने थाली में एकाक्षी नारियल रख दें और दूध से स्नान करावें फिर शुद्ध जल से धोकर उसे पुनः दूसरी थाली में स्थापित कर दें और उस पर चन्दन, अक्षत, पुष्प आदि चढ़ा कर इसकी पूजा करें।

इसके बाद मन्त्र सिद्ध 'कमलगट्टे की माला' से निम्न मन्त्र की नित्य इक्कीस मालाएं फेरें।

मन्त्र

ॐ ऐं ह्रीं ऐं ह्रीं श्रीं अक्षय कुबेराय
प्राप्त्यर्थं एकाक्षिनालिकेराय नमः ॥

यह ग्यारह दिन का प्रयोग है, प्रयोग समाप्ति पर स्वयं लक्ष्मी दर्शन देती है, और उसके जीवन में चतुर्मुखी उन्नति देने में सहायक होती है।

तृतीय प्रयोग

शनिवार की शाम को इस नारियल को कांसी की थाली में स्थापित करें और इसके सामने तेल का दीपक लगा कर इसे आमन्त्रित करें कि 'हे एकाक्षी नारियल आप मेरा कार्य सिद्ध करें'।

इसके बाद दूसरे दिन प्रातः सूर्योदय के समय थाली में एकाक्षी नारियल को स्थापित कर उसे दूध और फिर जल से स्नान करा कर उस पर कुंकुम से त्रिशूल बनावें और उसकी पूजा करें, इसके बाद इक्कीस दिन तक नित्य ग्यारह माला निम्न मन्त्र का जप करें—

मन्त्र

ॐ नर एकाक्षी नालिकेराय मम कार्यं
शीघ्र सिद्धय कुरु कुरु स्वाहा ॥

卐

दरिद्रता निवारण प्रयोग

यह प्रयोग किसी भी सोमवार को प्रारम्भ कर सकते हैं, इसके लिए मन्त्र चैतन्य प्राण प्रतिष्ठा युक्त नर्मदेश्वर शिवलिंग, रुद्राक्ष माला, सफेद रंग का आसन, बिल्व पत्र तथा शुद्ध घृत का दीपक होना चाहिए, निम्न मन्त्र की प्रतिदिन ग्यारह माला आठ दिन तक जप करें —

ॐ ह्रीं दारिद्रय दहन महादेवाय नमः।

किसी पात्र में नर्मदेश्वर शिवलिंग को स्थापित कर उनकी पूजा कर बिल्व-पत्र चढ़ा दें। मन्त्र जाप पूर्ण होने पर रुद्राक्ष माला को अपने गले में धारण कर लें। ऐसा करने से पीढ़ियों से संचित दरिद्रता की समाप्ति हो जाती है।

दक्षिणावर्ती शंख कल्प प्रयोग

यों तो संसार में खास तौर से भारतवर्ष के मन्त्र शास्त्र और तांत्रिक ग्रंथों में लक्ष्मी प्राप्ति से सम्बन्धित सैकड़ों प्रयोग हैं, जिनमें श्रीयन्त्र, कनकधारा प्रयोग और अन्य छोटे-मोटे प्रयोग हैं, परन्तु विश्व का अद्वितीय धनदायक प्रयोग दक्षिणावर्ती शंख कल्प प्रयोग ही है, जिसकी तुलना हो ही नहीं सकती।

दक्षिणावर्ती शंख

भगवती लक्ष्मी का जन्म समुद्र में हुआ था, जब समुद्र मन्थन हुआ, तो उसमें से चौदह रत्न निकले, उनमें से एक भगवती लक्ष्मी और दूसरा पांचजन्य शंख भी था इसीलिए इस दक्षिणावर्ती शंख को लक्ष्मी का सहोदर माना गया है।

जब देवताओं में से किसी एक को कोषाध्यक्ष बनाने का निश्चय किया गया और इसके लिए छः महीने की अवधि दी गई तो कुबेर नाम के देवता ने क्षीर सागर में जाकर भगवान विष्णु और लक्ष्मी की शरण ली, और कहा-"मुझे आप कोई ऐसी विधि बताइये जिससे मैं अद्वितीय ऐश्वर्य सम्पन्न हो कर देवताओं का कोषाध्यक्ष बन सकूं।

तब लक्ष्मी ने रहस्यमय तरीके से स्पष्ट किया कि केवल मात्र मेरे अनुज "शंख" का प्रयोग करने से ही, तुम अपने मनोरथ में सफलता पा सकते हो, शंख मात्र शंख ही नहीं है, अपितु उसे "रत्न गर्भा" कहा गया है, अतः उसका विधि-वत पूजन कर यदि "दक्षिणावर्ती शंख कल्प" सम्पन्न करे तो मुझे उस घर में अविचल भाव से आना ही पड़ेगा और स्थाई रूप से रहना ही पड़ेगा।

दक्षिणावर्ती शंख कल्प : कुछ विचार

भारतवर्ष के तन्त्र और मन्त्र ग्रन्थों में दक्षिणावर्ती शंख प्रयोग भरे पड़े हैं। परन्तु अभी तक दक्षिणावर्ती शंख कल्प प्रयोग लगभग गोपनीय ही रहा है, यद्यपि इसके बारे में प्रसिद्ध महत्वपूर्ण ग्रन्थों में उल्लेख आया है, कुछ विचार मैं आगे की पंक्तियों में स्पष्ट कर रहा हूं।

१— लक्ष्मी को प्राप्त करना और उसे स्थायी रूप से घर में निवास देने का एक मात्र प्रयोग दक्षिणावर्ती शंख प्रयोग ही है जो कि अपने आप में आश्चर्यजनक रूप से धन देने में समर्थ है, इसके माध्यम से ऋण, दरिद्रता और अभाव मिट जाता है, तथा सभी दृष्टियों से पूर्णता और सम्पन्नता आ जाती है।

—महर्षि पुलस्त्य–"पुलस्त्य संहिता" से

२— यों तो मैंने अपने जीवन में लक्ष्मी से सम्बन्धित सभी प्रयोग सम्पन्न किये हैं पर दक्षिणावर्ती शंख कल्प प्रयोग आश्चर्यजनक रूप से सफलता दायक है, अपने आप में अद्वितीय है, धन वर्षा करने और सुख समृद्धि प्रदान करने में उसकी कोई तुलना नहीं है।

—महर्षि विश्वामित्र 'विश्वामित्र संहिता" से

३— दक्षिणावर्ती शंख कल्प प्रयोग सभी प्रकार से दरिद्रता, दु:ख, दैन्य और अभाव को मिटाने में समर्थ है, यह अपने जीवन में आश्चर्यजनक रूप से धन प्रदान करने और पूर्ण सफलता देने में समर्थ है, यह एक मात्र प्रयोग है जो आश्चर्यजनक रूप से सफलता प्रदान करता है।

—"लक्ष्मी संहिता" से

४— भगवती लक्ष्मी के सभी प्रयोगों में दक्षिणावर्ती शंख प्रयोग ही प्रामाणिक और धन वर्षा करने में समर्थ है, यह प्रयोग उज्ज्वल रत्नों का सागर है।

—महर्षि मार्कण्डेय

५— यदि दक्षिणावर्ती शंख कल्प मिल जाय और फिर भी व्यक्ति इस प्रयोग को सम्पन्न नहीं करे तो वह वास्तव में अभागा ही कहा जायेगा, यह तो जीवन का सौभाग्य है, सत्कर्मों का उदय है, लक्ष्मी प्राप्ति का सर्वोत्तम उपाय है।

—भगवत्पाद शंकराचार्य

६— दक्षिणावर्ती शंख कल्प प्रयोग श्रेष्ठ तांत्रिक प्रयोग है, जिसका प्रभाव

तुरन्त और अचूक होता है, मैंने इस प्रयोग को किया है और अपने शिष्यों को सम्पन्न करवाया है, हर बार मुझे इसके द्वारा सफलता ही मिली है।

—गुरु गोरखनाथ "गोरक्ष संहिता" से

ऊपर मैंने कुछ श्रेष्ठ महर्षियों के प्रामाणिक उदाहरण प्रस्तुत किये हैं और इनके माध्यम से यह स्पष्ट हो जाता है कि वास्तव में ही दक्षिणावर्ती शंख कल्प प्रयोग कितना अद्भुत है, आश्चर्यजनक है, सिद्धिदायक है।

सर्वथा गोपनीय

हमारा उद्देश्य यह भी रहा है कि जो गोपनीय विद्याएं हैं या जो विद्याएं लुप्त हो चुकी हैं अथवा अप्राप्य हैं, उनको खोज कर निकाली जाय, उन्हें प्रकाशित किया जाय और पाठकों तथा साधकों को बताई जाय, दक्षिणावर्ती शंख कल्प प्रयोग अपने आप में श्रेष्ठतम प्रयोग है और लक्ष्मी से सम्बन्धित इससे उच्चकोटि का और कोई प्रयोग नहीं है, कई वर्षों से हम इस प्रयत्न में थे कि कहीं से भी यह प्रयोग प्राप्त हो जाय तो हम अपने पाठकों को प्रदान कर सकें।

इसके लिए कई स्थानों पर इसकी खोज की गयी, यहां तक कि नेपाल के तांत्रिक ग्रन्थागारों में भी इस प्रयोग को ढूंढने का प्रयास किया गया परन्तु प्रामाणिक रूप से प्राप्त नहीं हो सका, पिछले दिनों सिद्धाश्रम के सम्माननीय योगी स्वामी सुखदेवानन्द जी के पास से हस्त लिखित पुस्तक प्राप्त हुई जिसमें दक्षिणावर्ती शंख कल्प प्रयोग प्रामाणिक रूप से लिखित था, उनकी कृपा से हमें इस प्रयोग की प्रतिलिपि करने का अवसर भी मिला और यह हमें प्रसन्नता है कि हम इस प्रयोग को इस पुस्तक के माध्यम से पाठकों और साधकों को प्रदान कर रहे हैं, मुझे विश्वास है कि साधक इसे सम्पन्न कर जन्म-जन्म की दरिद्रता, दुःख, दैन्य, अभाव, कष्ट और ऋण को हमेशा-हमेशा के लिए मिटा सकेंगे, अपने घर में स्थायी रूप से लक्ष्मी का निवास दे सकेंगे, और जीवन में पूर्ण ऐश्वर्य प्राप्त करने में सफल हो सकेंगे।

और यह प्रयोग

राजा भोज के समय में महाकवि भारवि उच्चकोटि के विद्वान और कवि होते हुए भी सर्वथा निर्धन और दरिद्र थे, ऐसा लगता था कि जैसे दरिद्रता ने हमेशा-हमेशा के लिए उनके घर में निवास कर लिया हो, बड़ी कठिनाई से वे अपना और अपने बच्चों का भरण-पोषण कर पाते थे।

एक दिन उन्होंने आत्महत्या करने का निश्चय कर लिया, उन्होंने सोचा कि कर्जदार व्यक्ति नित्य सुबह पैदा होता है और नित्य शाम को उसे मरना पड़ता है, दिन को मांगने वालों की गालियां, फटकार और अपमान सहना पड़ता है तथा शाम को अपने बच्चों के उदास चेहरों को देख कर मृतक तुल्य जीवन बन जाता है, ऐसी स्थिति में जिन्दा रहने से क्या लाभ, ज्यादा तो अच्छा यही होगा कि इस शरीर को ही समाप्त कर दिया जाय और ऐसा सोच कर वह अपने घर से निकल पड़े।

जब वे शिप्रा नदी के उस पार जाकर मरने का और नदी में डूब कर समाप्त होने का निश्चय किया तभी सामने शतानन्द नाम के योगी आते हुए दिखाई दिये, उन्होंने योग बल से सब कुछ जान लिया था, बोले भारवि, तुम आत्महत्या जैसा घटिया कार्य करने क्यों जा रहे हो ?

भारवि ने उत्तर दिया महामुने ! दरिद्रता जीवन का सबसे बड़ा अभिशाप है, मैं इस प्रकार कर्ज के भार से दब कर बच्चों को दुखी देखता हुआ समाज के लोगों का अपमान और तिरस्कार सहन करता हुआ जीवित नहीं रहना चाहता, ऐसी जिन्दगी से तो मौत ही अच्छी।

शतानन्द ने कहा–भारवि ! तुम अपने पिछले कर्मों के दोष भुगत रहे हो, उन जन्मों में किये गये पापों की वजह से तुम ऐसा अभाव और दरिद्रता हो रहे हो, जब तक वे दोष समाप्त नहीं हो जाते तब तक तुम्हें ऐसा ही अपमान भरा जीवन व्यतीत करने के लिए बाध्य होना पड़ेगा।

भारवि ने पूछा–"क्या पूर्व जन्म के दोषों को समाप्त करने का कोई उपाय नहीं है, क्या दरिद्रता निवारण का कोई हल नहीं है, क्या कोई ऐसी युक्ति तरीका या साधना नहीं है जिसके द्वारा मैं अपने जीवन की दरिद्रता समाप्त कर सकूं और सम्पत्तिवान बन सकूं"।

शतानन्द ने एक क्षण भारवि की ओर देखा और बोले—कवि, तुम मेरे पीछे-पीछे चलो।

और वे दोनों एक मन्दिर में पहुंचे जहां योगी शतानन्द का निवास था, वहां पर उन्होंने भारवि को दक्षिणावर्ती शंख कल्प प्रयोग सम्पन्न कराया और कहा "इससे तुम्हें दो लाभ हुए हैं, एक तो तुम्हारे पिछले सभी जन्मों के पाप और दोष कट गये हैं, और दूसरे अब तुम इस कल्प के प्रभाव से ऐश्वर्यवान बन

सकोगे" और ऐसा कह कर योगीराज भारवि को उसके घर विदा कर दिया।

इतिहास साक्षी है कि इस कल्प के प्रभाव से चार महीनों के भीतर-भीतर महाकवि भारवि सम्माननीय और ऐश्वर्यवान बन गये, चारों तरफ उनका यश फैलने लगा और धन वर्षा सी होने लगी, साल दो साल के भीतर वे अवन्ति राज्य के सर्वाधिक धनी व्यक्ति बन गये, एक बार तो राजा भोज को भी भारवि से कुछ धन की याचना करनी पड़ी।

इतिहास साक्षी है कि इस कल्प के प्रभाव से एक दरिद्री अकिंचन व्यक्ति इतना अधिक सम्पत्तिवान और ऐश्वर्यवान बन गया कि राजा भी उससे अपने राज्य संगठन के लिए धन की याचना करने लगा, वास्तव में ही भारवि का शेष जीवन पर्यन्त सम्पन्न, ऐश्वर्यवान और यशस्वी के रूप में व्यतीत हुआ।

और यह गोपनीय प्रयोग

यह प्रयोग त्रयोदशी को सम्पन्न होता है जो कि हर माह की अमावस्या के एक या दो दिन पूर्व आती है, इसी दिन इस प्रयोग को सम्पन्न करना चाहिए, यह एक दिन का प्रयोग है, तथा अपने आप में अद्वितीय और महत्वपूर्ण है, इस प्रयोग को पुरुष या स्त्री कोई भी सम्पन्न कर सकता है।

सामग्री

इस प्रयोग के लिए महत्वपूर्ण सामग्री तो दक्षिणावर्ती शंख ही है, जो कि लगभग दस तोले से पच्चीस तोले के बीच वजन का हो, इसका रंग सफेद हो, और दक्षिण की ओर अथवा दाहिनी ओर मुंह खुला हो, ऐसा ही शंख उत्तम माना जाता है साथ ही साथ "अष्टोत्तर लक्ष्मी प्रयोग से सम्पन्न एवं अष्टलक्ष्मी मन्त्र सिद्ध दरिद्रता निवारण प्राण प्रतिष्ठा युक्त" हो, ऐसे शंख को इस प्रयोग के लिए उत्तम माना गया है। यह शंख आप कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं; पर यह ध्यान रखें कि शंख प्रामाणिक हो और विशेष मन्त्रों से सिद्ध हो, ऊपर जो मन्त्र सिद्धता मैंने बताई है, ऐसे ही मन्त्रों से सिद्ध दक्षिणावर्ती शंख इस कल्प के लिए प्रयोग में लाया जा सकता है।

यदि आपके घर में कोई दक्षिणावर्ती शंख हो और यदि उपरोक्त प्रयोगों से सिद्ध नहीं है तो उस पर किया गया "कल्प" अपने आप में निष्फल और प्रभावहीन हो जाता है।

अपने पाठकों और साधकों के लिए "मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान" कार्यालय ने ऐसे शंखों की व्यवस्था की है, सामान्य रूप से भी दक्षिणावर्ती शंख दुर्लभ और मूल्यवान होते हैं और फिर पंडितों से उन पर ऐसे प्रयोग सम्पन्न करवाने पर तो यह शंख अत्यधिक मूल्यवान हो जाता है, फिर भी हमने वास्तविक लागत के आधार पर ही इस शंख को प्रदान करने की व्यवस्था की है, इसके लिए आप निम्न पते पर सम्पर्क कर विशेष जानकारी तथा यह दुर्लभ शंख प्राप्त कर सकते हैं—

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कालोनी,
जोधपुर-३४२००१ (राजस्थान)

साधना प्रयोग

त्रयोदशी को प्रातःकाल उठकर स्नान कर शुद्ध सफेद वस्त्र धारण करें, और सामने पहले से ही अगरबत्ती, शुद्ध घी का दीपक, कुंकुम, केसर, चावल, जल पात्र आदि की व्यवस्था कर लें, फिर इस शंख को पहले कच्चे दूध से धोवें और फिर जल से शंख को स्नान करावें, फिर शंख के ऊपर चांदी का वर्क (जैसा मिठाई पर वर्क लगाते हैं) लगावें और फिर शंख पर केसर से "श्री" अक्षर लिखें, फिर शंख का निम्न मन्त्र से पूजन करें।

मन्त्र पूजन

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीधर करस्थायपयोनिधि जाताय श्री दक्षिणावर्त्त शंखाय ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीकराय पूज्याय नमः।

शंख पर कुंकुम अक्षत, इत्र आदि इसी मन्त्र से चढ़ावें और फिर शंख को चांदी या तांबे के बर्तन में स्थापित करें, सामने दूध का बना हुआ प्रसाद भोग के रूप में लगावें और फिर कपूर से आरती करें, इसके बाद दोनों हाथ जोड़ कर दक्षिणावर्ती शंख का ध्यान करें।

ध्यान मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीधर करस्थाय पयोनिधि जाताय लक्ष्मी सहोदराय चिन्तियार्थ संपादकाय श्री दक्षिणावर्त्त शंखाय श्री कराय, पूज्याय क्लीं श्रीं ॐ नमः सर्वाभरण भूषिताय प्रशस्यायंगोपाङ्गसंयुताम

कल्पवृक्षाय स्थिताय कामधेनु चिन्तामणिनव निधिरूपाय चतुर्दश रत्न परिवृताय अष्टादश महासिद्धि सहिताय श्रीलक्ष्मी देवता श्रीकृष्णदेव करतल लालिताय श्रीशंख महानिधये नमः ।

इसके बाद हकीक माला या स्फटिक माला से निम्न मन्त्र की पांच माला जप करें।

मूल मन्त्र—

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं दक्षिण मुखाय
शंखानिधये समुद्रप्रभवाय शंखाय नमः ॥

फिर इस शंख को चौबीस घण्टे तक पूजा स्थान में ही रहने दें और बाद में लाल वस्त्र में लपेट कर घर में जहां रुपये पैसे या आभूषण आदि रखते हैं वहां पर रख दें तो उसके जीवन में निरन्तर आर्थिक उन्नति होती रहती है और किसी भी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता ।

वास्तव में ही यह गोपनीय प्रयोग अपने आप में अद्भुत आश्चर्यजनक सिद्धिदायक है।

卐

सिद्ध प्रयोग : हनुमान साधना

हनुमान शक्तिशाली, पराक्रमी, संकटों का नाश करने वाले और दुखों को दूर करने वाले महावीर हैं।

मंगलवार के दिन साधक स्नान कर लाल धोती पहन कर लाल आसन पर बैठे और अपना मुंह दक्षिण की ओर करे। फिर अपने सामने रक्त चन्दन से निर्मित मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त हनुमान मूर्ति के सामने नीचे लिखे मन्त्र की रुद्राक्ष माला से इक्कीस माला मंगलवार की रात्रि से जपे—

॥ ॐ नमो हनुमन्ताय आवेशाय आवेशाय स्वाहा ॥

ग्यारह दिन तक जप करने पर हनुमान जी प्रत्यक्ष दर्शन देंगे, शारीरिक बल देंगे, भयंकर रोगों से छुटकारा मिलेगा तथा बड़ी विपत्तियों को टाला जा सकेगा।

अखण्ड लक्ष्मी सिद्धि प्रयोग

दीपावली का पर्व पूर्ण "विजय पर्व" है, इस पर्व का तात्पर्य दरिद्र पर विजय, कष्टों पर विजय, अभावों, परेशानियों और पीड़ाओं पर विजय, दु दैन्य और दरिद्रता पर विजय का प्रतीक पर्व है, यह पर्व एक ऐसा पर्व है, जि पूरा भारतवर्ष एक साथ उमंग और उल्लास के साथ मनाता है, भारतवर्ष ही न अपितु विदेशों में भी दीपावली के पर्व को विजय के रूप में मनाते हैं, अफ्रीका कुछ कबीलों में इस दिन दरिद्रता की आटे की मूर्ति बना कर विशेष मन्त्रों से उ काट कर नदी में प्रवाहित करने की परम्परा है, चीन में दीपावली के दिन घा फूस का एक पुतला बनाया जाता है, जो कि भूख और दुःख का प्रतीक होता है और फिर उस पर कुछ मन्त्र पढ़ कर आग लगा देते हैं, जिसका तात्पर्य है कि हम मन्त्रों से अपने जीवन की भूख और दरिद्रता को मिटा रहे हैं, मारीशस यह पर्व अत्यन्त उल्लास के साथ मनाया जाता है और पांच दिनों तक लक्ष्मी की विशेष साधना सम्पन्न की जाती है, तिब्बत के बौद्ध मठ तो तांत्रिक क्षेत्र में वि विख्यात हैं, वे पांच दिनों तक विशिष्ट साधना सम्पन्न करते हैं, और अपने आ को अद्वितीय धन सम्पन्न बना देते हैं।

तिब्बती तन्त्र साधना

मन्त्र तन्त्र साधना भारतवर्ष की जितनी प्राचीन है, तिब्बत में भी उत ही प्राचीन यह विद्या है, तिब्बत के अधिकतर लामा तन्त्र के क्षेत्र में आज अद्वितीय हैं, उन्होंने योग बल से और तन्त्र के माध्यम से जो कुछ प्राप्त किया है वह अपने आप में अद्वितीय है उसकी तुलना तो हो ही नहीं सकती।

तिब्बत किसी समय भले ही छोटा सा देश रहा हो, परन्तु वहां के बौ

मठ अपने आप में पवित्र दिव्य और उच्चस्तरीय रहे है, लक्ष्मी को पूर्णता से प्राप्त करने और घर में स्थाई रूप से निवास करे, इसके लिए उन्होंने तन्त्र की विशेष साधना पद्धति ढूंढ निकाली जो अभी तक अपने आपमें गोपनीय और दुर्लभ रही है, यह एक ऐसी साधना है जिसके माध्यम से हमेशा-हमेशा के लिए दुःख दैन्य और कष्ट समाप्त हो जाता है, यह एक ऐसी साधना है जिससे द्वारा लक्ष्मी से सम्बन्धित पूर्व जन्म के दोष नष्ट हो जाते हैं और यह मात्र ऐसी साधना है जिसके द्वारा घर में निरन्तर धन-धान्य, सुख-सौभाग्य तथा ऐश्वर्य की वृद्धि होती रहती है।

राहुल सांकृत्यायन का नाम तो विख्यात है, उन्होंने तिब्बत के दुर्लभ मठों की यात्रा की थी और उनका एक मात्र उद्देश्य लक्ष्मी सिद्ध करने की उस विशिष्ट विधि को ढूंढ निकालना था जिसके द्वारा घर में लक्ष्मी को स्थायित्व दिया जा सके, निरन्तर व्यापार वृद्धि हो सके, घर में सुख-सौभाग्य बढ़ सके, हमेशा-हमेशा के लिए दरिद्रता समाप्त हो सके और कुछ ऐसा प्राप्त हो सके जिसके द्वारा यह चंचल लक्ष्मी हमेशा-हमेशा के लिए घर में बनी रह सके, परन्तु राहुल को भी उस हस्तलिखित ग्रन्थ या साधना विधि का ज्ञान प्राप्त नहीं हो सका जो कि वे चाहते थे।

कुछ दिन पहले मैं मानसरोवर की यात्रा पर था, मैं तो संन्यासी, फक्कड़, अलमस्त योगी रहा हूं मुझे न रुपये पैसे का लालच है और न किसी प्रकार की चाह ही, परन्तु कालतधांग से आगे जाने पर इतने जोर का अन्धड़ और तुफान आया कि मेरे साथ जो तिब्बती भार ढोने वाला था वह मुझसे बिछुड़ गया और मैं अलग-थलग गिरता पड़ता एक किलोमीटर दूर छोटी सी पहाडी पर बने हुए बौद्ध मठ में जा पहुंचा। स्हून बौद्ध मठ की चर्चा पूरे तिब्बत और भारतवर्ष में रही है, सुनते थे कि यहां पर उच्चकोटि के ग्रन्थ भरे पड़े है जो तन्त्र साधना से सम्बन्धित है, यह संयोग ही था कि मैं इस तिब्बती मठ में जा पहुंचा, वहां के रक्षक ने मुझे देखा और जोरों के अन्धड़ और तूफान को अनुभव कर मुझे अन्दर आने की स्वीकृति दे दी, मैं जब अन्दर पहुंचा तो सर्दी के मारे मेरे दांत किटकिटा रहे थे और सारा शरीर सर्दी से थरथरा रहा था, उसने मुझे गर्म रजाई दी और उधर पाये जाने वाले याक पशु का दूध गर्म कर पीने के लिए दिया, इससे मेरी कंपकंपी कुछ कम हुई और मैं चैतन्य हुआ।

तूफान आया तो ऐसा आया कि रुकने का नाम ही नही ले रहा था, तीन दिन बीत गये समय का कुछ पता नही चल रहा था, यद्यपि मैंने तन्त्र साधनाएं

सिद्ध कर रखी थी और मुझे अपने जीवन में गर्व रहा है कि मैं स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी का प्रिय शिष्य रहा हूं और उनके सान्निध्य में ही मैंने तन्त्र की कुछ विशेष साधनाएं सिद्ध की थी जो कि मेरे जीवन की धरोहर है, उन्होंने ही एक बार चर्चा के दौरान बताया था कि तिब्बत के बौद्ध मठों में "प्रचण्ड लक्ष्मी सिद्धि प्रयोग" से सम्बन्धित कोई ऐसी साधना है जो कि अपने आप में दुर्लभ और कठिन है, मुझे धुंधली सी इतनी याद थी कि उन्होंने पांच-सात बौद्ध मठों का जिक्र किया था, जिसमें ल्हून बौद्ध मठ का भी नाम था और यह संयोग ही था कि मैं इस आंधी तूफान में इस बौद्ध मठ में आ पहुंचा।

दो दिन तक तो सर्वथा भूख हड़ताल तथा जल का भी परित्याग कर देने पर तथा मेरे अत्यधिक अनुरोध करने पर मुझे ल्हून बौद्ध मठ के प्रधान लामा से मिलने का अवसर मिला, वास्तव में ही वे तन्त्र के साक्षात् स्वरूप थे और उनके पास असीम सिद्धियां थीं, मैंने उनसे तन्त्र के सम्बन्ध में अपनी जिज्ञासाएं रखी और तभी मुझे पूज्य गुरुदेव का कथन स्मरण हो आया कि शायद वह दुर्लभ साधना पद्धति इन लामा महोदय को ज्ञात हो, मैंने डरते झिझकते इस गोपनीय विधि के बारे में चर्चा की तो उन्होंने दो क्षण के लिए मेरे चेहरे की ओर ताका और फिर अन्दर से छोटी सी हस्तलिखित पुस्तिका लाकर मेरे सामने रख दी, जिसमें इस पद्धति का पूर्ण विवरण था।

अपने पाठकों और साधकों के लाभार्थ यह गोपनीय विधि प्रस्तुत कर रहा हूं जो कि वास्तव में ही अद्वितीय है।

साधना समय

यह साधना कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी से प्रारम्भ की जाती है तथा यह पांच दिन की साधना है।

साधना मुहुर्त

जैसा कि मैंने बताया कि यह पांच दिन की साधना है जो अमावस्या के दो दिन पहले से प्रारम्भ होती है और अमावस्या के दो दिन बाद तक चलती है, इस प्रकार यह प्रत्येक माह कृष्ण पक्ष त्रयोदशी से शुक्ल पक्ष द्वितिया तक रहती है, इस अवधि में यह साधना सम्पन्न की जा सकती है।

साधना कौन करे

यह साधना पुरुष या स्त्री कोई भी अपने घर में सम्पन्न कर सकता है, इस साधना में नित्य केवल तीन घण्टे देने होते हैं।

साधना विधि

त्रयोदशी को प्रातःकाल उठ कर स्नान कर सफेद आसन पर बैठ कर पूर्व की ओर मुंह कर साधना सम्पन्न करनी चाहिए. इस साधना में स्फटिक या हकीक माला का प्रयोग किया जाता है, इस माला की विशेषता यह होनी चाहिए कि इस माला का प्रयोग किसी अन्य साधना में नहीं किया हुआ हो, इस माला से केवल इसी साधना को सम्पन्न किया जा सकता है।

इसमें घी का दीपक और तेल का दीपक जलते रहना चाहिए. साधक स्वयं सफेद धोती और सफेद वस्त्र धारण करके बैठे और नित्य ग्यारह माला मन्त्र जप आवश्यक है. यह साधना प्रातःकाल या रात्रि को सम्पन्न की जा सकती है।

साधना काल में साधक के लिए यह जरूरी नहीं है कि एक समय भोजन करे, ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करे, जमीन पर सोवे, वह जिस प्रकार से भी चाहे, अपनी दिनचर्या व्यतीत कर सकता है।

साधना सामग्री

इस साधना में नौ महत्वपूर्ण वस्तुओं की जरूरत होती है, जो कि सभी पवित्र, दिव्य और अखण्ड लक्ष्मी मन्त्र से सिद्ध हों, मैं एक बार फिर दोहरा रहा हूं कि प्रत्येक सामग्री अखण्ड लक्ष्मी प्रयोग से सिद्ध हो, तभी इस साधना में सिद्धि प्राप्त हो सकती है।

१— भगवती महालक्ष्मी का प्रामाणिक दिव्य और मन्त्र सिद्ध चित्र।
२— महत्व सिद्धि अखण्ड लक्ष्मी यन्त्र (जो ताबीज से वेष्ठित हो)।
३— लघु नारियल—जो विशिष्ट कुबेर मन्त्र से सिद्ध हो।
४— तीन हकीक पत्थर—१-महालक्ष्मी, २-अखण्ड लक्ष्मी और ३-सौभाग्य लक्ष्मी मन्त्रों से पूर्ण चैतन्य हो।
५— गोमती चक्र—जो रावण कृत कुबेर साधना से सिद्ध हो।
६— हकीक माला— जिसका प्रत्येक मनका लक्ष्मी मन्त्र से चैतन्य हो।

७— कल्पवृक्ष मुद्रिका—जो प्रत्येक प्रकार की इच्छा पूर्ति के लिए रावण [illegible] प्रयोग से सिद्ध हो।

८— ऋद्धि सिद्धि पारद गुटिका—जो समस्त दुःख दारिद्य को समाप्त करने मे समर्थ हो।

९— मनोकामना पूर्ति युक्त बिल्ली की नाल—जो वास्तव में ही समस्त कामनाओं की पूर्ति में सिद्ध चैतन्य हो।

अखण्ड लक्ष्मी सिद्धि प्रयोग पैकेट

उपरोक्त सभी प्रयोग सामग्री पांचों दिन उपयोग में आयेगी, इस सारी सामग्री पर व्यय लगभग १००५) रुपये है, यह धनराशि मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट से भा सकती है. बैंक ड्राफ्ट किसी भी बैंक का हो पर वह 'मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान' जोधपुर के नाम से हो तथा उसे रजिस्टर्ड डाक से निम्न पते पर भेजने की व्यवस्था करें—

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कालोनी,
जोधपुर-३४२००१ (राजस्थान)

यह जरूरी नहीं है कि आप यह पैकेट यहीं से प्राप्त करें, साधक कहीं से भी ऐसी सामग्री सुलभ होने पर प्राप्त कर सकता है, पर यह आवश्यक है कि प्रत्येक सामग्री प्राण प्रतिष्ठा के अनुसार मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त चैतन्य एवं अद्वितीय हो जिससे कि साधना में पूर्ण सफलता मिले।

उपरोक्त पैकेट में ऊपर लिखि हुई, नौ वस्तुएं प्रामाणिक रूप से संग्रहित हैं जिसे "**अखण्ड लक्ष्मी सिद्धि प्रयोग पैकेट**" कहा गया है।

अन्य सामग्री

इसके अलावा कुछ अन्य सामग्री पहले से ही व्यवस्था करके रख लेनी चाहिए-१-आसन, २-जलपात्र, ३-कुंकुम (रोली), ४-चावल, ५-पुष्प, ६-घी का तथा तेल का दीपक, ७-दूध का बना हुआ नैवेद्य।

साधना प्रयोग

त्रयोदशी को प्रातःकाल स्वयं या अपनी पत्नी के साथ शुद्ध शान्त चित्त से आसन पर बैठ जांय, और उपरोक्त पैकेट की सारी सामग्री रख दें, अपने

महालक्ष्मी के चित्र को पहले से ही कांच के फ्रेम में मंढ़वा लें और हकीक माला से मन्त्र जप सम्पन्न किया जायेगा, इसके अलावा सारी सामग्री किसी चांदी के या स्टील के पात्र में रख दें फिर "महालक्ष्म्यै नमः" शब्द का उच्चारण करते हुए इस सारी सामग्री को जल से स्नान करावें फिर कच्चे दूध से धोवें, फिर पुनः जल से या गंगाजल से धोवें, फिर सबको पोंछ कर चांदी, स्टील या तांबे के पात्र में स्थापित कर दें और सब पर कुंकुम या केसर का तिलक करें, सब पर इत्र छिड़कें, पुष्प चढ़ावें और अगरबत्ती लगावें, फिर कपूर से लक्ष्मी की आरती करें, इसके बाद हकीक माला से मन्त्र जप सम्पन्न करें, यह ग्यारह माला मन्त्र जप आवश्यक है, पांचों दिनों के लिए अलग-अलग मन्त्र है।

प्रथम दिन जपने वाला तिब्बती मन्त्र—

ॐ ह्रीं मणिभद्रे हुं ॥

दूसरे दिन जपने वाला तिब्बती मन्त्र—

ॐ ऐं विराट देव्यै हुं ।

तीसरे दिन जपने वाला तिब्बती मन्त्र—

ॐ श्रीं तैवांग भद्रे हुं ।

चौथे दिन जपने वाला तिब्बती मन्त्र—

ॐ ऐं श्रीं तनतव्यै फट् ।

पांचवें दिन जपने वाला तिब्बती मन्त्र—

ॐ ऐं ह्रीं सवसेव्यै हुं ।

सामग्री उपयोग

साधना सम्पन्न करने के बाद यहां के पैकेट में जो सामग्री भेजी गयी है उनका प्रयोग इस प्रकार से करना चाहिए— १-भगवती महालक्ष्मी के प्रामाणिक चित्र को पूजा स्थान में ही बना रहने दें, २-सहस्र सिद्धि अखण्ड लक्ष्मी यन्त्र को पीले धागे में डाल कर एक महीने तक गले में धारण किये रहें, ३-कभी-कभी साधना के समय हकीक माला को धारण कर लें, ४-इसके अलावा बाकी सारी सामग्री पूर्णिमा तक पूजा स्थान में ही रहने दें और इसके दूसरे दिन या तो पूजा स्थान में ही रखी रहे या पीले वस्त्र में लपेट कर घर में पवित्र स्थान पर रख दें।

卐

तांत्रोक्त गुरु साधना से अखण्ड लक्ष्मी प्राप्ति

लक्ष्मी प्राप्ति का श्रेष्ठतम प्रयोग तो गुरु साधना के द्वारा ही सम्भव है, क्योंकि गुरु का तात्पर्य केवल ज्ञान देने वाला ही नहीं है अपितु जीवन में पूर्णता प्रदान करने वाला है, यह दुर्लभ प्रयोग हमें एक उच्च कोटि के संन्यासी महात्मा से प्राप्त हुआ है, जिसे हम ज्यों का त्यों दे रहे हैं—

सही रूप से देखा जाय तो गुरु शब्द का तात्पर्य समस्त साधनाओं का प्रारम्भ और समापन है, सभी प्रकार की साधनाएं 'गुरु' शब्द से ही निष्पन्न होती है, और गुरु में ही विसर्जित हो जाती है, विश्वामित्र ने एक स्थान पर गोपनीय ढंग से स्वीकार किया है, कि गुरु अपने आप में समस्त ऐश्वर्य का अधिपति होता है, अतः गुरु साधना के द्वारा उस ऐश्वर्य को प्राप्त किया जा सकता है।

विश्वामित्र ने साधना क्रम को समझाते हुए बताया है कि तीन प्रकार की साधनाएं होती है—१-अधम, २-मध्यम तथा ३-उत्तम।

अधम साधना

अधम उपासना उसे मानते हैं, जो यह अहसास करता है, कि मैं गुरु का शिष्य हूं, मैं उनका प्रिय शिष्य हूं, और मैं गुरु साधना के द्वारा उनको प्रसन्न कर सकता हूं, या सूक्ष्म रूप से उनको देख सकता हूं, अथवा मन्त्र बल से अपने स्थान पर उनको आह्वान कर उपस्थित कर सकता हूं, इस प्रकार की साधना में 'देहाभिमान' हो जाता है, उसे अपनी देह पर अभिमान हो जाता है, इसीलिए ऐसी साधना को 'अधम साधना' कहा गया है।

मध्यम साधना

इसमें साधक अपने 'देहाभिमान' को त्याग देता है, वह 'आत्माभिमान' करने लग जाता है, वह यह महसूस करने लग जाता है, कि मेरा आत्म बल प्रधान है, मैं इस आत्म बल के द्वारा गुरु को निश्चित रूप से अपने वश में कर सकता हूं, यदि गुरु और शिष्य आमने सामने हो भी जांय तो मैं अपनी आत्मा के बल से उनको सिद्ध कर सकता हूं, ऐसी स्थिति उच्च कोटि के साधकों के लिए सही नहीं है, ऐसी साधना को "मध्यम साधना' कहा गया है।

उत्तम साधना

उत्तम साधना या उत्तम उपासना वह कही जाती है, जिसमें अपने आपको गुरु के मन और प्राणों में विसर्जित कर देने की क्रिया होती है, साधना के प्रारम्भ में ही उसकी भावना यह होती है कि मेरी स्थिति नगण्य है, या दूसरे शब्दों में मेरा अस्तित्व है ही नहीं, अगर मैं भोजन करता हूं तो अपने स्वाद के लिए नहीं करता, अपितु गुरु की तृप्ति के लिए अथवा उनकी संतुष्टि के लिए वह कर रहा हूं, ये भोजन के ग्रास मेरे उदर में नहीं, अपितु गुरु के उदर में समाहित हो रहे हैं, इस समय कड़ी धूप है, और अवश्य ही गुरुदेव प्यासे होंगे, और मैं शीतल सुस्वादु जल से उन्हें तृप्त कर रहा हूं, ऐसा चिन्तन स्वाभाविक रूप से उसके मन में आना चाहिए, यह चिन्तन बलपूर्वक नहीं होना चाहिए, अपितु स्वाभाविक चिन्तन के द्वारा ही ऐसी भावना, ऐसी स्थिति उसके मन में बनी रहनी चाहिए, दूसरे शब्दों में कहा जाय तो वह अपने दिन भर के कार्य कलाप यह मान कर इस चिन्तन के साथ सम्पन्न करता है, कि यह कार्य गुरुदेव के लिए करना ही है, यह सब कुछ गुरुदेव का ही है, मैं तो पूरे इस कार्य या सम्पत्ति का मात्र ट्रस्टी हूं, और जो जिम्मेवारी या पारिवारिक कार्य मुझे सौंप रखे हैं, मुझे इसलिए करने हैं, क्योंकि यह सब कुछ उनका है, और उनके लिए पूर्ण जिम्मेवारी के साथ यह कार्य करते रहना है, ऐसा ही विचार साधना और उपासना के लिए होना चाहिए, और ऐसी साधना को 'उत्तम साधना' कहा जाता है।

"कामुण्डा तन्त्र" में स्पष्ट रूप से कहा है, कि मेरे जीवन में गुरु मुख्य है, उनके लिए मैं क्रिया कर रहा हूं, और उनकी आज्ञा से ही मैं ये साधनाएं और उपासनाएं सम्पन्न कर रहा हूं, यदि इस भाव से साधक किसी प्रकार की साधना या उपासना नहीं करता तो वह सब कुछ निष्फल जाता है—

पुस्तके लिखितो मन्त्रो येन सुन्दरि जप्यते,
न तस्य जायते सिद्धिर्हानिरेव पदे-पदे।
गुरु-मुख्याः क्रियाः सर्वा मुक्ति-मुक्ति फल प्रदाः,
गुर्वनुक्ताः क्रियाः सर्वा निष्फलाःस्युर्यतो ध्रुवम् ।।

साधना क्रम

जैसा कि मैंने बताया कि विश्वामित्र ने एक अत्यन्त गोपनीय और दुर्लभ लक्ष्मी साधना क्रम स्पष्ट किया जिसके माध्यम से पूर्ण लक्ष्मी सिद्ध होती ही है, जब कोई साधना या देवी सिद्ध हो जाती है, तो फिर बार-बार उसकी साधना करने की जरूरत नहीं रहती, एक बार सिद्ध करने पर पूरे जीवन में वह लक्ष्मी पूर्णता के साथ साधक के शरीर में स्थापित हो जाती है, और जहां-जहां भी साधक जाता है, लक्ष्मी उसके साथ-साथ चलती रहती है, दूसरे शब्दों में कहा जाय तो दूसरे व्यक्ति या साधक लक्ष्मी के पीछे-पीछे भागते रहते हैं, जब कि ऐसी साधना में लक्ष्मी स्वयं साधक के पीछे भागती रहती है, और जहां भी साधक खड़ा होता है वहीं धन-धान्य की वर्षा होने लगती है लक्ष्मी का स्रोत प्रवाहित होने लगता है, और सभी दृष्टियों से ऐश्वर्य प्राप्ति होने लगती है।

यह साधना मात्र तीन घण्टे की है, जो कि अमावस्या की रात्रि को सम्पन्न की जाती है, रात्रि में किसी भी समय यह साधना सम्पन्न की जा सकती है, इसमें साधक शुद्धता के साथ स्नान कर श्वेत वस्त्र धारण कर, श्वेत आसन पर उत्तर की ओर मुंह कर बैठ जाय और अपने सामने गुरु चित्र स्थापित कर दे, तत्पश्चात् अपने शरीर को ही गुरु शरीर मानता हुआ अपने आपको गुरु में लीन करता हुआ, अपने आज्ञा चक्र में अर्थात् दोनों भौंहों के बीच 'परम तत्व गुरु' की स्थापना करे।

परम तत्व गुरु स्थापन

ऐं ह्रीं श्रीं अमृताम्भोनिधये नमः। रत्न द्वीपाय नमः। सन्तान-वाटिकायै नमः। हरिचन्दन-वाटिकायै नमः। पारिजात वाटिकायै नमः। पुष्पराग प्राकाराय नमः। गोमेद रत्न-प्राकाराय नमः। वज्र रत्न प्राकाराय नमः। मुक्ता रत्न प्राकाराय नमः। माणिक्य रत्न प्राकाराय नमः। सहस्र स्तम्भ प्राकाराय नमः। आनन्द वापिकायै नमः। बालातपोद्धाराय नमः। महाश्रृंगार पारिखायै नमः। चिन्तामणि गृह-

राजाय नमः। उत्तरद्वाराय नमः। पूर्वद्वाराय नमः। दक्षिणद्वाराय नमः। पश्चिमद्वाराय नमः। नाना-वृक्ष-महोद्यानाय नमः। कल्पवृक्ष वाटिकायै नमः। मन्दार वाटिकायै नमः। कदम्ब-वन वाटिकायै नमः। पद्मराग-रत्न प्राकाराय नमः। इन्द्र-नील रत्न प्राकाराय नमः। वैदूर्य-रत्न-प्राकाराय नमः। विद्रुम रत्न प्राकाराय नमः। माणिक्य मण्डपाय नमः। अमृत वापिकायै नमः। विमर्श वापिकायै नमः। चन्द्रिकोद्गाराय नमः। महा-पद्माटव्यै नमः। पूर्वाम्नाय नमः। दक्षिणाम्नाय नमः। पश्चिमाम्नाय नमः। उत्तराम्नाय नमः। उत्तरद्वाराय नमः। महा-सिंहासनाय नमः। विष्णुमयैक-पंच-पादाय नमः। ईश्वर-मयैक-पंच-पादाय नमः। हंस-कुल-तटिनाय नमः। कौसुम्भास्तरणाय नमः। महा-यवनिकायै नमः। रत्न-द्वीप वलयाय नमः। ब्रह्म-मयैक-पंच-पादाय नमः। रुद्र मयैक-पंच पादाय नमः। सदाशिव-मयैक-पंच पादाय नमः। हंस तूल-महोपधानाय नमः। महा-विमानिकायै नमः। श्री परम तत्वाय गुरुभ्यो नमः।

इस प्रकार परम तत्व गुरु को अपने आज्ञाचक्र में स्थापित करने के बाद गुरु की द्वादश कलाओं को पात्र में जल, अक्षत, कुंकुम लेकर अर्घ्य दें—

॥ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं अं सूर्य मण्डलाय
द्वादश-कलात्मने अर्घ्य-पात्राय नमः ॥

इसके बाद गुरु को पुनः उनकी प्रत्येक कला का पूजन इसी प्रकार अर्घ्य अक्षत, पुष्प आदि लेकर बारह बार जल समर्पित करे।

द्वादश कला पूजन

ऐं ह्रीं श्रीं कं भं तपिन्यै नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं खं बं तापिन्यै नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं गं फं धूम्रायै नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं घं पं विधुतायै नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं ङं नं बोधिन्यै नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं चं धं ज्वालिन्यै नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं छं दं शोषिण्यै नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं जं थं वरदायै नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं झं तं आकर्षिण्यै नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं ञं णं मायायै नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं टं ढं विवस्वत्यै नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं ठं डं हेम-प्रभायै नमः।

उपरोक्त कला पूजन में "ऐं ह्रीं श्रीं" लक्ष्मी के बीज मन्त्र हैं और इस प्रकार लक्ष्मी के सभी स्वरूप अपने शरीर में समाहित हो जाते हैं।

लक्ष्मी प्राप्ति के साथ सुख, सम्मान, संतोष, तुष्टि, पुष्टि आदि भी प्राप्त होनी चाहिए तभी तो उस धन का महत्व है, तभी उस प्राप्त धन का सही उपयोग है, तभी तो जीवन में पूर्ण आनन्द और ऐश्वर्य है, इसीलिए इन द्वादश कला पूजन के बाद पूर्ण ऐश्वर्य के लिए गुरु को अर्घ्य पात्र में जल, अक्षत, कुंकुम और पुष्प लेकर समर्पित करें, पहले मूल समर्पण करें फिर सोलह कलाओं में भी इसी प्रकार से अर्घ्य पात्र समर्पित करें।

॥ ऐं ह्रीं श्रीं सौं उं सोम मण्डलाय षोडशी
कलात्मने अर्घ्य पात्रामृताय नमः ॥

इस अर्घ्य को समर्पित करते समय उसका जल थोड़ा-थोड़ा करके सोलह बार ग्रहण करें, इसके बाद गुरु की सोलह कलाओं का अर्घ्य पूजन करें।

सोलह कला पूजन

ऐं ह्रीं श्रीं अं अमृतायै नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं आं मानदायै नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं इं तुष्टयै नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं ईं पुष्टयै नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं उं प्रीत्यै नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं ऊं रत्यै नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं ऋं श्रियै नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं ॠं क्रियायै नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं लृं सुधायै नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं लॄं रात्र्यै नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं एं ज्योत्स्नायै नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं ऐं हेमवत्यै नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं ओं छायायै नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं औं पूर्णिमायै नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं अः विद्यायै नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं अः अमावस्यायै नमः।

वास्तव में ही यह एक अद्‌भुत और आश्चर्यजनक गुरु लक्ष्मी पूजन है जिससे कि पूर्ण समृद्धता और ऐश्वर्यता प्राप्त होती है।

इसके बाद गुरु के मूल मन्त्र का—"ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः" मन्त्र की एक माला फेरें और फिर अपने शरीर में ही गुरु को समाहित मान कर सामने किसी पात्र में दीपक लगा कर बैठे-बैठे ही समर्पण आमन्त्रण समाहित आरती करें।

पूर्ण सिद्ध आरती

अत्र सर्वानन्द-मये बैन्दव-चक्रे परंब्रह्म-स्वरूपिणि परापर-शक्ति-श्रीमहा-गुरुदेव-समस्त चक्र नायके-सम्वित्ति-रूप-चक्र नायकाधिष्ठिते त्रैलोक्यमोहन-सर्वाशपरि-पूरक-सर्वसंक्षोभकारक सर्वसौभाग्यदायक सर्वार्थसाधक सर्वरक्षाकर सर्वरोगहर सर्वसिद्धिप्रद सर्वानन्दमय चक्र-समुन्मीलित समस्त प्रकट-गुप्ततर-सम्प्रदाय कुल-कौलिनी निगम-रहस्यातिरहस्य परापर रहस्य-समस्त-योगिनी-परिवृत्त-श्रीत्रिपुरा-त्रिपुरेशी-त्रिपुरसुन्दरी त्रिपुरवासिनी-त्रिपुरा-श्रीत्रिपुरमालिनी-त्रिपुरसिद्धा-त्रिपुराम्बा-तत्तच्चक्र-नायिका-वन्दित चरणकमल श्रीमहा-गुरु-नित्यदेव सर्वचक्रेश्वर सर्वमन्त्रेश्वर सर्वविद्येश्वर सर्वपीठेश्वर सर्वकामेश्वर सर्वतत्वेश्वर सर्ववीरेश्वर त्रैलोक्यमोहिनी जगदुत्पत्ति गुरु-सर्वचक्रमय तच्चक्र-नायका-सहिताः स-मुद्रा स-सिद्धयः, सायुधाः, स-वाहनाः, स-परिवाराः, सर्वोपचारैः श्री परम-तत्वाय गुरु परापरया सपर्यया पूजितास्तर्पिताः सन्तु ॥

इसके बाद हाथ जोड़ कर क्षमा प्रार्थना सम्पन्न करें ।

श्रीनाथादि गुरु-त्रयं गण-पति पीठ त्रयं भैरवं
सिद्धौघ बटुक-त्रयं पद युगं दूती-क्रमं मण्डलम् ।
वीरानष्ट-चतुष्क-षष्टि-नवक वीरावली पंचक,
श्रीमन्मालिनि-मन्त्रराज-सहितं वन्दे गुरोर्मण्डलम् ॥

इस प्रकार पूर्ण गुरु लक्ष्मी साधना केवल एक बार किसी भी अमावस्या की रात्रि को सम्पन्न करने से पूर्ण महालक्ष्मी सिद्धि प्राप्त होती है ।

卐

इन्द्र कृत : महालक्ष्मी सिद्धि

लक्ष्मी प्राप्ति के कई प्रयोग विभिन्न ग्रन्थों में प्रकाशित हैं, और इसके अलावा तन्त्र ग्रन्थों, आगम ग्रन्थों और अन्य विविध कर्मकाण्ड की पुस्तकों में भी लक्ष्मी से सम्बन्धित कई प्रयोग दिये हैं, इन्द्र कृत महालक्ष्मी सिद्धि प्रयोग कोई गोपनीय प्रयोग नहीं है, पिछले दिनों स्वामी हरिहरानन्द जी पधारे थे, उनके पास एक छोटी सी हस्तलिखित पुस्तिका थी, जिसमें यह महत्वपूर्ण प्रयोग दिया गया था।

इस बात को काफी समय बीत गया, कई साधकों ने इस प्रयोग को आज-माया भी, और उन्हें आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त हुई।

शुभ मुहूर्त

मनोवांछित सफलता की पूर्ति के लिए शुक्ल पक्ष के किसी भी शुक्रवार से यह अनुष्ठान प्रारम्भ करें, यह केवल आठ दिन का प्रयोग है, और नित्य प्रातः काल ६.१८ बजे से प्रारम्भ करें, प्रतिदिन आठ बार निम्न स्तोत्र-पाठ करना अनिवार्य है।

साधक स्नान कर पीले वस्त्र धारण कर उत्तर दिशा की ओर मुंह कर पीले आसन पर बैठ जाय और सामने—१-इन्द्र कवच मन्त्र सिद्ध महालक्ष्मी यन्त्र और २-इन्द्र सिद्धि प्राण प्रतिष्ठा युक्त महालक्ष्मी का चित्र स्थापित कर दे, फिर यन्त्र और चित्र का केसर, अक्षत, पुष्प (सफेद रंग के) आदि से पंचोपचार या सामान्य पूजन करे, सामने शुद्ध घी का दीपक लगावे, और सुगन्धित अगरबत्ती प्रज्वलित करे और मिश्री का नैवेद्य चढ़ावे।

संकल्प

ॐ मत्स्येन्द्र-कृत महालक्ष्म्यष्टक-स्तोत्रस्य सम्पुटित-पाठानि द्वादशाक्षर मन्त्रस्य जपं च श्रीमहालक्ष्मी-प्रीति-पूर्वक ममाभीष्ट-कामना प्रीत्यर्थमहं करिष्ये ।

कर-न्यास अंग-न्यास

मन्त्र-न्यास	कर-न्यास	अंग-न्यास
श्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ह्रीं	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
क्लीं	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्
ऐं	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुं
कमल वासिन्यै	कनिष्ठिकाभ्यां नमः	नेत्र त्रयाय वौषट्
स्वाहा	करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

इसके बाद ध्यान करें—

सहस्र-दल-पद्मस्य कर्णिका वासिनी-पराम्,
शरत्-पार्वण-कोटीन्दु-प्रभां जुष्ट वारां वरम् ।
स्व-तेजसा प्रज्वलन्ती सुख-दृश्यां मनोहराम्,
प्रतप्त-कांचन निभां शोभा-मूर्ति-प्रतीं सतीम् ॥

फिर एक माला (हकीक माला से) मन्त्र जप करें ।

मन्त्र

॥ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं कमल-वासिन्यै स्वाहा ॥

मन्त्र जप पूरा होने के बाद निम्न आठ पदों का पाठ करें परन्तु प्रत्येक पद में पहले और अन्त में श्री सूक्त के निम्न मन्त्र को लगा कर सम्पुटित पाठ करें, इन पदों का आठ बार पाठ करना चाहिए ।

श्री सूक्त का सम्पुटित मन्त्र

ॐ कांसो स्मितां हिरण्य-प्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् ।
पद्मे स्थितां पद्म-वर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ।

मूल अष्टक

नमस्तेऽस्तु महा-मागे श्री-पीठे सुर-पूजिते
शंख-चक्र-गदा हस्ते महालक्ष्मी नमोऽस्तुते ॥१॥
नमस्ते गरुड़ारूढ़े कोलासुर-भयंकरि,
सर्व-पाप हरे देवि, महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ॥२॥
सर्वज्ञ सर्व-वरदे सर्व दुष्ट भयंकरि,
सर्व दुःख हरे देवि, महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ॥३॥
सिद्धि-बुद्धि प्रदे देवि, आदि शक्ति महेश्वरि,
योगदे योग सम्भूते, महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ॥४॥
आद्यन्त रहिते देवि, आद्य शक्ति महेश्वरि,
योगदे योग सम्भूते, महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ॥५॥
स्थूल-सूक्ष्म महा-रौद्रे, महाशक्ति महोदरे,
महा-पाप हरे देवि, महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ॥६॥
पद्मासन-स्थिते देवि, पर-ब्रह्म स्वरूपिणी,
परमेशि जगन्मात महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ॥७॥
श्वेताम्बुज-धरे देवि, नानालंकार भूषिते,
जगत्-स्थिते जगन्मातर्महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ॥८॥

फल श्रुति

महा-लक्ष्म्यष्टक-स्तोत्रं यः पठेत् भक्तिमान नरः,
सर्व-सिद्धिमवाप्नोति राज्यं प्राप्नोति सर्वदा ॥
एक कालं यः पठेन्नित्यं महा-पाप विनाशनम्,
द्वि-कालं यः पठेन्नित्यं धन-धान्य समन्वितः ॥
त्रिकालं यः पठेन्नित्यं महाशत्रु विनाशनम्,
महा-लक्ष्मी र्भवेन्नित्यं प्रसन्ना वरदा शुभा ॥

जैसा कि मैंने बताया कि ऊपर जो श्री सूक्त मन्त्र दिया गया है, उसको इस मूल अष्टक के प्रत्येक मन्त्र के पहले और बाद में लगा कर पाठ करना चाहिए, इस प्रकार इन आठ पदों का पाठ करने से एक आवृत्ति होती है, इस प्रकार नित्य

आठ अन्वृत्ति का पाठ करना चाहिए, सबसे अन्त में केवल एक बार फल-श्रुति का पाठ करना चाहिए।

नित्य पाठ समाप्ति के बाद में प्रत्येक मन्त्र को श्री सूक्त के मन्त्र से सम्पुटित करता हुआ अग्नि में शुद्ध घृत से "स्वाहा" शब्द लगा कर आहुति देनी चाहिए, इस प्रकार नित्य आठ आहुतियां दी जाती है, यज्ञ की समाप्ति के बाद महालक्ष्मी चित्र के सामने नैवेद्य के रूप में जो मिश्री रखी हुई है उसे प्रसाद के रूप में कन्याओं को वितरित कर देनी चाहिए।

आठ दिन तक इस प्रकार का प्रयोग करने से आश्चर्यजनक रूप से लक्ष्मी प्राप्ति और लक्ष्मी अभिवृद्धि होती है।

卐

व्यापार द्वारा धन प्राप्ति प्रयोग

मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त कुबेर यन्त्र को सफेद वस्त्र बिछा कर स्थापित कर दें, उसे जल से स्नान कराकर केसर पुष्प आदि से पूजा करें, अगरबत्ती दीपक लगा लें, इसके बाद निम्न मन्त्र की पीली हकीक माला से नित्य ग्यारह माला का जाप ग्यारह दिन तक करें—

मन्त्र

॥ ॐ ह्रीं श्रीं क्रीं श्रीं क्लीं श्रीं कुबेराय अष्टलक्ष्मी
मम गृहे धन पूरय पूरय नमः ॥

यह प्रयोग शनिवार रात्रि ६.१८ बजे से प्रारम्भ करें, प्रयोग सम्पन्न होने के बाद कुबेर यन्त्र को अपनी दुकान या कार्यालय में स्थापित कर दें। ऐसा करने से आश्चर्यजनक रूप से व्यापार में वृद्धि होने लगती है, दरिद्रता का नाश हो जाता है।

गुरु गोरखनाथ ने लक्ष्मी को यों प्रगट किया

गुरु गोरखनाथ अपने आप में क्रांतिकारी व्यक्तित्व थे, उन्होंने सबसे पहले संस्कृत भाषा और उसके जटिल विधि-विधान को छोड़ कर सरल प्राकृत भाषा में मन्त्र बनाये, उन मन्त्रों को सिद्ध करके हजारों-लाखों साधकों को बता दिया कि इन मन्त्रों में भी उतनी ही ताकत है, जितनी संस्कृत मन्त्रों में, उन्होंने जटिल और कठिन साधना पद्धतियों को छोड़ कर सरल और आसान रास्ता तैयार किया और उसके माध्यम से विविध साधनाएं सिद्ध कर अपने शिष्यों को और उस समय के लोगों को बता दिया कि ये साधनाएं भी अपने आप में सही हैं, प्रामाणिक हैं और इन साधनाओं के माध्यम से असम्भव को सम्भव किया जा सकता है।

जब दो लाख योगी इकट्ठे हुए

उन दिनों गुरु गोरखनाथ का बहुत विरोध हुआ, क्योंकि उन्होंने पहली बार संस्कृत भाषा को छोड़ कर सरल भाषा को अपनाया था, पंडितों के जटिल क्रिया-कलापों का विरोध कर जनसुलभ साधना साहित्य का निर्माण किया था और इन साधना पद्धतियों के माध्यम से वे जन-जन में लोकप्रिय हो गये थे।

उन्हीं दिनों गोरखपुर के पास "मखमरवा" ग्राम में गुरु गोरखनाथ का विरोध करने के लिए लगभग दो लाख से भी ज्यादा योगी, यती, संन्यासी और साधु एकत्र हुए और उस सम्मेलन में गोरखनाथ को बुलाया, उनके आने पर सभी योगियों ने चैलेंज दिया कि आपने जो नवीन साधना पद्धतियां निकाली हैं वे प्रामाणिक नहीं हैं, उनके माध्यम से कार्य सिद्ध नहीं हो सकते। गुरु गोरखनाथ ने चैलेंज को स्वीकार किया और उन सबके सामने नवीन लक्ष्मी साधना पद्धति

के माध्यम से "स्वर्ण वर्षा" कर सबको आश्चर्यचकित कर दिया। यही नहीं अपितु साबर मन्त्रों के माध्यम से ही भैरव साधना, बगलामुखी साधना आदि सिद्ध करके और उनको सबके सामने प्रत्यक्ष करके यह बता दिया कि ये साबर मन्त्र भी अपने आपमें प्रामाणिक और अचूक हैं।

इसके बाद से ही वे "गुरु" गोरखनाथ कहलाये और हजारों-लाखों शिष्य उनके पीछे हो लिये, उन्होंने सर्वथा नवीन और सुगम साधना पद्धतियों के माध्यम से प्रत्येक साधना को सिद्ध करके यह स्पष्ट कर दिया कि संस्कृत मन्त्रों की अपेक्षा साबर मन्त्र जल्दी सिद्ध हो सकते हैं।

जब लक्ष्मी गुरु गोरखनाथ के मठ में आने को बाध्य हुई

कहते हैं कि प्रारम्भ में गुरु गोरखनाथ का मठ दरिद्र अवस्था में था, उनके शिष्यों को भिक्षा के अन्न पर जीवित रहना पड़ता था और परिस्थितियों के अनुसार तथा गोरखनाथ का विद्रोही व्यक्तित्व होने के कारण उन शिष्यों को साधारण लोग अपमानजनक दृष्टि से देखते थे, उनको भिक्षा भी नहीं डालते थे, जब शिष्यों ने गोरखनाथ से इस दुर्व्यवस्था का जिक्र किया तो गुरु गोरखनाथ विचलित हो गये और उन्होंने साबर पद्धति के अनुसार 'महा विजय पताका प्रयोग' सम्पन्न किया जो कि लक्ष्मी प्राप्ति के लिए, दरिद्रता मिटाने के लिए और घर में लक्ष्मी को चिरस्थाई रूप से आबद्ध करने के लिए सर्वोत्तम है।

इस प्रयोग के बाद तो गोरखनाथ के मठ में लक्ष्मी सशरीर प्रगट होकर विद्यमान हो गई और मठ में धन की वर्षा सी होने लगी, इसके बाद आर्थिक दृष्टि से उस मठ की पूरे भारत में प्रशंसा रही, किसी प्रकार की कोई कमी और अभाव नहीं रहा और लक्ष्मी को स्वयं कहना पड़ा, कि तुम्हारी यह साधना अपने आपमें अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

मैं अपने पाठकों तथा साधकों के लिए गुरु गोरखनाथ द्वारा प्रणीत उस "महा विजय पताका प्रयोग" को स्पष्ट कर रहा हूं जो कि लक्ष्मी प्राप्ति के लिए आश्चर्यजनक रूप से अनुकूल है, व्यापार वृद्धि, आर्थिक अनुकूलता और दरिद्रता मिटाने के लिए यह अचूक साबर प्रयोग है।

महा विजय पताका प्रयोग

इस प्रयोग को वर्ष में चार दिन कर सकते हैं, गुरु गोरखनाथ के अनुसार

अक्षय तृतिया, दीपावली, होली या ग्रहण के दिन इस प्रयोग को सम्पन्न किया जा सकता है अक्षय तृतिया वैशाख शुक्ल पक्ष तृतिया को कहते हैं, यहां दीपावली से तात्पर्य धनत्रयोदशी से है, प्रत्येक वर्ष कार्तिक कृष्ण पक्ष त्रयोदशी को यह प्रयोग सम्पन्न किया जा सकता है, इसके अलावा होली की रात्रि को या जब ग्रहण हो तब यह प्रयोग सम्पन्न किया जा सकता है ।

साधना सामग्री

साधना प्रारम्भ करने से पूर्व निम्न सामग्री को तैयार कर लेना चाहिए, एक हाथ पीला वस्त्र लेकर उस पर लाल स्याही से "श्रीं" लिख कर उस कपड़े को ध्वजा का आकार देते हुए, घर की छत पर टांग देना चाहिए या घर में ही किसी स्थान पर टांग देना चाहिए जिससे कि इस ध्वजा को हवा लगती रहे और हवा में यह ध्वजा फहराती रहे, इस ध्वजा को कार्तिक पूर्णिमा तक इसी प्रकार छत पर या घर में लगे रहने देना चाहिए ।

इसके अलावा जल पात्र, त्रिगन्ध और अगरबत्ती की जरूरत पड़ती है।

साधना प्रयोग

धनत्रयोदशी की दोपहर को यह प्रयोग सम्पन्न होता है, गोरखनाथ के अनुसार जब धूप में खड़े रहने पर अपनी ही छाया अपने में समा जाय तब इस प्रयोग को सम्पन्न करना चाहिए, इस प्रकार से देखा जाय तो यह प्रयोग दोपहर को ठीक १२ बजे से डेढ़ बजे तक सम्पन्न करना चाहिए ।

साधक स्नान कर पीले वस्त्र धारण कर पीले आसन पर बैठ जाय, वह चाहे तो स्वयं या अपनी पत्नी के साथ बैठ सकता है, इस साधना को पुरुष या स्त्री कोई भी कर सकता है ।

इसके बाद साधक एक हाथ लम्बा और एक हाथ चौड़ा सफेद वस्त्र अपने सामने किसी लकड़ी के पट्टे पर बिछा दें, और कुंकुम या त्रिगन्ध से दस लाइनें सीधी और दस लाइनें आड़ी खींचें, इस प्रकार करने पर ८१ कोष्टक बन जाएंगे।

इसके बाद प्रत्येक कोष्टक में एक-एक गोमती चक्र स्थापित कर दें, गोमती चक्र की व्यवस्था पहले से ही कर लेनी चाहिए, जो वर्तुल आकार की और प्राणश्चित होनी चाहिए, आप ये गोमती चक्र कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं

में उपरोक्त प्रकार का वर्तुल और प्रामाणिक गोमती चक्र जो मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त है कार्यालय द्वारा भेजने की व्यवस्था है, इसके लिए आप निम्न पते पर सम्पर्क करें—

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कालोनी, जोधपुर-३४२००१ (राजस्थान)

इस प्रकार ८१ कोष्टकों में एक-एक गोमती चक्र रख दें और कोष्टक के बाहर चारों कोनों पर चावल की चार ढेरियां बना कर उस पर भैरव को भोग लगा दें, भैरव के भोग में घी और गुड़ मिला कर रखा जाता है, सामने लोबान धूप या किसी भी प्रकार की अगरबत्ती लगा दें तथा तेल का दीपक जला दें।

इसके बाद साधक वहीं पर बैठे-बैठे जो ८१ गोमती चक्र रखे हैं, उन सबसे प्रार्थना करे कि उसके घर में स्वर्ण वर्षा हो, धन की किसी प्रकार की कमी नहीं रहे, और व्यापार वृद्धि होती रहे, इसके अलावा भी साधक अपने मन की इच्छा प्रगट कर सकता है।

इसके बाद "गोरखनाथ माला" से निम्न मन्त्र का ८१ बार उच्चारण करें, इस माला की बनावट विशेष रूप से होती है, और सभी साबर ग्रन्थों में इस विशिष्ट माला को "गोरख माला" के नाम से सम्बोधित किया है, भविष्य में भी किसी भी प्रकार के साबर मन्त्र साधना में यह गोरख माला उपयोग में लाई जा सकती है।

मन्त्र

दमे खुदा मीर उस्ताद इष्ट कुलू नाग बंदन सर किरारी ईसर चोट की, कीसर बंदन हमारा तभी जितनी काले अमना संभाल अवें तनातर माठू महले फरके सत चल बंदन चला बंदन मुरे बंदन लक्ष्मी बंदन ता बंदन अघूर कुन कुनी अली शाह समन्दर की दूर मदूर काल कलावे जंजीर गुरु गोरखनाथ मच्छन्दर की दुहाई मेरी रक्षा करो, इक्कीस वीर भाई शब्द साचा पिण्ड काचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ॥

साबर मन्त्र इसी प्रकार के होते हैं यदि हम उनका अर्थ करने या अर्थ समझने बैठें तो कुछ भी पल्ले नहीं पड़ता, परन्तु इन मन्त्रों की शब्द रचना इस

प्रकार से होता है कि इसका प्रभाव तुरन्त और अचूक होता है।

इस प्रयोग के माध्यम से कर्ज में डूबे हुए व्यक्ति वापिस उन्नति की ओर अग्रसर हो गये और घर में लक्ष्मी की वर्षा सी होने लगी, वास्तव में ही यह प्रयोग अपने आपमें अचूक और अद्वितीय है।

जब इक्यावन बार मन्त्र जप हो जाय तो साधक उठ कर स्नान कर ले पर सफेद कपड़े पर रखे हुए गोमती चक्र ज्यों के त्यों रहने दे, इसी प्रकार दूसरे दिन और तीसरे दिन भी करे, तीसरे दिन मन्त्र जप पूरा होने पर इसी कपड़े में इक्यावन गोमती चक्र बांध दे और घर की तिजोरी में यह पोटली रख दे, चारों कोनों पर जो भैरव प्रसाद चढ़ाया था, वह काले कुत्ते को खिला दे।

यह अपने आपमें सात्विक साधना है और कोई भी व्यक्ति वेद पाठी या गायत्री साधना करने वाला भी इस साधना को सम्पन्न कर सकता है, एक बार साधना करने पर उसे पूरे जीवन भर के लिए अनुकूलता प्राप्त हो जाती है।

गुरु गोरखनाथ ने स्वयं एक स्थान पर कहा है, कि जो इस मन्त्र को और इस साधना को सम्पन्न कर लेता है, उसके जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता और वह निरन्तर उन्नति करता रहता है।

卐

विजय गणपति विग्रह

मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त धातु निर्मित गणपति मूर्ति अपने घर, दुकान या कार्यालय में किसी भी बुधवार को स्थापित कर गणेश गायत्री मन्त्र से उस पर अभिषेक करना चाहिए। इस अभिषेक में दूर्वा, जल, दूध और मन्त्र चैतन्य गजानन माला का प्रयोग होता है।

गणेश गायत्री मन्त्र

॥ ॐ तत्पुरुषाय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि तन्नो दन्ति प्रचोदयात् ॥

इक्कीस सौ बार इस मन्त्र से अभिषेक होता है, इस अभिषेक के करने से आर्थिक उन्नति, व्यापार वृद्धि, ऋद्धि-सिद्धि और समृद्धि प्राप्त होती है। •

लक्ष्मी जन्म-जन्म तक मेरे घर में रहेगी

तंत्र अपने आप में अत्यन्त ही सुन्दर और अनुकूल शब्द है, तन्त्र का तात्पर्य किसी भी कार्य को व्यवस्थित रूप से करना है, यदि हम कोई साधना या अनुष्ठान करते हैं तो तन्त्र हमें इस बात का बोध कराता है कि उस साधना या अनुष्ठान को किस प्रकार से सम्पादित करना है, जिससे कि निश्चित रूप से सिद्धि प्राप्त हो सके।

विश्वामित्र ने अपनी संहिता में लिखा है कि जो काम मन्त्रों के माध्यम से नहीं हो सकते, वे तन्त्र के माध्यम से निश्चित रूप से हो जाते हैं, गुरु गोरखनाथ ने "गोरक्ष संहिता" में स्पष्ट बताया है कि कलिकाल में सिद्धि केवल तन्त्रों के माध्यम से ही सम्भव है, विश्व प्रसिद्ध संन्यासी स्वामी शंकराचार्य ने बताया है कि यदि व्यक्ति शुद्धता पूर्वक तन्त्र के माध्यम से सिद्धि या साधना करता है, तो तुरन्त सफलता मिलती है, अनुकूल परिणाम प्राप्त हो सकते हैं और वह जिस प्रकार से भी चाहे देवी या देवता को प्रत्यक्ष कर सकता है।

आगे चल कर कुछ पाखण्डी साधुओं ने तन्त्र का स्वरूप विकृत कर दिया। उन्होंने मद्य पीना, मांस खाना और चरस सुल्फे से अपनी आंखें लाल रखना ही तन्त्र मान लिया, इससे जन साधारण में तन्त्र के प्रति डर बैठ गया और उन्होंने तन्त्र का मतलब वशीकरण, सम्मोहन और मारण ही समझ लिया, जबकि तन्त्र का तात्पर्य पूर्णता के साथ साधना को सिद्ध करना है।

वेदों में भी तन्त्र की बहुत प्रशंसा की गई है, पौराणिक काल में तन्त्र को ही साधना का आधार माना है, उन दिनों लक्ष्मी प्राप्ति और लक्ष्मी से सम्बन्धित कई महत्वपूर्ण प्रयोग उजागर हुए, जिसके माध्यम से जन्म-जन्म की दरिद्रता

मिटाई जा सकती है, जीवन को सुख एवं वैभव युक्त बनाया जा सकता है, और लक्ष्मी को चिरस्थायी रूप से घर में स्थापित किया जा सकता है।

नीचे मैं कुछ अत्यन्त ही महत्वपूर्ण प्रयोग दे रहा हूं, जो कि अब तक जन साधारण में तो गोपनीय रहे हैं, पर उच्चकोटि के संन्यासियों और योगियों में इनकी सर्वत्र चर्चा रही है, प्रत्येक साधक को चाहिए, कि वे इन सभी प्रयोगों को सम्पन्न करें, जिससे कि वे लक्ष्मी को अपने अनुकूल बना सकें और जीवन में उसका लाभ उठा सकें।

दीपावली पर्व

शास्त्रों में केवल कार्तिक कृष्ण पक्ष अमावस्या को ही दीपावली नहीं कहते, अपितु पूरे कार्तिक मास को "लक्ष्मी मास" या "दीपावली मास" कहा गया है, कई साधकों ने तो कार्तिक के तीस दिनों में तीस प्रयोग सम्पन्न किये और रंक से राजा बन कर दिखा दिया कि यदि कोई साधक पक्का निश्चय कर ले तो वह अद्वितीय रूप से लक्ष्मी सिद्ध कर सकता है।

नीचे कुछ अत्यन्त ही दुर्लभ प्रयोग साधकों के लिए स्पष्ट कर रहा हूं, उनको चाहिए कि वे इन प्रयोगों को सम्पन्न करें, और मेरा तो अनुभव यह रहा है, कि तन्त्र के इन तीनों प्रयोगों को वे सम्पन्न करें, जिससे कि उनके जीवन में अद्वितीय सफलता प्राप्त हो सके।

१-मत्स्येन्द्रनाथ का लक्ष्मी आबद्ध प्रयोग

गुरु मछन्दरनाथ तो गोरखनाथ से भी ज्यादा सिद्ध योगी हुए हैं, तन्त्र के साक्षात् अवतार थे, उन्होंने अपनी पुस्तक में लक्ष्मी आबद्ध प्रयोग को देकर संसार पर महान उपकार किया है, यह प्रयोग कार्तिक कृष्ण पक्ष की अष्टमी को ही सम्पन्न किया जाता है, इस दिन को "अहोई दिवस" या "आठा दिवस" कहा जाता है, यह शब्द "अष्ट लक्ष्मी" का अपभ्रंश है, अतः साधकों को चाहिए कि इस दिन का अवश्य ही सदुपयोग करें।

इस दिन साधक प्रातःकाल उठ कर स्नान कर, पूजा स्थान में बैठ जाय सामने जल पात्र, कुंकुम, अक्षत आदि रखे, इस दिन लक्ष्मी को आबद्ध करने के लिए 'वरदायक लक्ष्मी युक्त गणेश विग्रह' पूजा का विधान है, यह मछन्दरनाथ द्वारा सम्पादित वरदायक लक्ष्मी गणेश मन्त्र से सिद्ध और प्राण प्रतिष्ठा युक्त

होना चाहिए ।

इसके बाद साधक गणपति को जल से स्नान कराकर पोंछ कर उनके पूरे शरीर पर केसर लगाये और "ॐ वरदायक महालक्ष्म्यै नमः" मन्त्र से १०८ बार थोड़े-थोड़े पीले रंग से रंगे हुए अक्षत चढ़ावे ।

इसके बाद मूल प्रयोग प्रारम्भ होता है, साधक को चाहिए कि वे पहले से ही १०८ पुष्प लाकर रख दे, इस बात का ध्यान रहे कि न तो एक भी पुष्प ज्यादा हो और न कम, फिर निम्न मन्त्र का उच्चारण कर, पुष्प चढ़ावे, इस प्रकार क्रम से एक-एक मन्त्र पढ़ता हुआ एक-एक पुष्प चढ़ाता रहे ।

मन्त्र

ॐ नमो वैताल कुबेर घरण गगन बांधूं, आठों दिशा नव नाथ बांधूं, लिछमी को घर में बांधूं, वैपार चढ़े, गज तुरंग बढ़े, कनक सरे, सब सिद्ध होय, जो न होय, रुद्र को त्रिशूल खण्डित होय ठं ठं ठं ॥

जब पूरे १०८ पुष्प गणपति पर चढ़ा दिये जांय तो हाथ जोड़ कर उनसे प्रार्थना करें कि लक्ष्मी गणेश हमारे घर में चिरस्थाई रूप से निवास करें और फिर उसी दिन उन गणपति को अपने पूजा स्थान में रख दें या तिजोरी में रख दें अथवा यदि व्यापार हो या दुकान हो तो अवश्य ही ले जाकर दुकान में जहां रुपये पैसे रखते हैं, वहां स्थापित कर दें ।

ऐसा करने पर अद्वितीय सफलता और आर्थिक व्यापारिक अनुकूलता उसी दिन से होने लगती है ।

२- रावण कृत लक्ष्मी कीलन प्रयोग

रावण अपने आप में तन्त्र का अद्भुत जानकार था, उसने ऋषि कुल में जन्म ले कर उच्चकोटि की तन्त्र साधनाएं सम्पन्न की, और अपने घर को धन-धान्य और समृद्धि से सम्पन्न कर दिया, "रावण संहिता" में इस प्रयोग को अत्यन्त दुर्लभ और महत्वपूर्ण बताया है ।

यह प्रयोग प्रति वर्ष कार्तिक शुक्ल पक्ष तृतिया को सम्पन्न होता है, अतः साधकों को चाहिए कि इस अवसर पर यह प्रयोग अवश्य ही सम्पन्न करें ।

साधक इस दिन रात्रि को स्नान कर लाल वस्त्र पहन कर उत्तर की ओर मुंह कर बैठ जांय और सामने किसी तांबे के पात्र में कुंकुम या केसर से निम्न प्रकार का लक्ष्मी आबद्ध यन्त्र बनावे, फिर इस यन्त्र की पूजा करें, इस यन्त्र पर अक्षत और पुष्प चढ़ावे।

यन्त्र

२	४	९
५	५	५
८	१	६

इसके बाद पहले से ही प्राप्त किये हुए प्रत्येक कोष्टक में एक-एक "लक्ष्मी वरवरद" स्थापित कर दें, इस प्रकार इस प्रयोग में "लक्ष्मी वरवरद" प्रयोग में लाये जाते हैं, जो नौ सिद्धियों के प्रतीक है, प्रत्येक "लक्ष्मी वरवरद" रावण कृत "ऋद्धि प्रयोग" से मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त हों, पाठक या साधक इस प्रकार के "लक्ष्मी वरवरद" कहीं से भी प्राप्त कर प्रयोग कर सकते हैं, लेकिन कार्यालय पाठकों के कल्याण हेतु ऐसे "लक्ष्मी वरवरद" भेजने की व्यवस्था कर सकता है।

इसके बाद प्रत्येक कोष्टक में एक-एक 'लक्ष्मी वरवरद' स्थापित कर दें और उसको जल, कुंकुम, अक्षत और पुष्प से पूजन करें फिर कमलगट्टे की माला से निम्न मन्त्र का जाप वहीं पर बैठे-बैठे करे।

मन्त्र

॥ ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं वर वरद लक्ष्मी आवद्ध आवद्ध फट् ॥

मन्त्र जप समाप्त होने पर उन सभी लक्ष्मी वरवरद को एक धागे में पिरो कर घर के द्वार पर टांग दें या घर में किसी स्थान पर टांग दे, जिससे कि उनको हवा स्पर्श करती रहे, ये लक्ष्मी वरवरद दुकान के द्वार पर भी टांगे जा सकते हैं।

जितने समय तक इनको स्पर्श कर हवा घर में या दुकान में आती रहेगी तब तक निरन्तर आर्थिक व्यापारिक उन्नति होती रहेगी, प्रयत्न यह करना चाहिए

कि धागा मजबूत हो और पूरे वर्ष भर ये लक्ष्मी बरबरद टंगे रहने चाहिए, जिससे इनसे स्पर्श कर वायु घर में या दुकान में प्रवेश होती रहे।

वास्तव में ही यह एक दुर्लभ और महत्वपूर्ण प्रयोग है जो साधकों को ठीक समय पर सम्पन्न करना चाहिए।

३- गुरु गोरखनाथ कृत लक्ष्मी कीलन प्रयोग

गोरखनाथ ने इस प्रयोग को अत्यन्त ही महत्वपूर्ण बताया है और यह कहा है कि अन्य कोई भी तन्त्र खण्डित हो सकता है, परन्तु यह प्रयोग अपने आप में कभी भी कमजोर नहीं होता, इसका निश्चित और अनुकूल परिणाम प्राप्त होता ही है, मेरे व्यक्तिगत अनुभव में भी यह अपने आपमें दुर्लभ और महत्वपूर्ण प्रयोग है और निश्चय ही पूर्ण सफलता प्राप्त होती है।

यह प्रयोग कार्तिक शुक्ल पक्ष नवमी को ही सम्पन्न किया जा सकता है, अतः साधकों को चाहिए कि इस दिन इस प्रयोग को अवश्य ही सम्पन्न करें।

इस दिन रात्रि को साधक स्नान कर पीले वस्त्र धारण कर पीले आसन पर या मृगछाला को बिछा कर उस पर बैठ जाय, उत्तर की ओर मुंह करे, सामने पांच तेल के दीपक लगा दे और किसी सफेद कागज पर निम्न गोरखनाथ प्रणीत लक्ष्मी कीलन यन्त्र को अपने हाथ से कागज पर अंकित करे यह अंकन चन्दन से, केसर से या कुंकुंम से किया जा सकता है।

लक्ष्मी कीलन यन्त्र

६	६
६	६

इसके बाद इस यन्त्र के बीच में गोरखनाथ मन्त्र सिद्ध "सियारसिंगी" को स्थापित कर दें, इस बात का ध्यान रखें कि पहले किसी भी पूजा या प्रयोग में उपयोग की गई सियारसिंगी का प्रयोग नहीं किया जा सकता, इसके अलावा यह प्रामाणिक सियारसिंगी होनी चाहिए, और गुरु गोरखनाथ ने अपने ग्रन्थ में जिस प्रकार से बताया है उस प्रकार से लक्ष्मी कीलन प्रयोग से सिद्ध होनी चाहिए।

इसके बाद सियारसिंगी पर निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए पुष्प चढ़ावे, इसमें किसी भी प्रकार के पुष्पों का प्रयोग किया जा सकता है, दो बार मन्त्र पढ़ कर एक पुष्प चढ़ावे, इस प्रकार साधकों को मात्र १०८ पुष्प चढ़ाने हैं और मात्र २१६ बार मन्त्र उच्चारण करना है, इसे सम्पुटित प्रयोग कहा जाता है, इसका तात्पर्य यह है कि पुष्प के ऊपर और नीचे लक्ष्मी को आबद्ध किया जाता है।

मन्त्र

॥ कामरूप देश कामाख्या देवी जहां बसे लक्ष्मी महा-
रानी। आवे घर में, जम कर बैठे, सिद्ध होय मेरो
सब कारज सिद्ध करे, जो चाहूं सो होय ह्रीं ह्रीं फट् ॥

जब मन्त्र जप पूरा हो जाय तो साधक रात को वहीं बिस्तर बिछा कर सोवे, इस बात का ध्यान रहे कि सारी रात एक घी का और एक तेल का दीपक लगा रहे, सोने से पहले साधक जिन जिन प्रश्नों के उत्तर जानना चाहता है, वे सारे प्रश्न एक कागज पर लिख कर अपने सिरहाने तकिये के नीचे रख कर सोवे, या अपनी जो जो इच्छाएं हों, उनको भी लिख कर सिर के नीचे रख कर सो सकते हैं।

रात को अवश्य ही पूछे गये प्रश्नों का उत्तर प्राप्त होता है, उदाहरण के लिए लॉटरी का नम्बर क्या हो सकता है, या अमुक के साथ व्यापार करना ठीक रहेगा या नहीं, आदि किसी भी प्रकार के प्रश्न हो सकते हैं।

प्रातःकाल उठ कर उस सियारसिंगी को घर में जहां रुपये पैसे रखते हैं, वहां पर भली प्रकार से स्थापित कर दे, और जो कागज पर लक्ष्मी आबद्ध यन्त्र अंकन किया था, उसको समेट कर एक ताबीज में भर दें और उस ताबीज को अपने गले में धारण कर लें या बांह पर बांध लें।

यों लक्ष्मी आबद्ध यन्त्र जो आप पहिनेंगे, वह तो अक्षय भण्डार और अटूट लक्ष्मी प्राप्ति के लिए वरदान स्वरूप है ही।

यज्ञ से लक्ष्मी प्राप्ति

हमारे ऋषियों ने लक्ष्मी को प्राप्त करने और घर में परिवार में उसे चिरस्थायित्व देने के लिए कई साधनाएं स्पष्ट की परन्तु अन्त में उनका निर्णय यही रहा कि यदि श्री सूक्त साधना पद्धति से यज्ञ का सम्बन्ध कर दिया जाय तो निश्चित रूप से लक्ष्मी प्राप्त होती है और वह हमेशा-हमेशा के लिए घर में बनी रहती है।

यह प्रयोग अपने आप में इतना महत्वपूर्ण है, कि आज हजारों वर्ष बीत जाने के बावजूद भी साधकों ने यह अनुभव किया है कि इस प्रकार के प्रयोग से लक्ष्मी की प्राप्ति निश्चित रूप से होती ही है, इस प्रयोग को वर्ष में एक बार "श्री पंचमी" को किया जाता है, श्री पंचमी कार्तिक शुक्ल पक्ष पंचमी को कहते हैं, यदि साधक चाहें तो पूरे वर्ष भर प्रत्येक मास की शुक्ल पक्ष की पंचमी को भी यह प्रयोग सम्पन्न कर सकते हैं।

श्री पंचमी को साधक प्रातःकाल उठ कर स्नान कर सफेद वस्त्र धारण कर सफेद आसन बिछा कर पूर्व की ओर मुंह कर बैठ जाय सामने श्रीयन्त्र स्थापित कर दे, यह यन्त्र धातु निर्मित मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त होना चाहिए और साथ ही साथ श्री साधना से समन्वित होना चाहिए, धातु निर्मित होने की वजह से यह श्री यन्त्र साधक के घर में कई-कई पीढ़ियों तक रह सकता है।

साधक श्रीयन्त्र को जल से स्नान करा कर दूध, दही, घी, शहद और शक्कर से श्रीयन्त्र को स्नान करावे और फिर शुद्ध जल से धोकर उस पर केसर का तिलक करे और सामने किसी पात्र में स्थापित कर दे, और उस पर अक्षत, पुष्प आदि समर्पित करे, उसके पास ही भगवती लक्ष्मी का चित्र भी स्थापित कर दे और सामने छोटे से यज्ञ कुण्ड में अग्नि प्रज्वलित करे।

साधक को चाहिए कि वह पहले से ही तांबे का एक छोटा सा यज्ञ कुण्ड बनवा ले, यदि यह सम्भव न हो तो किसी पीतल की थाली में भी अग्नि प्रज्वलित कर सकते है या जमीन पर रेत बिछा कर उस पर गोबर के कण्डों या छोटी-छोटी लकड़ियों के माध्यम से अग्नि प्रज्वलित की जा सकती है, उसके बाद शुद्ध घृत की मात्र १६ आहुतियां निम्न श्री सूक्त से दे, श्री सूक्त में १६ पद हैं और प्रत्येक पद का उच्चारण कर घी और उसमें एक कमलगट्टे का बीज डाल कर अग्नि में समर्पित कर दे, यह प्रयोग चम्मच के द्वारा हो सकता है, कमलगट्टे के बीज आप कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं, इस प्रकार श्री पंचमी को मात्र सोलह आहुतियां दी जाती है।

यज्ञ समाप्त होने के बाद साधक सम्भव हो तो, किसी कुंवारी कन्या को भोजन करा दे या ब्राह्मण को भोजन करा दे, अथवा किसी मन्दिर में भोजन चढ़ा दे और फिर स्वयं प्रसन्नता के साथ भोजन करे।

इस प्रकार का प्रयोग वर्ष में एक बार श्री पंचमी को तो अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए, यदि उसके लिए सम्भव हो तो साल में प्रत्येक महीने शुक्ल पक्ष की पंचमी को भी यह प्रयोग कर सकता है।

यह प्रयोग अपने आप में अद्भुत और आश्चर्यजनक सफलतादायक है, आप स्वयं इस प्रयोग को करके देख लीजिये।

आगे मैं श्री सूक्त को स्पष्ट कर रहा हूं—

श्री सूक्त

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्ण रजतस्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदोममावह ॥ १ ॥
तां आवह जात-वेदोलक्ष्मीमनप-गामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विदेय गामश्वं पुरुषानहम् ॥ २ ॥
अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीम्।
श्रियां देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् ॥ ३ ॥
कांसोस्मितां हिरण्य प्राकारामार्द्रां ज्वलंती तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ ४ ॥

चन्द्रां प्रभासं यशसाज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् ।
तां प्रपद्ये नेमि शरणमहं पद्मे अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि ॥ ५ ॥
आदित्यवर्णे तपसोधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोथबिल्वः ।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायांतरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः ॥ ६ ॥

उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह ।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेस्मिन कीर्तिमृद्धि ददातु मे ॥ ७ ॥
क्षुत् पिपासामलां ज्येष्ठा अलक्ष्मी नाशयाम्यहम् ।
अभूतिमसमृद्धि च सर्वान् निर्णुद मे गृहात् ॥ ८ ॥
गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टांकरीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ ९ ॥
मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि ।
पशुनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥ १० ॥
कर्दमेन प्रजाभूता मयी सम्भ्रम कर्दम ।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥ ११ ॥
आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लित वस मे गृहे ।
निचदेवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥ १२ ॥
आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं सुवर्णां हेम-मालिनीम् ।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो ममावह ॥ १३ ॥
आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं पिंगलां पद्म-मालिनीम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो ममावह ॥ १४ ॥
तां म आवह जात-वेदो लक्ष्मी मनप-गामिनीम् ।
यस्यां हिरण्य विन्देयं गावो दास्योश्वान् विन्देयं पुरुषानहम् ।१५।

फल-श्रुति

यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहूयादाज्यमन्वहम् ।
श्रियः पञ्चदशर्चंश्च श्रीकामः सततजपेत् ॥ १६ ॥

卐

धनदायक लक्ष्मी प्रयोग

यंत्र साधना अपने आप में अत्यन्त महत्वपूर्ण साधना है, यन्त्र का तात्पर्य एक व्यवस्थित तरीके से लक्ष्मी का निवास स्थान बनाना है, एक ऐसी प्रक्रिया जिसके माध्यम से लक्ष्मी को कीलित किया जा सकता है, लक्ष्मी का आह्वान किया जा सकता है और लक्ष्मी को स्थाई रूप से स्थापित किया जा सकता है।

यन्त्र का विधान तो प्राचीन काल से है, श्री यन्त्र, कनकधारा यन्त्र आदि इसी परम्परा से हैं, मुझे पिछले दिनों उड़ीसा में एक साधु के पास भोज पत्र पर लिखी एक पुस्तिका प्राप्त हुई थी, जिसमें लक्ष्मी से सम्बन्धित अचूक प्रयोग दिये हुए थे, मैंने स्वयं यह अनुभव किया कि उनके माध्यम से यह साधु जंगल में भी आनन्दपूर्वक रहता था, उसके पास धन की कोई कमी नहीं रहती थी, झोली से वह जितना भी और जो भी चाहता वह उसे प्राप्त हो जाता था, बातचीत के प्रसंग में उस साधु ने यह स्वीकार किया कि इस पुस्तिका में जो लक्ष्मी से संबंधित यन्त्र एवं प्रयोग दिये हैं उनको करने से ही मेरे जीवन में यह अनुकूलता प्राप्त हुई है और मैंने जिन-जिन शिष्यों को या गृहस्थ भक्तों को ये साधनाएं बताई है, उन्होंने ऐसा करके पूर्ण सफलता प्राप्त की और उनके जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहा।

उसी पुस्तिका में दिये हुए कुछ प्रयोग मैं आगे की पंक्तियों में अपने पाठकों एवं साधकों के लिए स्पष्ट कर रहा हूं।

१- चिरस्थायी लक्ष्मी प्रयोग

किसी भी सोमवार को यह प्रयोग सम्पन्न किया जा सकता है; पर यदि श्रावण, भाद्रपद और कार्तिक मास में किसी सोमवार को यह प्रयोग सम्पन्न करें

तो यह ज्यादा अनुकूल रहता है।

रात्रि के समय साधक केवल एक धोती पहन कर बैठे, यदि स्त्री साधिका हो तो केवल एक साड़ी पहिने, जो कि पीले रंग में रंगी हुई हो उसके बाद सामने पांच तेल के दीपक लगा लें और किसी थाली में निम्न प्रकार से चिरस्थायी लक्ष्मी यन्त्र बनावे, यह अंकन त्रिगन्ध से हो, त्रिगन्ध में कुंकुम, केसर और कपूर होता है, इसमें मात्रा कम ज्यादा हो सकती है, थाली स्टील या लोहे की न हो, इसके अलावा किसी भी धातु की हो सकती है।

यन्त्र

यन्त्र बनाते समय "ॐ महालक्ष्म्यै नमः" का निरन्तर उच्चारण करना चाहिए, और फिर इस यन्त्र के चारों ओर चार दीये रख दें, और एक दीया बीच में रख दें, फिर इस यन्त्र के आगे पांच चावल की ढेरियां बनावें और प्रत्येक ढेरी पर एक-एक रुद्राक्ष, जो गोल आकृति का हो, रख दें, इस प्रकार इस प्रयोग में पांच रुद्राक्ष का प्रयोग होता है, इसके बाद इनकी जल से फिर कुंकुम से पूजा करें, और पांचों पर एक-एक गुलाब का पुष्प चढ़ावें और फिर सामने बैठ कर कमलगट्टे की माला से ग्यारह माला मन्त्र जप निम्न मन्त्र की करें—

मन्त्र

॥ मरदम आल हवाली का ऐं ह्लीं ह्रीं चल ॥

जब मन्त्र जप पूरा हो जाय, तो साधक उन पांचों रुद्राक्षों के सामने दूध का बना हुआ प्रसाद चढ़ावे, और फिर थोड़ा-थोड़ा प्रसाद स्वयं ग्रहण कर ले, रात को वहीं पर सोवे, दूसरे दिन सुबह उठकर वह प्रसाद तो बालकों में और परिवार के लोगों में वितरित कर दे और उन पांचों रुद्राक्षों तथा चावल को घर में ही जमीन में गाड़ दे, तो चिरस्थायी लक्ष्मी प्रयोग सम्पन्न होता है, और आगे के पूरे

जीवन में घर में लक्ष्मी का वास निरन्तर बना रहता है।

दीपक सारी रात जलते रहें, सुबह उन दीपकों को घर के बाहर दक्षिण दिशा की ओर फेंक दे, इस प्रकार यदि इस प्रयोग को कार्तिक मास के किसी भी सोमवार को सम्पन्न किया जाय तो इसके तुरन्त आश्चर्यजनक परिणाम देखने को मिलते हैं।

२- भाग्योदय लक्ष्मी प्रयोग

इस प्रयोग को किसी भी शुक्रवार को सम्पन्न किया जाता है और यह अचूक है, इस प्रयोग को करने से घर की दरिद्रता समाप्त होती है, और आश्चर्यजनक रूप से व्यापार वृद्धि, आर्थिक उन्नति, प्रमोशन और लाभ प्राप्त होने लगता है, वास्तव में ही यह प्रयोग कलियुग में एक वरदान स्वरूप है।

शुक्रवार की रात्रि को साधक स्नान करके पीली धोती धारण कर बैठ जाय और सामने भोज पत्र पर निम्न भाग्योदय लक्ष्मी यन्त्र का निर्माण त्रिगन्ध से करे, भोज पत्र चार अंगुल लम्बा और चार अंगुल चौड़ा होना चाहिए।

जब इस भोज पत्र पर यन्त्र का निर्माण हो जाय तो इस यन्त्र के चारों ओर १०८ बार "श्रीं" अक्षर लिखे और यन्त्र के मध्य में बिल्ली की नाल स्थापित कर दे।

भाग्योदय लक्ष्मी यन्त्र
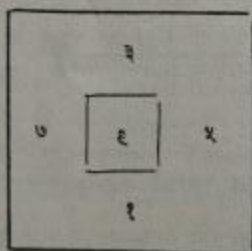
इसके बाद बिल्ली की नाल को भगवती लक्ष्मी का स्वरूप मान कर उसकी जल से, केशर से, चावलों से, पुष्पों से और नैवेद्य से पूजा करे और फिर उसके सामने ही तेल के दीपक लगाये जो कि सारी रात जलते रहने चाहिए, इसके बाद

वहीं पर बैठ कर तीन माला निम्न मन्त्र का जप करे—

मन्त्र

॥ ॐ लिछमी कील महालछमी कीलूं, कीलूं जगत संसार
न कीले तो वीर विक्रमादित्य की श्राण ठं ठं ठं ॥

जब मन्त्र जप पूरा हो जाय तो साधक वहीं पर रात्रि को सो जाय और सुबह उठ कर उस बिल्ली की नाल को भोज पत्र में लपेट कर अपने सन्दूक में रख दे, तो कुछ ही दिनों में आश्चर्यजनक रूप से आर्थिक उन्नति और व्यापार वृद्धि अनुभव करेगा।

यदि साधक के व्यापार हो तो व्यापारिक स्थल पर भी इस प्रकार के भोज पत्र को बिल्ली की नाल में लपेट कर रख सकता है।

वास्तव में ही यह प्रयोग अपने आप में अचूक और अद्वितीय है, उक्त मास में यह प्रयोग करने पर विशेष अनुकूलता अनुभव होती है।

३- दरिद्रता निवारक लक्ष्मी प्रयोग

यह प्रयोग किसी भी मंगलवार को किया जाता है, उस पुस्तिका में बताया है कि मंगलवार की आधी रात को साधक लाल धोती और स्त्री साधिका हो तो लाल साड़ी पहन कर बैठ जाय और सामने एक बड़ा सा दीपक लगा दे।

इसके बाद एक कांसे की थाली या कांसे की प्लेट को दीपक की लौ के ऊपर थोड़ी देर रखने पर उस थाली पर कालिख सी लग जायेगी।

फिर किसी तिनके से उस थाली में ही भगवती लक्ष्मी का चित्र बनावें, यदि आप अच्छे चित्रकार न हों तो इसमें चिन्ता करने की जरूरत नहीं है, एक स्त्री की आकृति बना दें जो लक्ष्मी जैसी हो, फिर इस थाली को अपने सामने रख दें, और उस लक्ष्मी के चित्र के चारों ओर २१ कमल बीज रख दें।

इसके बाद उस लक्ष्मी के चित्र और उन कमल बीजों की पूजा करें, उनके सामने भोग लगावें और निम्न मन्त्र की २१ माला जप करें इस मन्त्र जप में मूंगे

की माला का ही प्रयोग किया जाता है।

मन्त्र

॥ ॐ ह्रीं यं लक्ष्मी श्रं ह्रीं ॐ ॥

जब मन्त्र जप पूरा हो जाय तब चढ़ाये हुए प्रसाद को थोड़ा सा ग्रहण कर ले और रात्रि को वहीं सोवे, दीपक रात भर जलता रहना चाहिए।

सुबह उठ कर कमल बीजों को अपने घर में जमीन में गाड़ दे तो आने के जीवन भर के लिए घर में लक्ष्मी का वास बना रहता है, और साधक अपने जीवन में निरन्तर उन्नति करता रहता है।

इस लेख में जहां-जहां पर भी जमीन में गाड़ने का विधान आया है, यदि साधक चाहे तो लाल वस्त्र में उन वस्तुओं को बांध कर घर के किसी कोने में रख दे तो वह भी गड़ा हुआ ही माना जाता है।

यह प्रयोग अपने आप में अत्यन्त महत्वपूर्ण और चमत्कारिक है, यदि साधक श्रावण और कातिक मास में इस प्रयोग को करे तो और ज्यादा अनुकूलता प्राप्त हो सकती है।

४- आकस्मिक धन प्राप्ति लक्ष्मी प्रयोग

यह एक ऐसा प्रयोग है जिसके माध्यम से यदि साधक चाहे तो जुए में सफलता प्राप्त कर सकता है, यह प्रयोग किसी भी रविवार की रात्रि को सम्पन्न किया जा सकता है, यदि श्रावण और कातिक मास में यह प्रयोग हो तो विशेष अनुकूलता प्राप्त होती है।

साधक को चाहिए कि वह रविवार की रात्रि को सर्वथा नग्न होकर स्नान करे और फिर पहले से ही धोकर सुखाये हुए वस्त्र को पहिन ले, इसमें किसी भी प्रकार का वस्त्र पहना जा सकता है।

इसके बाद सामने एक सफेद कागज का टुकड़ा रख दे और उस पर केसर से निम्न यन्त्र का अंकन करे।

यन्त्र

श्री	श्री	श्री
श्री	श्री	श्री
श्री	श्री	श्री

फिर यन्त्र के मध्य में मन्त्र सिद्ध 'हत्था जोड़ी' रख दे, यह हत्था जोड़ी असली प्रामाणिक और लक्ष्मी मन्त्रों से सिद्ध हो,

हत्था जोड़ी तो भगवती लक्ष्मी का साक्षात स्वरूप मानी गयी है, फिर हत्था जोड़ी को सिन्दूर से रंग दे, साधक को चाहिए कि वह सिन्दूर पहले से ही मंगा कर रखे, और तेल या घी में सिन्दूर को घोल कर इस हत्था जोड़ी पर लगा दे और उसे यन्त्र के मध्य में स्थापित कर दे।

इसके बाद जल, केसर, चावल, पुष्प और प्रसाद से हत्था जोड़ी तथा यन्त्र का पूजन करे और कमलगट्टे की माला से निम्न मन्त्र की नौ माला फेरे, ऐसा करने पर हत्था जोड़ी पूर्ण मन्त्र चैतन्य हो जाती है।

मन्त्र

॥ ॐ ह्लीं ह्लीं क्लीं क्लीं मुलि मुलि हिलि हिलि ॐ ॥

रात्रि को साधक वहीं पर सोवे, पास में एक डायरी और पेन रख दे, जिससे कि रात्रि को जिस प्रकार का स्वप्न आवे या स्वप्न में जो आदेश हो, उसको याद रखने के लिए कागज पर लिख सके।

दूसरे दिन सुबह उठ कर स्नान कर जिस कागज पर यन्त्र अंकन किया था, उस कागज में हत्था जोड़ी को लपेट ले, और उस पर गुलाबी रंग का धागा लपेट कर बांध दे।

इसके बाद जब भी साधक जुआ खेलने जावे या घुड़ दौड़ अथवा लॉटरी का

टिकट या इसी प्रकार के किसी कार्य में जावे तो उसे पूरी सफलता मिलती है, और जब तक वह जुआ खेलता है, बराबर जीतता जाता है ।

यह अपने आप में अद्भुत और प्रामाणिक प्रयोग है, इस प्रयोग के माध्यम से कई साधकों ने लाभ उठाया है

वास्तव में ही भारतीय साधना साहित्य में कई ऐसे महत्वपूर्ण प्रयोग है, जो अपने आप में आश्चर्यजनक है, आवश्यकता है, धैर्य की, विश्वास की और पूरी क्षमता के साथ साधना सम्पन्न करने की ।

मुझे विश्वास है कि इस लेख में अंकित प्रयोगों को साधक सम्पन्न करेंगे, और अपने जीवन में पूर्ण लाभ प्राप्त कर सकेंगे ।

卐

पृथ्वी से गड़ा धन निकालने का प्रयोग

इस प्रयोग को सम्पन्न करने के लिए कुबेर पात्र, स्वर्णाकर्षण गुटिका, कमलगट्टे की माला, जल पात्र, शुद्ध घृत का दीपक, अगरबत्ती आदि सामग्री की व्यवस्था कर शनिवार को रात्रि ९.१७ से ९.५२ के बीच स्नान कर पीली धोती धारण करे, और पूर्व दिशा की ओर मुंह कर बैठे ।

सबसे पहले अपने सामने स्वर्णपात्र में स्वर्णाकर्षण गुटिका को जल से स्नान करा कर केसर का तिलक कर पुष्प चढ़ावे, सामने अगरबत्ती और दीपक लगा कर निम्न मन्त्र का सवा लाख जप करे—

मन्त्र

।। ॐ नमो भगवती सुमेरु रूप धारायै महाकान्तायै कालरूपायै सर्व प्रेत पिशाच बाधा निवृत्तये भूगर्भ द्रव्य परिलक्षायै फट् स्वाहा ।।

मन्त्र जप पूरा होने पर जहां गड़ा धन होने की सम्भावना होती है वहां शनिवार को कुबेर पात्र गाड़ दे और स्वर्णाकर्षण गुटिका को उसी रात्रि को अपने सिरहाने रख कर सो जावे, स्वप्न में धन के बारे में पूरी जानकारी अवश्य प्राप्त होगी ।

सौभाग्य आपका द्वार खटखटा रहा है

साबर मन्त्र सर्वाधिक महत्वपूर्ण और अचूक प्रभाव युक्त है, गोस्वामी तुलसीदासजी ने रामचरितमानस में अपने विचार प्रगट करते हुए बताया है कि श्री उमा महेश्वर ने कलियुग के प्राणियों पर दया करने के लिए साबर मन्त्रों की रचना की है, जिससे कि वे अपने जीवन के कष्टों और अभावों को दूर कर सकें।

कलि विलोकि जगहित हर गिरिजा।
साबर मन्त्रजाल जिन्ह सिरिजा॥

अनमिल आखर अरथ न जापू। प्रगट प्रभाव महेस कृपालू॥

यद्यपि इन मन्त्रों में वर्णित अक्षरों का परस्पर कोई विशेष सम्बन्ध दिखाई नहीं देता परन्तु इनका लक्ष्य अचूक होता है, इसका कारण यह है कि अन्य सभी मन्त्र कीलित किये हुए हैं और उत्कीलन से ही अपना प्रभाव दिखाते है वहीं साबर मन्त्रों को कीलित नहीं किया गया है, इसलिए अन्य मन्त्रों की अपेक्षा कम समय में साधना करने पर ये मन्त्र सिद्ध हो जाते हैं।

कलियुग में साबर मन्त्र जल्दी और तुरन्त असर करते है, जो साधक ज्यादा जटिल विधि-विधान में जाने की जरूरत महसूस नहीं करते उन साधकों को चाहिए कि वे अवश्य ही साबर साधनाओं का उपयोग करें और इसके माध्यम से अचूक सफलता प्राप्त करें।

मैं कुछ महत्वपूर्ण लक्ष्मी प्राप्ति के लिए साबर साधनाएं दे रहा हूं, जो यदि की जाय तो निश्चय ही कार्य में सफलता प्राप्त होती है।

अद्भुत कार्य सिद्धि प्रयोग

यह कार्य सिद्धि प्रयोग यों तो किसी भी दिन किया जा सकता है, परन्तु साबर साधनाओं के अनुसार पूरे साल में प्रत्येक मास के शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी के दिन इस प्रयोग को कर सकते हैं यों यदि कार्तिक शुक्ल त्रयोदशी के दिन इस प्रयोग को किया जाय तो आश्चर्यजनक रूप से सफलता प्राप्त होती है।

रात्रि को साधक स्नान कर लाल धोती धारण कर आसन पर बैठ जाय, इसके बाद जमीन पर कुंकुंम से एक त्रिकोण बनावे और उसके सामने एक चौमुखा दीपक लगावे, एक ही दीपक में चार बत्तियां डाल कर लगाने से वह चौमुखा दीपक माना जाता है, यह तेल का दीपक होना चाहिए।

फिर इस त्रिकोण के मध्य में सरसों की ढेरी बना कर उस पर एक हत्था जोड़ी रख देनी चाहिए, यह हत्था जोड़ी अपने आप में साबर मन्त्र से सिद्ध होनी चाहिए, रखने से पूर्व उसे सिन्दूर से रंग देनी चाहिए, और फिर त्रिकोण के सामने नैवेद्य रख देना चाहिए।

इसके साथ ही साथ एक सफेद कागज पर साधक कम से कम तीन प्रश्न या अपनी तीन इच्छाएं लिख दे, जिन इच्छाओं को वह जल्दी से जल्दी पूरा करना चाहता है, इसके बाद हकीक माला से निम्न मन्त्र की पांच माला मन्त्र जप करे।

मन्त्र

ॐ नमो काली कंकाली महाकाली के पूत कंकाली भैरव हुक्मे हाजिर रहे मेरा भेजा तुरन्त करे रक्षा करे आन बांधू बान बांधू चलते फिरते को औसन बांधू दश मुखा बांधू नौ नाड़ी बहत्तर कोठा बांधू फूल में भेजूं फेल में जाय काठे जी पड़े थर थर कांपे, हल हल हले गिर गिर पड़े उठ उठ भगे बक बक बके मेरा भेजा सवा घड़ी पहर सवा दिन सवा मास सवा बरस का बावला न करे तो काली माता की सैया पर पांव धरे, वचन जो चूके समुद्र सूखे, वाचा छोड़ कुवाचा करे तो धोबी की नाद चमार के कुण्ड में पड़े, मेरा भेजा बावला न करे तो रुद्र के नेत्र से अग्नि ज्वाला कढ़े, सिर की जटा टूटी भूमि पर गिरे, माता पार्वती के चीर पै चोट पड़े, बिना हुक्म नहीं मरना हो, काली कंकाल भैरव फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ॥

ऐसा करने पर हाथों हाथ सफलता प्राप्त हो जाती है, और यह प्रयोग अपने आप में इतना महत्वपूर्ण है कि देखते ही देखते व्यक्ति आर्थिक उन्नति, व्यापारिक सफलता, शत्रु नाश तथा प्रत्येक कार्य में सफलता प्राप्त कर लेता है।

मन्त्र जप करने के बाद हत्था जोड़ी को संभाल कर जहां रुपये-पैसे रखते हैं, वहां रख देनी चाहिए, यह हत्था जोड़ी आप कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं।

वास्तव में ही यह प्रयोग आश्चर्यजनक रूप से सफलतादायक है और इसके माध्यम से मैंने स्वयं अपने कठिन कार्यों को आसानी से सम्पन्न किये हैं।

अटूट धन प्राप्ति प्रयोग

यह भी साबर प्रयोग है, इस प्रयोग को किसी भी शुक्रवार की रात्रि को सम्पन्न किया जा सकता है, साबर ग्रन्थों में यह बताया है कि यदि कातिक पूर्णिमा को यह प्रयोग किया जाय तो विशेष रूप से अनुकूल रहता है।

कातिक पूर्णिमा की रात्रि को साधक ठीक आधी रात के समय स्नान करके लाल वस्त्र धारण कर लाल आसन पर दक्षिण दिशा की ओर मुंह करके बैठ जाय और सामने जमीन पर ही एक त्रिकोण बनावे जो कि कुंकुंम से बनाया जा सकता है, त्रिकोण के एक कोने पर पांच हकीक पत्थर, दूसरे कोने पर पांच मूंगे के टुकड़े तथा तीसरे कोने पर पांच रुद्राक्ष के दाने रख दे इसमें किसी भी कोने में किसी भी सामग्री का प्रयोग किया जा सकता है।

इसके बाद प्रत्येक कोने के सामने एक एक तेल का दीपक लगा दे, और त्रिकोण के मध्य में सरसों की ढेरी बना कर उस पर चौमुखा दीपक लगा दे, यह तेल का दीपक होना चाहिए।

इसके बाद हकीक माला से २१ माला निम्न मन्त्र का जप करे।

मन्त्र

ॐ नमो आदेश श्री गुरु को गजानन वीर बसे मसान अब दो ऋद्धि का वरदान जो जो मांगूं सो सो आन पांच लड्डू सिर सिन्दूर हाट बाट का, माटी मसान की, सब ऋद्धि हमारे पास पठेव शब्द सांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ॥

मन्त्र जप पूरा होने पर साधक को चाहिए कि वह रात को वहीं पर सोवे, सुबह उठ कर पूजा में प्रयुक्त हकीक पत्थर आदि सारी सामग्री इकट्ठी कर लाल कपड़े में बांध कर घर के किसी कोने में रख दे तो अटूट लक्ष्मी प्राप्ति होती रहती है, और कुछ ही दिनों में इसका अनुभव एवं लाभ मिलने लग जाता है।

वास्तव में ही यह प्रयोग इतना अधिक महत्वपूर्ण है कि कई लोगों को तो दूसरे दिन सुबह ही लक्ष्मी प्राप्ति अनुभव होने लग जाती है।

बिक्री बढ़ाने का प्रयोग

इस प्रयोग को किसी भी रविवार के दिन किया जा सकता है, साबर ग्रन्थों के अनुसार कार्तिक मास की शुक्ल पक्ष की चतुर्थी को यह प्रयोग किया जाय तो विशेष अनुकूल रहता है।

रविवार की रात्रि को साधक स्नान करके बैठ जाय और सामने उड़द की ढेरी बना कर इस पर बिल्ली की नाल रख दे, यह बिल्ली की नाल साबर मन्त्र से सिद्ध होनी चाहिए, और इस बात का ध्यान रहे कि इसके पहले इस पर किसी प्रकार का कोई प्रयोग किया हुआ न हो।

इसके बाद सामने एक तेल का दीपक लगा दे, यह प्रयोग साधक यदि दुकान में करे तो और ज्यादा अनुकूलता प्राप्त हो सकेगी, यों इस प्रयोग को अपने घर पर भी किया जा सकता है।

इसके बाद बिल्ली की नाल के सामने लड्डू का भोग लगावे और निम्न मन्त्र की २१ माला मन्त्र जप करे—

मन्त्र

॥ श्री शुक्ले महाशुक्ले कमलदल निवास महालक्ष्म्यै नमो नमः
लक्ष्मी माई सत्य की सवाई आवो माई करो भलाई, ना
करो तो सात समुद्र की दुहाई ऋद्धि सिद्धि खावोगी तो
नौ नाथ चौरासी सिद्ध की दुहाई ॥

मन्त्र जप के बाद बिल्ली की नाल को किसी कपड़े में बांध कर या कागज में लपेट कर दुकान में किसी सुरक्षित स्थान पर रख दे और जो उड़द की ढेरी

बिछी हुई थी वे उड़द लेकर दुकान के सामने बिखेर दे, या यह कार्य दूसरे दिन सुबह भी किया जा सकता है, जिससे कि दुकान पर यदि किसी ने टोना टोटका कर दिया हो या व्यापार बांध दिया हो तो वह प्रभाव भी समाप्त हो जाता है।

ऐसा करने पर आश्चर्यजनक रूप से बिक्री बढ़ जाती है और साधक एहसास करने लग जाता है कि वास्तव में ही साबर साधनाएं अपने आप में महत्वपूर्ण और सफल है।

लक्ष्मी प्रत्यक्ष प्रगट करने का प्रयोग

यह प्रयोग दीपावली की रात्रि को सम्पन्न किया जाता है, यों तो पूरे साल में प्रत्येक मास की किसी भी अमावस्या की रात्रि को यह प्रयोग सम्पन्न कर सकते हैं।

रात्रि को साधक स्नान कर पीली धोती पहन कर और पीला आसन बिछा कर उत्तर दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाय और सामने जमीन पर ही पांच त्रिकोण बनावे, प्रत्येक त्रिकोण के मध्य में पीले चावलों की ढेरी बनावे और प्रत्येक ढेरी पर एक-एक लघु नारियल रखे, लघु नारियल एक अंगूठे के बराबर होता है परन्तु यह ध्यान रहे कि साबर लक्ष्मी मन्त्र से सिद्ध और प्राण प्रतिष्ठा युक्त लघु नारियल ही प्रयोग में लेना चाहिए।

इसके बाद साधक प्रत्येक त्रिकोण के सामने एक-एक तेल का दीपक लगा दे और मूंगे की माला से मन्त्र जप करे, इसमें २१ माला मन्त्र जप करने का विधान है और यह साधना रात्रि को १२ बजे के बाद करनी चाहिए।

मन्त्र

॥ ॐ नमो महादेवी सर्व कार्य सिद्ध करणी जो पाता पूरे
ब्रह्मा विष्णु महेश तीनों देवतन मेरी भक्ति गुरु की शक्ति
श्री गुरु गोरखनाथ की दुहाई फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ॥

यदि साधक पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ प्रयोग करे, तो चतुर्भुजा लक्ष्मी स्वयं साक्षात् प्रगट होकर साधक को मनोवांछित वरदान प्रदान करती है और जीवन भर के लिए उसके घर में स्थाई रूप से बनी रहती है।

जब लक्ष्मी प्रगट हो तो पहले से ही मंगा कर रखा हुआ फूलों का हार उसके गले में पहना दे, ऐसा करने पर लक्ष्मी प्रगट सिद्धि सम्पन्न हो जाती है।

प्रातःकाल उठ कर उन पांच लघु नारियलों में से एक नारियल अपने घर में रख दे, दूसरा अपने दुकान या व्यापारिक स्थल पर रख दे, तीसरा ब्राह्मण को दान कर दे, चौथा तालाब या नदी में विसर्जित कर दे और पांचवां उत्तर दिशा की ओर फेंक दे, ऐसा करने पर यह आश्चर्यजनक प्रयोग निश्चित रूप से सिद्ध हो जाता है।

वास्तव में ही कलियुग में शाबर मन्त्र निश्चित और तुरन्त प्रभाव देने वाले हैं।

卐

सर्व दुःख नाशक प्रयोग

मन्त्र चैतन्य प्राणप्रतिष्ठा युक्त कामरूप मणि, भोज पत्र, विद्युत माला, आदि की व्यवस्था पहले से करके साधक स्नान कर श्वेत वस्त्र धारण कर सफेद आसन पर पूर्वाभिमुख होकर बैठे।

साधक सबसे पहले केसर से निम्नलिखित यन्त्र को भोज पत्र पर बना ले और फिर उस भोज पत्र को किसी पात्र में रख कर उस पर कामरूप मणि रख दे तथा किसी भी रविवार से निम्न मन्त्र का सवा लाख जप करे—

॥ ॐ ह्रीं हुं सः नमः ॥

यन्त्र

८	१५	२	७
६	३	१२	१०
१४	९	४	१६
१	५	२१	८

मन्त्र जप पूरा होने पर उस भोज पत्र में कामरूप मणि को लपेट कर चांदी के तावीज में बन्द कर धारण कर ले या सन्दूक में रख दे, तो उसके जीवन के सभी दुःख नष्ट हो जाते हैं।

लक्ष्मी ! तू जायेगी कहां ?

औघड़ कहते ही हमारी आंखों के सामने एक ऐसे व्यक्ति का चित्र उभरता है जो लगभग नंग-धड़ंग सा श्मशान में रहने वाला बोतल पर बोतल चढ़ाने वाला और सुलफा पीकर निरन्तर आंखें लाल रखने वाले साधक का होता है।

पर इसमें कोई दो राय नहीं कि इनकी वेश-भूषा भले ही कैसी ही हो, भले ही वे श्मशान में रहते हों, परन्तु इनके पास जो साधनाएं हैं वे अपने आप में अद्वितीय हैं या यों कहूं कि इस समय जितनी भी साधनाएं और जितने प्रकार की साधनाएं प्रचलित हैं, उनमें सबसे ज्यादा प्रभाव पैदा करने वाली, तुरन्त सफलता देने वाली और निश्चित रूप से सफलता देने वाली औघड़ साधनाएं हैं।

पर इन औघड़ों से तो मिलना अत्यन्त कठिन है, और दूसरे यह जरूरी नहीं है कि इन औघड़ों से मिलने पर ये कोई साधना बता ही दें, मरजी आवे तो बहुत कुछ बता देते हैं, और अपनी मस्ती में न हों तो ये कुछ भी नहीं बताते, गालियों पर गालियां देते रहते हैं, और कभी-कभी तो चिमटे से पीठ पर वार भी कर देते हैं।

मैं काफी समय तक इन औघड़ों के बीच रहा, या यों कहूं कि मैंने अपना स्वरूप भी औघड़ों की तरह बना दिया था, मेरी तो इच्छा इतनी ही रहती कि मैं इन औघड़ों के बीच रह कर कुछ विशेष साधनाएं प्राप्त करूं, इनके पास जो उच्चकोटि की तान्त्रिक क्रियाएं हैं उनको सीखूं और आज के युग में जो असम्भव है उसको सम्भव करके दिखाऊं।

यों मैंने इन औघड़ों से कई तांत्रिक-मांत्रिक क्रियाएं सीखीं, परन्तु लक्ष्मी से सम्बन्धित साधनाएं इतनी महत्वपूर्ण, गोपनीय और दुर्लभ हैं कि बड़ी कठिनाई

में ये प्रयोग हाथ लगे हैं, भले ही इनसे सम्बन्धित मन्त्र अटपटे हों, भले ही इनकी साधना पद्धतियां अटपटी हों, पर इसका प्रभाव तुरन्त और अचूक होता है, मैंने जिन-जिन लोगों को भी ये साधनाएं सम्पन्न करवाई है, उनको आश्चर्यजनक सफलता मिली है, यदि मैं यह कहूं कि भगवान विष्णु के सुदर्शन चक्र का वार खाली जा सकता है, परन्तु इन साधनाओं का प्रभाव खाली नहीं जाता।

मैं अपने पाठकों और साधकों के हित के लिए कुछ अत्यन्त गोपनीय दुर्लभ औघड़ साधनाएं दे रहा हूं, जिसे प्रत्येक साधक सम्पन्न कर सकता है, चाहे साधक सात्विक हो, ब्रह्मण हो, गायत्री उपासक हो तब भी इन साधनाओं को सम्पन्न करने में कोई दोष नहीं है, यद्यपि इन साधनाओं का अचूक फल प्राप्त होता है, परन्तु फिर भी यदि किसी वजह से साधना असफल हो जाय तो इसका विपरीत परिणाम देखने को नहीं मिलता।

इसलिए साधकों को मेरी राय है कि ये साधनाएं अवश्य ही सम्पन्न करें, क्योंकि ये लक्ष्मी प्राप्ति के लिए अनुकूल हैं।

लक्ष्मी वशीकरण प्रयोग

वशीकरण प्रयोग केवल मनुष्यों या स्त्रियों पर ही नहीं होता, अपितु लक्ष्मी पर भी किया जा सकता है, मुझे बनारस में एक औघड़ साधु मिला था, जिसके पास लगभग तीन महीने रहा था, इस साधु के पास कुछ भी नहीं था, न झोली न कुटिया और न किसी प्रकार का पात्र ही, परन्तु फिर भी वह नित्य सैकड़ों लोगों को भोजन करवा देता था, बाजार से सैकड़ों रुपये देकर खाद्य पदार्थ मंगवा लेता था, उसके पास धन की कोई कमी नहीं रहती थी।

एक दिन उसका अच्छा मूड देख कर मैंने इस रहस्य को जानने की इच्छा प्रगट की, तो उसने लगभग गाली देते हुए कहा कि उस घर-घर में घूमने वाली लक्ष्मी का तो मैंने सम्मोहन कर दिया है, और अब वह मुझे छोड़ कर जा भी कहां सकती है, अब तो वह मेरी मुट्ठी में है, और मैं जिस प्रकार से भी चाहूं उसे नाच नचा सकता हूं, वह हर क्षण मेरे साथ ही रहती है, और जब भी जितना भी रुपया चाहूं, मुझे लाकर देती ही है।

और वास्तव में ही उसकी बात सही थी, रुपयों की उसके पास कोई कमी रहती ही नहीं थी, मेरी सेवा से अत्यन्त प्रसन्न हो कर उसने मुझे यह गोपनीय साधना रहस्य समझाया था, जो कि आगे की पंक्तियों में स्पष्ट है—

किसी भी रविवार की रात को सर्वथा नग्न हो कर स्नान करे, मगर इस बात का ध्यान रहे कि रात्रि को लगभग १२ बजे के आस पास स्नान करके बिना कुछ भी वस्त्र पहने, बिना कुछ आसन लगाये जमीन पर बैठ जाय और सामने कुंकुम से पन्द्रह बिन्दियां लगा ले, ये बिन्दियां एक सीध में होनी चाहिए।

फिर इसके सामने तीन त्रिकोण बनावे, एक त्रिकोण के बीच में "लक्ष्मी" लिखे, दूसरे त्रिकोण के मध्य में "कुबेर" लिखे और तीसरे त्रिकोण के बीच में "श्री" लिखे।

फिर पन्द्रह तेल के दीपक लगा कर प्रत्येक बिन्दी पर तेल का दीपक रख दे, दीपक का मुंह साधक की तरफ होना चाहिए, और फिर पहले त्रिकोण के सामने पन्द्रह "चिरमी" के दाने रख दे, दूसरे त्रिकोण के सामने पन्द्रह "हकीक नग" रख दे और तीसरे त्रिकोण के सामने पन्द्रह "इन्द्रजाल" के टुकड़े रख दे।

इसके बाद मूंगे की माला से पन्द्रह माला निम्न मन्त्र का जप करे।

मन्त्र

॥ ॐ चली चली इली इली अलूं अलूं ॐ ॥

मन्त्र जप पूरा होने के बाद तीनों त्रिकोण के सामने ही एक बड़ा त्रिकोण बनावे, और उस त्रिकोण के मध्य में तीनों नाम—'लक्ष्मी', 'कुबेर' और 'श्री' लिख दे, और फिर इस त्रिकोण के ऊपर अपनी दाहिनी हथेली रख कर अपनी अपनी हथेली पर ही वे रखे हुए हकीक नग, चिरमी के दाने तथा इन्द्रजाल के टुकड़े बिखेर दे और फिर अपनी हथेली को अलग रख दे तथा बाहर जाकर स्नान कर ले और चाहे तो भोजन कर ले।

सुबह उठने पर उन हकीक, चिरमी तथा इन्द्रजाल के टुकड़ों को एक पोटली में बांध कर अपने पास रख ले, तो निश्चय ही उसे अनायास ही लक्ष्मी प्राप्ति होती रहती है, लक्ष्मी पर पूर्ण रूप से सम्मोहन हो जाता है, और साधक पूरे जीवन भर जब भी इस मन्त्र को एक बार पढ़ कर जितने रुपये की इच्छा करता है, उतने रुपये उसकी हथेली में आ जाते हैं।

वास्तव में ही यह प्रयोग आश्चर्यजनक है, अतः साधकों को इस प्रकार का प्रयोग अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए।

यह घटना जबलपुर की है, जबलपुर का श्मशान तो मशहूर है, वहां पर एक श्रौघड़ से भेंट हो गई थी, श्रौर मैंने देखा कि वह लगभग नंग-धड़ंग सा रहता था, लंगोट भी नहीं पहनता था श्रौर शहर में लगभग जाता ही नहीं था, परन्तु शहर के उच्चकोटि के व्यापारी श्रौर व्यक्ति उसके दर्शनों के लिए श्राते रहते थे।

इस श्रौघड़ की एक श्रादत थी, कि वह रोज सौ-दो सौ लोगों को भोजन करा देता था, श्रौर श्रगर इच्छा हो जाती तो बाजार से कपड़ों के थान मंगवा लेता था गरीबों में बांट देता था, हम सब लोगों को श्राश्चर्य होता था कि यह श्रौघड़ हजारों रुपये लाता कहां से है।

श्रौर यदि कोई व्यापारी उसे कुछ भेंट या सौ-दो सौ रुपये देने की इच्छा प्रगट करता तो उसे पचासों गालियां देता, श्रौर कभी-कभी तो चिमटे से वार कर देता, यह श्रौघड़ किसी से कुछ भी दान स्वीकार नहीं करता था।

मुझे इसके साथ लगभग पांच महीने रहने का श्रवसर मिला, श्रौर मैंने श्रनुभव किया कि इसको बहुत ही उच्चकोटि की तान्त्रिक क्रियाएं ज्ञात है, पर यह लक्ष्मी से सम्बन्धित श्रौघड़ क्रियाश्रों में तो विख्यात है, जब भी इसको रुपयों की श्रावश्यकता होती तो यह श्रपनी झोली को फटकार झटक कर उसमें हाथ डाल कर बोलता लक्ष्मी ! तू जायेगी कहां ? श्रौर जब झोली में से हाथ बाहर निकालता तो सौ-सौ रुपये के कई नोट उसके पास होते, श्रौर मैं यह देख कर श्राश्चर्यचकित हो जाता, कभी इसके हाथ में दस-बारह हजार के नोट श्रा जाते, तो कभी एक ही बार में श्रठारह-बीस हजार के नोट भी श्राते हुए मैंने देखे हैं।

एक दिन मैंने इस श्रौघड़ से इस बारे में जिज्ञासा की तो उसने कहा कि मैंने इसे कीलित कर रखा है, यह मेरे घर में बहुरिया बन कर बैठी हुई है, जायेगी कहां ? श्रौर मेरा कहना नहीं मानेगी तो मैं इसकी ऐसी की तैसी कर दूंगा।

वास्तव में ही यह इस प्रकार की साधना में श्रद्वितीय था, मेरी इच्छा को देख कर पांच महीने के बाद मेरी सेवा से प्रसन्न हो कर इसी साधना को मुझे बताया था जो कि मैं श्रागे की पंक्तियों में बता रहा रहा हूं—

किसी भी शुक्रवार को रात्रि को साधक सर्वथा निःवस्त्र हो कर स्नान करे

और फिर कमरे में जा कर बिना किसी प्रकार का आसन बिछाये जमीन पर ही उत्तर की ओर मुंह कर बैठ जाय, इस बात का ध्यान रहे कि कमरे में कोई दूसरा व्यक्ति न हो।

इसके बाद कोयले से जमीन पर पन्द्रह लकीरें लम्बी खींच ले, जो कि खड़ी लकीरें हों, और प्रत्येक लकीर लगभग १२ इंच लम्बी हो, इसके बाद प्रत्येक लकीर पर निम्न प्रकार से सामग्री रखे—१-इन्द्रजाल, २-बिरमी, ३-समुद्री कीड़े का टुकड़ा, ४-गोमती चक्र, ५-हकीक नग, ६-मूंगे का टुकड़ा, ७-समुद्री वृक्ष का टुकड़ा, ८-बिल्ली की नाल, ९-पारद गुटिका, १०-शंख का टुकड़ा, ११-लघु नारियल, १२-लक्ष्मी यन्त्र, १३-कुबेर ताबीज, १४-बजरंग वरद, १५-रुद्राक्ष का दाना।

इस सारी सामग्री को पहले से ही मंगा कर रखना चाहिए, जिससे कि साधक इसका प्रयोग कर पूरा-पूरा लाभ उठा सके।

वास्तव में ही यह सारी सामग्री शुद्ध होनी चाहिए और साथ ही साथ पहले से उपयोग नहीं की हुई हो, इस बात का ध्यान रखना चाहिए।

प्रत्येक लकीर पर इसी क्रम में सामग्री रख कर प्रत्येक लकीर के सामने एक-एक तेल का दीपक लगा दे इसमें किसी भी प्रकार के तेल का प्रयोग किया जा सकता है।

फिर निम्न मन्त्र की १५ मालाएं फेरे, इसमें हकीक माला का ही प्रयोग किया जाना चाहिए।

मन्त्र

॥ भ्रां भ्रीं भ्रूं ह्रुं ऐं श्रीं फट् ॥

मन्त्र जप पूरा होने के बाद कोयले से ही उन पन्द्रह लकीरों और दीपकों के चारों ओर घेरा बना दे, जिससे कि लक्ष्मी पूरी तरह से आबद्ध हो सके, घेरा बनाते समय भी इसी मन्त्र का उच्चारण करना चाहिए।

इसके बाद इन सबका कुंकुम और चावल से पूजन करे, यदि सम्भव हो तो सामने चढ़ावे और घी में गुड़ भिगो कर थोड़ा सा भोग लगावे, इस सारे पूजन में भी इसी मन्त्र का प्रयोग किया जाता है।

पूजन करने के बाद साधक स्नान कर, कपड़े बदल कर रात्रि को वहीं पर सो जाय, पर इस बात का ध्यान रहे कि ये सभी दीपक सारी रात जलते रहें।

प्रातःकाल उठ कर इन दीपकों को किसी बर्तन में डाल कर घर के बाहर दक्षिण दिशा की ओर फेंक दे, या सूर्योदय से पहले सड़क के तीनों कोन रख दे, जहां तीन रास्ते जाते हों, और पन्द्रह लकीरों पर जो सामग्री रखी हुई है, उस पूरी सामग्री की पोटली बांध कर घर में किसी स्थान पर रख दे तो निश्चय ही लक्ष्मी पूर्ण रूप से आबद्ध रहती है।

जो भोग चढ़ाया हुआ था, वह घर के बाहर फेंक दे, और उस स्थान को पानी से धो ले, इस प्रकार से यह साधना पूर्ण होती है।

वास्तव में ही यह साधना इतनी महत्वपूर्ण है कि जब भी किसी ने इस साधना को सम्पन्न किया तो उसे आगे के जीवन में नित्य निरन्तर रुपये-पैसे प्राप्त होते ही रहे, और वह जितना खर्च करता है, उससे ज्यादा ही उसे प्राप्त हो जाता है।

कलियुग में तो यह प्रयोग लक्ष्मी साधकों के लिए वरदान स्वरूप है।

वास्तव में ही औषद साधनाएं सरल होने के साथ-साथ तुरन्त प्रभाव देने वाली हैं और इसका प्रभाव आगे के पूरे जीवन में बना रहता है।

卐

ग्रह दोष निवारण प्रयोग

साधक जलपात्र, घी का दीपक, नवग्रह यन्त्र, स्फटिक माला तथा धनरत्नों आदि की व्यवस्था कर किसी भी रविवार से प्रारम्भ करना चाहिए। सफेद सूती आसन पर पूर्वाभिमुख हो कर बैठ जाय, सामने सफेद वस्त्र बिछा कर उस पर नवग्रह यन्त्र स्थापित कर उस पर केसर से तिलक कर घी का दीपक जला कर निम्न मन्त्र का इक्यावन हजार जप करे, अनुष्ठान पूरा होने पर उस यन्त्र को घर के पूजा स्थान में स्थापित कर देने से सभी प्रकार के ग्रह दोष समाप्त हो जाते हैं।

ब्रह्मा मुरारी स्त्रीपुरान्तकारी भानु शशि भूमि-सुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्र शनि राहु केतव सर्वे ग्रहा शान्ति करा भवन्तु ॥

सहस्र रूपिणी सिद्ध महालक्ष्मी अनुष्ठान

यह प्रयोग अभी तक निश्चित रूप से सर्वथा गोपनीय रहा है, मैं कई वर्ष पहले उड़ीसा के जंगलों में साधना साहित्य के लिए भटक रहा था, और मुझे कहीं पर भी शान्ति नहीं मिल रही थी, यदि देखा जाय तो वहां छोटे-छोटे गांवों में भी तांत्रिक साहित्य बिखरा हुआ पड़ा है, मैंने यथा सम्भव मूल्य देकर, प्रार्थना कर येन केन प्रकारेण उस दुर्लभ साहित्य को संग्रहित करने के लिए प्रयत्न किया, और आज मेरे पास ताड़ पत्रों पर, भोज पत्रों पर और जीर्ण पत्रों पर लिखा हुआ प्रचुर तन्त्र साहित्य है, जिसका समय आने पर मैं सम्पादन कर प्रकाशित करूंगा।

उन्हीं दिनों उड़ीसा के घने जंगलों में तिस्ता नदी के किनारे बैठा हुआ था, कि मुझे एक सन्यासी दिखाई दिया, यद्यपि मैं सावधान था परन्तु मुझे उनकी पदचाप सुनाई नहीं दी, ऐसा लगा जैसे वे अचानक प्रगट हो गये हों, देखते ही मुझसे बोले "इन पोथी पत्रों से क्या होगा, तुम्हें तो जीवन्त साहित्य पढ़ना और लिखना चाहिए।" जीवन्त साहित्य से उनका तात्पर्य था कि सही गुरु से प्राप्त ज्ञान और साधना विधियों से ही प्रामाणिक सफलता मिल सकती है।

उस दिन वे मूड में थे, कम से कम मुझे तो ऐसा ही लगा, उन्होंने पास में पड़ी एक पत्थर की चट्टान पर बैठ कर बोले "तुम्हें मैं जानता हूं और उन्होंने मेरा पूरा वर्तमान जीवन ज्यों का त्यों सुना दिया, मैं आश्चर्यचकित था ही, कि तभी उन्होंने कहा कि "तेरा वर्तमान जीवन ही नहीं अपितु पिछला जीवन भी मैं जानता हूं, और मैं यह जानता हूं कि आगे तेरी क्या गति होने वाली है।"

मैं उनसे प्रश्न करता, इससे पहले ही उन्होंने कहा 'मैं एक प्रयोग बताने

के लिए आया हूं क्योंकि पिछले जीवन का बहुत थोड़ा सा ऋण मेरे ऊपर बाकी है, और मैं उसको इस विद्या को देकर ऋण मुक्त हो रहा हूं।"

मैं कुछ पूछता, परन्तु उनकी तेजस्वी आंखें, उन्नत ललाट और गुलाबी आंखों की वजह से कुछ पूछ नहीं सका, उन्होंने मुझे जो प्रयोग बताया वह "सहस्र रूपिणी सिद्ध लक्ष्मी प्रयोग" था और वास्तव में ही इस प्रयोग को लिखने के बाद मैंने अनुभव किया कि मैंने जितना तांत्रिक साहित्य एकत्र किया है, मैंने जितना अनुभव किया है, उसके आधार पर मैं यह कह सकता हूं कि यह अपने आपमें दुर्लभ प्रयोग है, मैंने इस प्रयोग को पूरा लिखने के बाद कलम उठा कर ऊपर की ओर देखा तो वे अदृश्य थे, जिस प्रकार से वायु के झोंके की तरह आये थे उसी प्रकार से अदृश्य हो गये।

यह बात लिखने में और पढ़ने में अचरज भरी लग सकती है, परन्तु जो हकीकत है वह हकीकत है और मैंने इसको देखा है।

उसके बाद मैं सीधा घर आ गया था, मेरी अध्यापन वृत्ति छूट गई थी और घर में गरीबी और दरिद्रता पहले से थी ही, यों तो मेरी पिछली सात पीढ़ियों में दरिद्रता का स्थाई निवास था परन्तु मेरे डेढ़ वर्ष तक घर से बाहर जंगलों में भटकने के कारण यह दरिद्रता इतनी बढ़ गई थी कि कई-कई दिनों तक बच्चे और पत्नी भूखे ही पड़े रहते।

मैंने सबसे पहले इसी प्रयोग को सम्पन्न किया, और प्रयोग सम्पन्न होते-होते एक सेठ से मुझे अनुष्ठान सम्पन्न करने पर उस जमाने में दस हजार रुपये मिल गये थे, इसके बाद तो मैंने कानोडिया जी के यहां, एन०के० बिड़ला जी के यहां, केम्बिक मिल मालिक के यहां तथा और कई सेठों के यहां अनुष्ठान किया और हर बार जहां मैं सम्पन्न से सम्पन्नतम होता गया वहीं जिनके यहां भी यह प्रयोग किया वह आश्चर्यजनक रूप से उन्नति करता रहा।

मैं आज सम्पन्न हूं और मेरा प्रामाणिक अनुभव यह रहा है कि जितने भी लक्ष्मी प्रयोग है, उनमें यह सबसे अधिक महत्वपूर्ण और आश्चर्यजनक सिद्धिदाता अनुष्ठान है, जिसे सम्पन्न करने पर पहली ही बार में पूर्ण सफलता प्राप्त हो जाती है, मैं सोचता हूं कि ऐसा अमूल्य रत्न पास में होने पर भी यदि कोई इस अनुष्ठान में भाग न ले या यहअनुष्ठान सम्पन्न न करे तो वास्तव में ही वह संसार का सर्वाधिक दुर्भाग्यशाली व्यक्ति ही कहा जा सकता है।

अनुष्ठान समय

इस अनुष्ठान को यों तो किसी भी शनिवार को सम्पन्न किया जा सकता है, परन्तु यह मकर संक्रान्ति अथवा पौष पूर्णिमा के दिन सम्पन्न करे तो इसके हाथों हाथ परिणाम प्राप्त होते हैं, ये दो दिवस इस अनुष्ठान के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण हैं और साधकों को इसका उपयोग करना ही चाहिए।

अनुष्ठान सामग्री

इस अनुष्ठान में 'आठ एक मुखी रुद्राक्ष", "एक कल्पवृक्ष वरद" और "एक सहस्र रूपिणी सिद्ध लक्ष्मी यन्त्र" की आवश्यकता होती है, इसके अलावा केसर, जलपात्र, थाली, दूध का बना हुआ प्रसाद, फल, अगरबत्ती और दीपक की आवश्यकता होती है।

साधक साधना की रात्रि को स्नान करके पीली धोती पहिन कर तथा कन्धों पर भी पीली धोती डाल कर पीले आसन पर उत्तर की ओर मुंह कर बैठ जाय और सामने एक थाली रख दे (यह थाली लोहे या स्टील की नहीं होनी चाहिए), फिर उस थाली में केसर से "सहस्र रूपिणी सिद्ध लक्ष्मी" यन्त्र अंकित करे, यह यन्त्र निम्न प्रकार से बनाया जाता है—

सहस्र रूपिणी सिद्ध लक्ष्मी यन्त्र

८	५	२
१	श्रीं	६
६	५	४

फिर इस यन्त्र के चारों ओर 'आठ एक मुखी रुद्राक्ष' रख दे, और अंकित यन्त्र के मध्य में 'सहस्र रूपिणी सिद्ध लक्ष्मी यन्त्र' को स्थापित करे फिर थाली के बाहर आठ दीपक लगावे जिनमें शुद्ध घी भरे, दीपक के मुंह साधक की ओर

होने चाहिए, और इन आठों दीपकों में 'कल्पवृक्ष वरद' का एक-एक टुकड़ा डाल दे, जिससे वे घी में मिल कर ज्योति को प्रज्वलित करते रहें।

इसके बाद हाथ में जल लेकर विनियोग करे—

सिद्ध लक्ष्मी विनियोग

अस्य श्री सर्व महा-विद्या महालक्ष्मी शत अष्टोत्तरी महा-राज्ञी रहस्याति रहस्यमयी, पराशक्ति श्रीमदाद्या भगवती सिद्ध लक्ष्मी सहस्र रूपिणी विश्वामित्र ऋषि गायत्र्यादि नाना छन्दांसि, नवकोटि शक्ति रूपा श्रीमदाद्या भगवती सिद्ध लक्ष्मी प्रसादादखिले वांछित कामना सिद्ध्यर्थे पाठे विनियोगः।

फिर ताम्र पत्र पर अंकित यन्त्र को बाएं हाथ में रख कर उसे जल से स्नान करा कर केसर से तिलक करे और फिर पुनः अपने स्थान पर स्थापित करे, इसी प्रकार आठों रुद्राक्षों पर तिलक करे और फिर निम्न महाविद्या मन्त्र का एक सौ आठ बार पाठ करे।

सहस्र रूपिणी सिद्ध लक्ष्मी महाविद्या मन्त्र

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौ श्रीं ऐं ह्रीं सौः सौः ॐ ऐं ह्रीं ह्रीं श्रीं जय जय महालक्ष्मी, जगदाद्ये, विजये सुरा-सुर-त्रिभुवन निदाने, दयांकुरे, सर्व देव तेजो रूपिणी, विरंचि संस्थिते, विधि वरदे, सच्चिदानन्दे, विष्णु देहावृते, महामोहिनी, अटूट धन सम्पत्ति पोषिणी, नित्य वरदान तत्परे, महा-सुलब्धि वासिनी, महातेजो-धारिणी, सर्वाधारे, सर्व-कारण कारिण्यै, अचिन्त्य रूपे, इन्द्रादि सकल देव सेविते, साम-गान-गायन-परिपूर्णोदय कारिणी, विजये जयन्ति, अपराजिते, सर्व सुन्दरि, पीतांशुके, सूर्यकोटि संकाशे, चन्द्रकोटि सुशीतले, सहस्र रूपिणी महालक्ष्मी मां रक्ष रक्ष मोक्ष मार्गाणि दर्शय दर्शय ज्ञान मार्ग प्रकाशय प्रकाशय, अज्ञान तमो नाशय नाशय, धन धान्यादि वृत्ति कुरु कुरु सर्व कल्याणानि कल्पय कल्पय सर्वोपद्रव निस्तारय निस्तारय सर्व संसिद्धि देहि देहि फट्॥

हकीकत में देखा जाय तो यह केवल मन्त्र ही नहीं है अपितु संसार का उज्ज्वलतम रत्न है, इस मन्त्र की संरचना इस प्रकार से की गयी है कि कई बार तो अनुष्ठान पूरा होते-होते ही साधक का कार्य सिद्ध हो जाता है, या उसकी जो भी इच्छा अथवा मनोकामना होती है वह पूरी हो जाती है।

प्रातःकाल जब उपरोक्त मन्त्र का १०८ बार पाठ कर ले, तब उस मन्त्र को और आठों एक मुखी रुद्राक्ष को पीले कपड़े में लपेट कर कपड़े को चारों तरफ से सी ले, जिससे कि वह कपड़ा एक थैली की तरह बन जाय और उसमें मन्त्र एवं आठों एक मुखी रुद्राक्ष सुरक्षित रहें।

यह सामग्री जब तक घर में रहेगी तब तक निरन्तर आर्थिक उन्नति, व्यापार वृद्धि एवं सोचे हुए समस्त कार्य पूरे होते रहेंगे।

मैंने इस अनुष्ठान को सौ से अधिक उच्चकोटि के सेठों के यहां और अपने स्वयं के यहां प्रयोग किया है और इसका चमत्कार देख कर आश्चर्यचकित रह गया हूं, कई बार तो अनुष्ठान प्रारम्भ करते ही अनुकूल समाचार सुनने को मिल जाते हैं।

यह लघु परन्तु अत्यन्त ही तेजस्वी अनुष्ठान अपने साधकों तथा पाठकों के लिए प्रस्तुत किया गया है, मुझे विश्वास है कि साधक इस अनुष्ठान का लाभ उठाएंगे, और ज्यादा से ज्यादा गरीब भाइयों को यह अनुष्ठान बता कर उनकी निर्धनता दूर करने का प्रयत्न करेंगे, यह अनुष्ठान साधक स्वयं कर सकता है, या किसी पंडित से सम्पन्न करवा सकता है। 卐

स्वप्न में देवता से बात करने का प्रयोग

साधक स्वप्नेश्वरी देवी का चित्र, जलपात्र, केसर, अक्षत, अगरबत्ती, दीपक और कार्य सिद्धि माला की व्यवस्था कर किसी भी रविवार को स्नान कर सफेद आसन पर पूर्वाभिमुख होकर बैठे, सामने स्वप्नेश्वरी देवी का चित्र फ्रेम में मढ़वा कर उसकी सामान्य पूजा अगरबत्ती, दीपक लगा कर करें, फिर निम्न मन्त्र का इक्यावन हजार जप करें—ॐ ह्रीं विचित्र वीर्य स्वप्ने इष्ट दर्शय नमः।

मन्त्र जप पूरा हो जाय तो जिस रात्रि को अपने इष्ट या देवता से बात करनी हो उस रात्रि को एक बार उपरोक्त मन्त्र का उच्चारण कर सो जाय तो रात्रि में अपने इष्ट से बात चीत हो जाती है।

धनेश्वरी आबद्ध प्रयोग

कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी को पूरे भारतवर्ष के लोग भगवती लक्ष्मी की पूजा साधना करते है और कुछ विशेष प्रयोग सम्पन्न करते हैं, जिसमे कि अगले वर्ष तक उसके घर में लक्ष्मी का निवास बना रहता है, यों तो यह साधना या अनुष्ठान सूर्य ग्रहण, चन्द्र ग्रहण अथवा किसी भी रवि पुष्य योग और दीपावली की रात्रि को भी सम्पन्न किया जा सकता है। यह एक रात्रि की साधना है, और इस साधना को सम्पन्न करने से साधक के सारे मनोरथ पूर्ण होते हैं।

नीचे मैं एक अत्यन्त गोपनीय और दुर्लभ प्रयोग दे रहा हूं, यह प्रयोग मुझे अपने पिताजी से प्राप्त हुआ था, वे लक्ष्मी से सम्बन्धित साधनाओं में अग्रगण्य थे और उन्होंने अपने गुरु से यह साधना प्राप्त की थी।

मेरे पूज्य पिता स्वर्गीय हरि शंकर जी गढ़वाल के प्रसिद्ध पंडित थे और कई वर्षों तक वह एक सिद्ध योगी के सम्पर्क में रहे थे, काफी वर्षों तक उनकी सेवा करने के फलस्वरूप उनसे कई विद्याएं मेरे पूज्य पिताजी को प्राप्त हुई थीं, यद्यपि हमारा घर और हमारे पूर्वज अत्यन्त साधारण थे, परन्तु इतना सब होने के बावजूद भी हम करोड़ों में खेले और जीवन की पूर्ण समृद्धता अनुभव की।

यद्यपि मेरे पिताजी ज्यादा पढ़े-लिखे नहीं थे, परन्तु विविध साधनाओं को सम्पन्न करने से उन्हें कई प्रकार की सिद्धियां प्राप्त हो गई थीं, यह विद्या भी मुझे अपने पिताजी से प्राप्त हुई थी। मैंने स्वयं तो यह साधना सम्पन्न की ही है अपने मित्रों को भी सम्पन्न कराई है, और जिन-जिन मित्रों ने यह साधना सम्पन्न की है, उन्हें अनायास धन प्राप्त हुआ है।

यही नहीं अपितु इसके फलस्वरूप मुकदमे की परेशानी, विवाह बाधा, मकान की न्यूनता, पारिवारिक झंझट, ग्रह बाधा और आर्थिक अभाव भी दूर हुए हैं, और आज वे सभी समाज में सम्माननीय और सम्पन्न हैं, मैंने यह अनुभव किया है कि इस साधना को सम्पन्न करने से आर्थिक बाधा तो रहती ही नहीं, और घर की गरीबी पूर्ण रूप से समाप्त हो जाती है, इस साधना को सम्पन्न करने से जीवन में पूर्ण वैभव, धन, सुख तथा भाग्योदय प्राप्त होने लगता है।

अपने पाठकों के लिए विशेष कर साधकों के लिए यह गोपनीय साधना मैं आगे के पृष्ठों में दे रहा हूं, मुझे विश्वास है कि इस साधना को सम्पन्न कर निश्चय ही साधक मेरे कथन से सहमत होंगे।

अनुष्ठान विधि

मेरी राय में यदि धन त्रयोदशी की रात्रि को यह साधना सम्पन्न करे तो ज्यादा उचित रहता है, सबसे पहले साधक पूजा स्थान में पीला आसन बिछा कर पूर्व या उत्तर की ओर मुंह कर बैठ जाय और साधना सामग्री की व्यवस्था पहले से ही कर ले।

साधना सामग्री में १-जल पात्र, २-गंगाजल या कुएं का जल, ३-दूध, ४-घी, ५-शहद, ६-चीनी, ७-पंचामृत (दूध, घी, दही, शहद, शक्कर), ८-कुंकुंम या केसर ९-अक्षत, १०-पुष्प या पुष्प माला, २१-नैवेद्य, १२-धूप या अगरबत्ती, १३-दीपक, १४-नारियल, १५-फल तथा १६-दक्षिणा।

साधक को यह सामग्री पूजा स्थान में रखने के साथ-साथ "अष्टगन्ध" को भी तैयार करके रख देना चाहिए। शास्त्रों के अनुसार निम्न आठ वस्तुओं को पीस कर पानी में घोल कर स्याही बना ले जिसे अष्टगन्ध कहा जाता है, इसमें १-चन्दन, २-अगर, ३-केसर, ४-कुंकुंम, ५-गोरोचन, ६-शिला रस, ७-जटामासी, ८-कपूर, इन आठों वस्तुओं को बराबर मात्रा लेकर पीस कर पाउडर बना कर पानी में घोल कर स्याही बना कर साधना में प्रयुक्त की जा सकती है।

इसके अलावा साधक को चाहिए कि जिस दिन यह साधना सम्पन्न करे, उस दिन वह सात्विक जीवन व्यतीत करे, ब्रह्मचर्य का पूर्ण पालन करे, दिन में एक बार भोजन करे, इसके अलावा इस बात का ध्यान रखे कि यह प्रयोग या अनुष्ठान किसी को बताये नहीं तथा गोपनीय रखे।

प्रयोग विधि

उपरोक्त सभी सामग्री तैयार करने के बाद साधक सफेद कागज लेकर चार इन्च लम्बा तथा चार इन्च चौड़ा कागज का टुकड़ा बनावे, इस प्रमाण से ४१ कागज के टुकड़े तैयार करके रख दे और फिर साधक स्नान कर पीली धोती पहिन कर रात्रि को आठ बजे के बाद आसन पर बैठ जाय और सामने एक उत्तम भगवती लक्ष्मी का चित्र यदि घर में हो तो स्थापित कर दे, यदि न हो तो बाजार से दो-चार दिन पहले ही लक्ष्मी का चित्र प्राप्त कर उसे फ्रेम में मढ़वा कर पूजा स्थान में रख दे, साधक के घर में मृगछाला हो तो आसन के ऊपर बिछा दे और मृगछाला न हो तो ऊनी आसन या आसन के ऊपर कम्बल बिछा कर बैठ सकता है।

फिर साधक अपने सामने लकड़ी का एक बाजोट रखे और उस पर पीला वस्त्र बिछा कर उसके ऊपर एक थाली रखे जो कि चांदी या पीतल की हो सकती है, लोहे या स्टील की नहीं होनी चाहिए। फिर इस थाली के मध्य में निम्न "धनेश्वरी यन्त्र" का अंकन अष्टगन्ध से चांदी की शलाका के द्वारा करे, चांदी की शलाका साधक पहले से ही सुनार से चांदी का एक पतला सा तार तैयार करवा कर रख ले, जिसके द्वारा इस यन्त्र का अंकन थाली में करे।

धनेश्वरी यन्त्र

इस यन्त्र को भली प्रकार से अंकित करने के बाद इस यन्त्र के ऊपर "धनेश्वरी आबद्ध सिद्ध यन्त्र" को स्थापित कर दे, यह यन्त्र ताम्र पत्र पर अंकित

महत्वपूर्ण और दुर्लभ होता है, जो कि अपने आपमें ही पूर्ण भाग्योदयकारक, धन-प्रदायक तथा सौभाग्यशाली माना गया है।

शास्त्रों में वर्णित यह यन्त्र जो धनेश्वरी साधना से सिद्ध और लक्ष्मी आबद्ध मन्त्र से आपूरित होता है, जिसकी वजह से यह साधना पूर्ण सम्पन्न होती है और आने वाली पीढ़ियों के लिए यह यन्त्र सौभाग्यशाली माना गया है।

इसके बाद एक अलग पात्र में इस "धनेश्वरी आबद्ध सिद्ध यन्त्र" को रख कर जल से स्नान करावे और फिर पंचामृत से स्नान कराकर पुनः उसी थाली में स्थापित कर दे जिस थाली में धनेश्वरी यन्त्र अंकन किया था।

इसके बाद इस ताम्र पत्र पर अंकित यन्त्र को पुष्प समर्पित करे, पुष्प माला पहिनाये सामने धूप दीप लगावे नारियल समर्पित करे तथा भोग लगावे। इस प्रकार का प्रत्येक कार्य करते समय निम्न मन्त्र का उच्चारण करता रहे, सम्पूर्ण पूजन इसी मन्त्र के उच्चारण से किया जाता है—

"ॐ धनेश्वर्यै आगच्छ आगच्छ आबद्ध आबद्ध सिद्धये नमः"

इसके बाद इस यन्त्र को अपने प्राणों से तथा लक्ष्मी के प्राणों से परस्पर जोड़ता हुआ निम्न प्राण प्रतिष्ठा करे, इसमें अपने बाएं हाथ को हृदय पर रखे तथा दाहिने हाथ में पुष्प की पंखुड़ियां और थोड़े से अक्षत लेकर इस ताम्र पत्र पर अंकित यन्त्र पर धीरे-धीरे चढ़ाता हुआ निम्न प्राण प्रतिष्ठा मन्त्र को तीन बार उच्चारण करे, इस प्राण प्रतिष्ठा मन्त्र में जहां-जहां पर "मम" शब्द आया है वहां-वहां साधक अपने नाम का उच्चारण करे।

ओं आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं हंसः सोऽहं मम प्राणाः इह प्राणाः ओं आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं हंसः सोऽहं सर्व इन्द्रियाणि इह मम प्राणाः ओं आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं हंसः सोऽहं मम वाङ्-मन-चक्षु-श्रोत्र जिह्वा घ्राण-प्राणा इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

इसके बाद साधक के पास कागज के जो ५१ टुकड़े रखे हुए हैं, उनमें से प्रत्येक टुकड़े पर चांदी की सलाका से अष्टगन्ध के द्वारा धनेश्वरी यन्त्र का अंकन करे, धनेश्वरी यन्त्र पीछे छपा हुआ है, इसके बाद उन ५१ कागज के टुकड़ों को एक दूसरे के ऊपर रख कर इन टुकड़ों की पूजा करे, कुंकुम, अक्षत, पुष्प समर्पित करे और फिर तीन बार उपरोक्त विधि से ही प्राण प्रतिष्ठा मन्त्र का उच्चारण करे।

इसके बाद साधक निम्न स्तोत्र मन्त्र का ४१ बार पाठ करे, पाठ के समय घी का दीपक बराबर लगा रहना चाहिए। जो साधक संस्कृत पढ़े लिखे नहीं हैं, वे भी धीरे-धीरे इस स्तोत्र का उच्चारण कर सकते हैं। मैंने अनुभव किया है कि जिस तरीके से भी उच्चारण हो, उच्चारण से और पूरे ४१ बार पाठ करने से निश्चय ही साधना में सफलता प्राप्त होती है।

पाठ के बाद उन ४१ कागज के टुकड़ों को जिन पर धनेश्वरी यन्त्र अंकित है, किसी डिब्बी में बन्द करके रख दे तथा ताम्र पत्र पर अंकित यन्त्र को भी अपने पूजा स्थान में बना रहने दे।

पाठ के बाद उस ताम्र पत्र पर अंकित यन्त्र की सात प्रदक्षिणा करे और फिर साधना पूर्ण समझें।

मैंने अनुभव किया है कि इसका लाभ तुरन्त प्रतीत होता है, और कई बार मैंने यह भी अनुभव किया कि दूसरे दिन से ही साधक को आर्थिक व्यापारिक दृष्टि से चमत्कारिक अनुभव होने लगते हैं।

नीचे मैं ऊपर वर्णित स्तोत्र मन्त्र को शुद्धता से प्रकाशित कर रहा हूं।

धनेश्वरी आबद्ध स्तोत्र

नमस्ते सर्व भूतानां जननीमब्धि-सम्भवाम्।
श्रियमुन्निद्र पद्माक्षीं विष्णु-वक्षःस्थल-स्थिताम्॥
पद्मालयां पद्म - करां पद्म-पत्र - निभेक्षणाम्।
वन्दे पद्म-मुखीं देवीं पद्म-नाभ-प्रियामहम्॥
त्वं सिद्धिस्त्वं स्वधा स्वाहा सुधा त्वं लोक-पावनी।
सन्ध्या रात्रिः प्रभा भूतिर्मेधा श्रद्धा सरस्वती॥
यज्ञ-विद्या महा विद्या गुह्य-विद्या च शोभने।
आत्म-विद्या च देवि! त्वं विमुक्ति-फल-दायिनी॥
आन्विक्षिकी त्रयी वार्ता दण्ड-नीतिस्त्वमेव च।
सौम्याऽसौम्यैर्जगद्-रूपैस्त्वयैतद् देवि! पूरितम्॥
का त्वन्या त्वामृते देवि! सर्व-यज्ञ-मयं वपुः।
अध्यास्ते देव-देवस्य योगी-चिन्त्यं गदा-भृतः॥

त्वया देवि! परित्यक्तं सकलं भुवन-त्रयम्।
विनष्ट-प्रायमभवत् त्वयेदानीं समेधितम्॥
दाराः पुत्रास्तथाऽऽगार-सुहृद्धान्य-धनादिकम्।
भवत्येतन्महाभागे! नित्यं त्वद्-वीक्षणान्नृणाम्॥
शरीरारोग्यमैश्वर्यमरि-पक्ष-क्षयः सुखम्।
देवि! त्वद्-दृष्टि-दृष्टानां पुरुषाणां न दुर्लभम्॥
त्वमाम्बा सर्व भूतानां देव-देवो हरिः पिता।
त्वयैतद् विष्णुना चाम्ब! जगत व्याप्तं चराचरम्॥
मा नः कोशं तथा गोष्ठ मा गृहं मा परिच्छदम्।
मा शरीरं कलत्रं च त्यजे सर्वथा पावनि॥
मा पुत्रान् मा सुहृद-वर्गान् मा पशून् मा विभूषणम्।
त्यजेथा मम देवस्य विष्णोर्वक्षः स्थलाश्रये॥

卐

व्यापार-बन्ध दूर करने का प्रयोग

गुलाल, गोरोचन, छारछबीला और कपूर काचरी को बराबर मात्रा में लेकर उन्हें पीस कर मिला कर रख लेना चाहिए और रात्रि को किसी भी समय निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए यह मिला-जुला पाउडर दुकान के सामने बिखेर देना चाहिए, इस प्रकार पांच दिन प्रयोग करने से व्यापार-बन्ध दूर हो जाता है—

॥ ॐ दक्षिण भैरवाय भूत-प्रेत बन्ध, तन्त्र बन्ध, निग्रहनी
सर्व शत्रु संहारणी कार्य सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा॥

यदि किसी शत्रु ने व्यापार को रोकने या व्यापार में नुकसान होने या दुकान में ग्राहक न आने अथवा व्यापार में उन्नति न हो, ऐसा कोई प्रयोग किया हो, तो इस प्रकार प्रयोग करने से किया हुआ प्रयोग समाप्त हो जाता है और पुनः व्यापार में उन्नति होने लग जाती है, किसी भी प्रकार का तन्त्र मन्त्र आदि व्यापार से सम्बन्धित किया हुआ हो; तो इससे अनुकूलता प्राप्त होती है।

स्वर्ण रेखा साधना

जीवन में तीन प्रबल शत्रु हैं, जो पूरे जीवन को बरबाद करने में सहायक है, इनमें–१–दुःख, २-दरिद्रता और ३-भय जैसी बाधाएं हैं। यदि ये तीनों ही न हो तो जीवन पूर्ण रूप से सुख सौभाग्यमय बन सकता है।

अगर हकीकत में देखें तो हमारा पूरा जीवन भय ग्रस्त रहता है, कहीं कोई दुर्घटना न हो जाय, कहीं कोई राज्य बाधा न आ जाय, कोई अचानक विपत्ति न आ जाय, बालक की अकाल मृत्यु न हो जाय आदि सामाजिक, पारिवारिक और व्यक्तिगत स्तर के कई प्रकार के भय हैं, जिनसे यह जीवन बराबर आक्रान्त बना रहता है।

दूसरी समस्या दरिद्रता है, घर में पांच पचीस हजार होने से ही सम्पन्नता नहीं आ पाती, आजकल तो लड़की के विवाह में लाख दो लाख खर्च हो जाना मामूली बात हो गई है, हम चाहे कितना ही परिश्रम करें परन्तु जो सम्पन्नता आनी चाहिए वह आ नहीं पाती, हम अपने पूरे जीवन से जितना ही अधिक दरिद्रता को समाप्त करने का प्रयास करते हैं, उतनी ही अधिक परेशानियां बढ़ती जाती हैं, और दरिद्रता हमारा पिण्ड नहीं छोड़ती।

और हमारा तीसरा प्रबल शत्रु है, दुःख। हम जीवन भर किसी न किसी वजह से दुखी बने रहते हैं, कोई न कोई समस्या, कोई न कोई अड़चन, कोई न कोई कठिनाई आती ही रहती है, कभी शारीरिक रोग हो जाता है तो कभी वर्षों से बीमारी समाप्त ही नहीं होती, तो कभी बच्चों की शिक्षा सही ढंग से नहीं हो पाती, तो कभी घर में लड़की बड़ी हो जाती है और उसका विवाह नहीं हो पाता, इस प्रकार पूरे जीवन भर कोई न कोई दुःख बना ही रहता है।

और इन तीनों ही बाधाओं से छुटकारा पाना सहज सम्भव नहीं है, हम जितनी ज्यादा समस्याओं से मुक्ति चाहते हैं, उतनी ही ज्यादा अड़चनें और परेशानियां जीवन में आती ही रहती हैं।

मेरे पिताजी पूरे जीवन भर इन तीनों परेशानियों से जूझते रहे, जिन्दगी के अन्तिम दिनों में उनकी भेंट एक साधु से हो गई थी, जो कई दिनों से श्मशान में आकर टिका था, मेरे पिताजी नित्य उसको खाना पहुंचाने जाते और घण्टे दो घण्टे उनके साथ व्यतीत करते, उनकी सेवा करते, यों भी पिताजी को साधुओं की सेवा करने में आनन्द आता था।

मेरे पिताजी की सेवा से प्रसन्न होकर जाते-जाते साधु ने मेरे पिताजी को दरिद्रता, दुःख और भय से पूर्णतः मुक्ति देने के लिए चमत्कारिक प्रयोग दिया था, और पिताजी ने वह प्रयोग घर पर आकर किया, जिसे "स्वर्ण रेखा प्रयोग" कहा जाता है।

उसके बाद पिताजी तीस वर्षों तक जीवित रहे, पूरे सुख, आनन्द और मस्ती के साथ, जीवन में धन की कोई कमी नहीं रही, उन्हें तात्कालिक महाराजा ने राज दरबार में बुला कर अपने हाथों से सम्मान प्रदान किया था। वास्तव में ही उनके जीवन का शेष भाग और हमारे आज तक का जीवन अत्यन्त आनन्द सौभाग्य, सुख और प्रसन्नता के साथ व्यतीत हो रहा है, इन सबका मूल कारण यह "स्वर्ण रेखा अप्सरा साधना प्रयोग" ही है।

स्वर्ण रेखा साधना प्रयोग

यह अपने आपमें अनूठा प्रयोग है जिसे मैं अपने समस्त पाठकों एवं साधकों के लिए पूर्ण विधि के साथ स्पष्ट कर रहा हूं।

किसी भी शुक्रवार की शाम को साधक जो इस प्रयोग को करना चाहे, वह पानी का लोटा भर कर किसी मजार पर या किसी की कब्र पर चला जाय, कब्र प्रत्येक गांव या शहर में होती ही है। वह चाहे समाधि हो, चाहे दरवेश हो, चाहे दरगाह हो। उस पर एक हाथ लम्बा एक हाथ चौड़ा हरे रंग का कपड़ा चढ़ा दे। साथ ही साथ होने के इत्र की शीशी साथ में ले जाय और वह कब्र पर छिड़क दे, यदि सम्भव हो, तो वह लोटे का जल आस पास छिड़क दे।

उसके बाद घर आवे और स्नान करके पूजा स्थान में बैठ जाय तथा एक

थाली में कुंकुंम से निम्न यन्त्र बनावें।

स्वर्ण रेखा यन्त्र
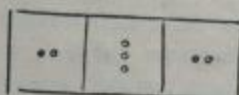
फिर उस यन्त्र पर "स्वर्ण रेखा तावीज" को रखे, यह तावीज चमत्कारिक होता है जो कि पहले से ही तैयार किया हुआ हो और इसके सामने ही एक हकीक का नग रख दे।

और फिर वहीं पर बैठे-बैठे हकीक माला से निम्न मन्त्र की इक्यावन माला मन्त्र जपे, जप करते समय तेल का दीपक लगा रहना चाहिए।

स्वर्ण रेखा मन्त्र

॥ ॐ ऐं ऐं श्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं फट् ॥

मन्त्र जप समाप्ति के बाद वह तावीज गले में पहिन ले और हकीक नग को दक्षिण दिशा की ओर फेंक दे। जिस माला से मन्त्र जप किया था वह माला और यन्त्र तीसरे दिन अर्थात् रविवार को शाम को उस मजार पर चढ़ा दे।

ऐसा करने पर यह चमत्कारिक साधना पूरी होती है और उसी दिन से घर में चमत्कार होने लगते हैं। साधक इसके एक महीने के भीतर-भीतर जो कुछ अनुभव करेंगे, वह आश्चर्यजनक और अद्भुत होगा, उसके जीवन में दुःख, दरिद्रता और भय की समाप्ति होगी ही, जीवन में निरन्तर हर दृष्टि से उन्नति होती ही रहेगी। इस प्रयोग को साल में एक बार कर ले तो और ज्यादा अच्छा रहता है।

यह अपने आपमें अद्भुत और आश्चर्यजनक प्रयोग है आप स्वयं एक बार आजमा कर देखिए, तब आपको भरोसा होगा कि यह स्वर्ण रेखा प्रयोग किस प्रकार से खुशहाली और आश्चर्यजनक परिवर्तन लाता है।

卐

गृहलक्ष्मी पूजन

श्री नारायण ने नारद जी को बताया कि समस्त देवताओं के साथ दीपावली के दिन इन्द्र ने श्रद्धा पूर्वक अपनी पत्नी इन्द्राणी को गृहलक्ष्मी मान कर उसकी पूजा स्तुति की, जिससे वे देवताओं के अधिपति और कुबेर के समान वैभवशाली हुए। शास्त्रों के अनुसार भी दीपावली के पर्व पर अपनी स्वयं की पत्नी को गृह-लक्ष्मी मान कर उसकी पूजा करने का विधान है, यह गोपनीय प्रयोग पहली बार अपने पाठकों एवं साधकों के लिए प्रस्तुत किया जा रहा है।

जब पत्नी को "गृह लक्ष्मी" कहा जाता है, तो फिर केवल शब्द से ही वह गृहलक्ष्मी नहीं कहलाती, वास्तव में ही शास्त्रों में इससे सम्बन्धित पूर्ण पूजा विधान है और ऐसा करने पर वह पत्नी लक्ष्मी स्वरूपा बन कर पूरे वर्ष भर घर में महकती रहती है, धन, वैभव, सुख, ऐश्वर्य, सम्पदा, पुत्र-पौत्र आदि की वृद्धि होती रहती है।

यह प्रयोग शास्त्र सम्मत है और जो उच्चकोटि के साधक हैं, जो वास्तव में ही शास्त्र की मर्यादा समझते हैं, वे इस प्रयोग को अवश्य ही सम्पन्न करते हैं।

क्षमार्णव

प्रातःकाल उठ कर पत्नी को चाहिए कि वह स्नान आदि कर, सुन्दर वस्त्र धारण कर सबसे पहले अपने पति के चरण स्पर्श करे, चाहे आपस में मतभेद हो परन्तु इस समय सच्चे हृदय से बिना किसी प्रकार का अहं भाव मन में लाये उनसे क्षमा मांगे और अपनी भूलों का प्रायश्चित करे, पति को भी चाहिए कि वह मन में किसी प्रकार का गरूर या घमंड न रखते हुए, सच्चे हृदय से उसे क्षमा प्रदान करते हुए अपने पास बिठावे।

इसके बाद घर की बहुएं, पुत्र, पौत्र आदि एक-एक करके माता-पिता को प्रणाम करें और उनसे आशीर्वाद प्राप्त करें।

लक्ष्मी पूजन

शाम के समय गृह लक्ष्मी पूरे घर में तेल के दीपक लगावे, और अपने पति को सुसज्जित करने में सहायता प्रदान करे, फिर स्वयं भी अत्यन्त ही सुन्दर वस्त्र धारण करे, शरीर पर गहने पहने, कपड़े पर इत्र आदि लगावे, और लक्ष्मी पूजन के समय पूरे परिवार के साथ प्रसन्नचित्त से पूजन कार्य में अपने पति के दाहिनी ओर आसन बिछा कर बैठे।

इसके बाद शास्त्रों में वर्णित पूर्ण रूप से भगवती महालक्ष्मी का पूजन करे पूजन के बाद और महालक्ष्मी की आरती से पहले शास्त्रों में विधान है कि पति स्वयं अपने हाथों से अपनी पत्नी का उसे गृहलक्ष्मी मान कर पूजन करे, पूजन करते समय मन में यह भावना हो कि यह साक्षात लक्ष्मी है, मेरे घर में आकर इसने सुख-दुख में मेरा साथ दिया है, मेरा परिवार बसाया है, मुझे अच्छे पुत्र और पुत्रियां प्रदान की है।

गृह लक्ष्मी पूजन

सबसे पहले साधक या लक्ष्मी पूजन करने वाला गृहस्थ अपनी पत्नी को गृहलक्ष्मी मान कर उसके लिए आसन बिछावे—

सर्व सम्पत्-स्वरूपिण्यै सर्वाराध्यै नमो नमः।
हरि-भक्ति प्रदाञ्यै च हर्ष-दाञ्यै नमो नमः॥

इसके बाद उस दिन पत्नी के लिए विशेष रूप से जो वस्त्र खरीद कर लावे (साधक को चाहिए कि पत्नी की इच्छा के अनुरूप पहले से ही उसके लिए वस्त्र खरीद लावे) इस समय उसे प्रदान करना चाहिए।

वस्त्र

सम्पत्यधिष्ठातृ देव्यै महा-देव्यै नमो नमः।
नमो वृद्धि-स्वरूपायै वृद्धिदायै नमो नमः॥

आभूषण

शास्त्रों में विधान है कि दीपावली से पूर्व कोई न कोई नया आभूषण पत्नी

के लिए अवश्य ही बनवा लेना चाहिए, इस समय निम्न मन्त्र पढ़ता हुआ उसे आभूषण प्रदान करे—

वैकुण्ठे या महालक्ष्मीर्या लक्ष्मीः क्षीर-सागरे।
स्वर्ण लक्ष्मीरिन्द्र-गेहे राजलक्ष्मीर्नृपालये॥

सौभाग्य आभूषण

पूरे वर्ष भर सभी दृष्टियों से पूर्णता के लिए शास्त्रों के अनुसार इस समय पत्नी को "पंच यन्त्र" पहिनाने चाहिए, इन पांच यन्त्रों के नाम—१-अन्नपूर्णा यंत्र २-गृहलक्ष्मी यन्त्र, ३-सौभाग्य यन्त्र, ४-भाग्योदय यन्त्र और ५-सर्व सुख सम्पत्ति यन्त्र।

इस मुहूर्त पर पति स्वयं अपने हाथों से इन पांचों विशिष्ट यन्त्रों को पत्नी के गले में पहिनावे, साधक को ध्यान रहे कि ये यन्त्र मन्त्र सिद्ध तथा चैतन्य हों।

गृह-लक्ष्मीश्च गृहिणी गेहे च गृह-देवता।
सुरभिः सागरे जाता दक्षिणा यज्ञ-कामिनी॥

द्रव्य प्रदान

इसके बाद साधक स्वयं अपने हाथों से यथा सम्भव रुपयों की गड्डी या चांदी के रुपये गृह लक्ष्मी के आंचल में समर्पित करे—

अदितिर्देव माता त्वं कमला कमलालया।
स्वाहा त्वं च हविर्दाने कव्य-दाने स्वधा स्मृता॥

इसके बाद अपने हाथों से पत्नी के मुंह में ताम्बूल देते हुए उच्चारण करे—

सर्वेषां च परा माता सर्व बान्धव-रूपिणी।
धर्मार्थ-काम-मोक्षाणां त्वं च कारण-रूपिणी॥

इसके बाद महालक्ष्मी की आरती आदि क्रियाएं सम्पन्न करे, और फिर गृहलक्ष्मी प्रदान किये हुए रुपये तथा सौभाग्य आभूषणों अर्थात् पांचों यन्त्रों को लक्ष्मी के सामने रख दे, प्रातःकाल उठ कर पुनः पति-पत्नी लक्ष्मी का पूजन और उसकी आरती करें तथा प्रदान किये हुए रुपये, पांचों यन्त्र तथा आभूषण आदि आभूषणों की पेटी में सुरक्षित रूप से रख दें।

इस प्रकार यह गृहलक्ष्मी पूजन पूरे वर्ष भर के लिए परिवार की कुशलता उन्नति और आनन्द के लिए सर्वोत्तम प्रयोग है, जो कि हर वर्ष प्रत्येक साधक को सम्पन्न करना चाहिए। 卐

साधना सामग्री सूची

इस संसार में प्रभु ने सब कुछ दिया है, पर बिना भाग्य के यह संभव नहीं, परन्तु संसार में कुछ वस्तुएं ऐसी भी है जिससे भाग्य को चार चांद लगाये जा सकते है, भाग्यहीन भी गौरवयुक्त भाग्यशाली बनकर देश और समाज में प्रतिष्ठा, यश, वैभव, सम्पदा प्राप्त कर सकता है।

ये वस्तुएं दुर्लभ है, अप्राप्य नहीं, जो वास्तव में ही श्रेष्ठ है उन्ही के घरों में ही ऐसी दुर्लभ वस्तुएं संग्रहित हो सकती है, धन तो कल भी कमाया जा सकता है, पर ये दुर्लभ वस्तुएं कल प्राप्त हो जाएं यह संभव नहीं।

इस पुस्तक में जिन साधनाओं का विवरण आया है उनसे सम्बन्धित सामग्री निम्न रूप में है जो कि मन्त्रसिद्ध प्राणप्रतिष्ठा युक्त, दुर्लभ, उपयोगी एवं संग्रहणीय है साथ ही भाग्य संयोजन में सहायक है—

साधना प्रयोग	पृष्ठ संख्या	सामग्री नाम	न्यौछावर रुपये
महालक्ष्मी पूजन	६	श्रीयन्त्र लघु	१५०
		कनकधारा यन्त्र लघु	१५०
		कुबेर यन्त्र लघु	१५०
		स्फटिक माला	१२०
लक्ष्मी से सम्बन्धित कुछ गोपनीय यन्त्र	१५	लक्ष्मी यन्त्र	१५०
		व्यापार यन्त्र	३००
		स्फटिक माला	१२०
		दरिद्रता विनाशक यन्त्र	२४०
लक्ष्मी ! तुझे मेरे घर में कैद होना पड़ेगा	१६	महालक्ष्मी सपर्या साधना पैकेट	६१५
व्यापार बाधा दूर करने का प्रयोग	३६	सियारसिंगी	१२०
		हकीक माला	१८०
एकाक्षी नारियल पर सिद्ध प्रयोग	४०	एकाक्षी नारियल	३२०
		कमलगट्टा माला	८०
दरिद्रता निवारण प्रयोग	४४	नर्मदेश्वर शिवलिंग	१५०
		रुद्राक्ष माला	३००
दक्षिणावर्ती शंख कल्प प्रयोग	४५	दक्षिणावर्ती शंख	६५१
		स्फटिक माला	१२०
सिद्ध प्रयोग : हनुमान साधना	५१	रक्त चन्दन की हनुमान मूर्ति	२०१
		रुद्राक्ष माला	३००

आजीवन सदस्यता

"मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान" पत्रिका की आजीवन सदस्यता एक गौरव है, एक स्वाभिमान है, जीवन का सौभाग्य है, और साधना की पूर्णता है, यह एक अनुपम गुरुदेव के हृदय के निकट पहुंचने की प्रिय पात्रता है, साधना में पूर्ण सिद्धि प्राप्त करने का एक महत्वपूर्ण अवसर है ....

और आजीवन सदस्यता शुल्क मात्र ६६६६) रु० है जिसे एक मुश्त या तीन किश्तों में जमा कराकर यह सौभाग्य प्राप्त किया जा सकता है, और फिर पत्रिका व्यवस्थापकों ने आजीवन सदस्य बनने वाले को उपहारों का ढेर लगा दिया है—

- पूरे जीवन भर मन्त्र तन्त्र यन्त्र विज्ञान, पत्रिका सर्वथा निःशुल्क आपके घर पर डाक द्वारा।
- सम्पूर्ण दीक्षा—रसेश्वरी दीक्षा एक माह के भीतर-भीतर निःशुल्क।
- एक इक्कीस तोले का पारद शिवलिंग जिसकी लागत न्यौछावर ही २५००)रु० है, पर आपको सर्वथा निःशुल्क।
- एक १६×२० साईज का प्राण ऊर्जा से चेतन्य, सिद्ध गुरुचित्र निःशुल्क।
- प्रत्येक शिविर में अत्यधिक उपयोगी 'शिविर सिद्धि पैकेट" १-धोती, २ माला, ३-पंचपात्र, ४-गुरुचित्र तथा ५-सिद्धासन सर्वथा निःशुल्क।
- 'सूर्यकान्त उपरत्न" जो मन्त्र सिद्ध है, अंगूठी में जड़वाकर पहिनने योग्य, सर्व कार्य सिद्धिदायक सर्वथा मुफ्त।

यों आप बिना उपरोक्त उपहारों के मात्र २४००) रु० देकर भी आजीवन सदस्य बन सकते है।

आपको जीवन भर "मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान" पत्रिका निःशुल्क घर बैठे प्राप्त होती रहेगी।

जो साधक या पाठक किसी को विशेष आजीवन सदस्य बनने के लिए प्रेरित करेगा उसे एक धातु युक्त पारद शिवलिंग निःशुल्क उपहार स्वरूप प्राप्त होगा।

विशेष :-और फिर यह आपकी धरोहर धनराशि है, जो पत्रिका कार्यालय में आपके नाम जमा रहेगी, जब भी आप आजीवन सदस्य न रहना चाहें, तो आप रजिस्टर्ड डाक से इस प्रकार का पत्र भेज दें, (जिसका प्रमाणीकरण कार्यालय द्वारा हो) पत्र भेजने वाली तारीख से दस वर्ष बाद यह धरोहर धनराशि, बिना ब्याज के आपको लौटा दी जायेगी।

सम्पर्क : मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी,
जोधपुर-३४२००१ (राजस्थान) टेलीफोन : ०२९१-३२२०९

विशेष तन्त्र रक्षा कवच

यह अत्यधिक दुर्लभ, महत्वपूर्ण एवं आपके लिए सौभाग्यदायक योजना है

* यह जीवन की पूर्णता प्रदायक योजना है, जिसके माध्यम से आप अपने जीवन को निडर भाव से आगे बढ़ा सकते हैं।

* आप निश्चिंत भाव से लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं, क्योंकि इस योजना के माध्यम से हम आपके साथ हैं, प्रति पल प्रति क्षण सम्पूर्ण जीवन भर... ....

हमारे समाज में हर दूसरा या तीसरा परिवार अपने शत्रु या स्वजनों द्वारा सम्पादित किये हुए या दूसरों से करवाये हुए तांत्रिक प्रयोग से अत्यन्त परेशान रहता है, वह तांत्रिक प्रयोग जिस पर किया जाता है उस व्यक्ति का सर्वनाश हो जाता है, इसमें व्यापार बांधना, मानसिक डिप्रेशन, बुद्धि काम न करना, कमाई होते हुए भी पैसे उड़ जाना, बीमारी से ग्रस्त होना तो होता ही है यहां तक कि मारण प्रयोग से मृत्यु भी हो जाती है, आदमी जिन्दा लाश बन कर रह जाता है, इस तरह के सैकड़ों पत्र कार्यालय में प्रतिदिन आते हैं, एतदर्थ श्रेष्ठ तांत्रिक पंडितों ने कल्याणार्थ सर्वजन हिताय पूर्ण मन्त्रसिद्ध, प्राणप्रतिष्ठित मंत्रः नामयुक्त— "आजीवन तन्त्र रक्षा कवच" सुलभ किया है, जो अद्वितीय और दुर्लभ है, इसके धारण करने के कुछ समय बाद ही इसके अचूक प्रभाव से व्यक्ति प्रभावित होने लगता है, यन्त्र जिस व्यक्ति विशेष के नाम से संकल्पित करके तैयार किया जायेगा उसी को ही इसके लाभ मिल सकेंगे, इस कवच को धारण करने वाले व्यक्ति पर संसार के किसी भी तांत्रिक या मांत्रिक का तन्त्र प्रयोग निष्प्रभावी रहेगा।

इस दिव्यतम कवच की न्यौछावर मात्र–११०००) रु० (ग्यारह हजार) है।

धनराशि अग्रिम बैंक ड्राफ्ट से भेजें, बैंक ड्राफ्ट किसी भी बैंक का हो पर जोधपुर में देय हो एवं "मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान जोधपुर" के नाम से बना हो, चैक स्वीकार्य नहीं।

यह धनराशि वापिस लौटाई नहीं जायेगी और न इस सम्बन्ध में किसी प्रकार की आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य होगी और 'मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान' पत्रिका के प्रथम पृष्ठ पर छपे सभी नियम मान्य होंगे।

सम्पर्क : मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र-विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कालोनी, जोधपुर–३४२००१ (राजस्थान) टेलीफोन : ३२०१०, ३२२०९

जीवन का परम सौभाग्य

महालक्ष्मी साफल्य दीक्षा

* जीवन में सम्पूर्ण दृष्टि से भौतिक उन्नति जरूरी ही नहीं, आवश्यक है, अनिवार्य है।

* भौतिक उन्नति का तात्पर्य है, धन, यश, मान, पद, प्रतिष्ठा, कीर्ति सफलता एवं सभी दृष्टियों से पूर्णता।

* इस प्रकार की पूर्णता परिश्रम से सम्भव नहीं है यदि परिश्रम से सब कुछ संभव होता, तो प्रत्येक मजदूर धनवान ऐश्वर्यवान होता।

* और न यह साधना संभव है, क्योंकि उच्चकोटि की साधना सम्पन्न करने के लिए न तो आपके पास ज्ञान है और न समय ही।

* तब फिर यह सब कुछ प्राप्त करने का एक मात्र श्रेष्ठ रास्ता है, "महालक्ष्मी साफल्य दीक्षा" के आठों भाग इससे सम्बन्धित आठ दीक्षाएं हैं– १-धन लक्ष्मी दीक्षा २-आकस्मिक लक्ष्मी दीक्षा ३-भूमि लक्ष्मी दीक्षा ४-भवन लक्ष्मी दीक्षा ५-कीर्ति लक्ष्मी दीक्षा ६-दीर्घायु लक्ष्मी दीक्षा ७-वाहन लक्ष्मी दीक्षा ८-पुत्र-पौत्र लक्ष्मी दीक्षा।

* उपरोक्त आठों दीक्षाएं एक-एक करके लें, या आठों दीक्षाएं एक साथ भी ले सकते हैं, प्रत्येक दीक्षा की न्योछावर मात्र छः हजार रुपये है।

* परम पूज्य गुरुदेव द्वारा "शक्तिपात युक्त महालक्ष्मी साफल्य दीक्षा" प्राप्त करना तो जीवन का सौभाग्य है।

: सम्पर्क :

गुरुधाम
३०६, कोहाट एन्क्लेव
नई दिल्ली-११००३४
टेलीफोन ०११-७१८२२४८

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान
डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी,
जोधपुर-३४२००१ (राजस्थान)
टेलीफोन ०२९१-३२२०९

कृपया पहले से ही समय लेकर दीक्षा के लिए आएं।

विशेष तंत्र रक्षा कवच

एक महत्वपूर्ण और आपके जीवन के लिए आवश्यक एवं सौभाग्यदायक योजना
जीवन में रोजमर्रा की कठिनाइयों के साथ - साथ कुछ अन्य कठिनाइयां भी होती हैं

- सारी मेहनत के बाद पर्याप्त धन का आगमन न होना
- दुकान पर ग्राहकों का न आना, व्यापार बंध जाना
- घर में सदस्यों के बीच लड़ाई झगड़े की स्थितियां बनते रहना
- पति या पत्नी का किसी अन्य स्त्री या पुरुष में आसक्त हो जाना और सभी प्रयासों के बाद भी आपसी मतभेद तीव्र
- स्वयं का अथवा परिवार के किसी सदस्य का रहस्यमय बीमारी से ग्रस्त होना और डॉक्टरों की समझ में कोई उपाय न आना
- परिवार में रहस्यमय ढंग से मृत्यु होना

स्त्री के स्वस्थ होने के बाद भी बार - बार गर्भपात हो जाना, डिप्रेशन, सही किया गया कार्य भी उल्टा पड़ जाना, आकस्मिक संकटों का बराबर आते रहना

जीवन की अनेक ऐसी विपदायें होती हैं जिनका कोई भी सही कारण समझ में नहीं आता और तब इसका सीधा सा अर्थ है कि

कहीं आप पर किसी ने तंत्र प्रयोग तो नहीं करवा दिया

तो

क्या कोई उपाय संभव है?

निश्चित रूप से, तांत्रिक प्रयोगों की पूर्व रक्षा एवं ऐसा प्रयोग हो जाने के बाद उसके निराकरण के लिए तो बस एक ही निश्चित उपाय है

विशेष तंत्र रक्षा कवच

जो संस्थान में विद्वान,तांत्रिक,मन्त्रज्ञाता पंडितों द्वारा पीड़ित व्यक्ति विशेष के लिये सिद्ध किया जाता है,यह कार्य वास्तव में जनहितार्थ आवश्यक परिस्थितियों में ही किया जाता है –

- न्यौछावर (अनुष्ठान खर्च) - ११,००० रुपये मात्र
- धनराशि अग्रिम बैंक ड्राफ्ट या मनीआर्डर से भेज दें
- इस कार्य हेतु नीचे दिये संस्थान के दिल्ली कार्यालय अथवा जोधपुर केन्द्र पर व्यक्तिगत भेंट भी कर सकते हैं

विशेष :- इस संबंध में पत्रिका के प्रथम पृष्ठ पर छपे सभी नियम मान्य होंगे।

सम्पर्क : दिल्ली :- ३०६, कोहाट इन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली- ३४ , फोन : ०११ - ७१८२२४८
जोधपुर :- मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.), फोन : ०२९१ - ३२२०९